जीवन सेधां

आध्यात्मिक विचारों के सवाल जवाब
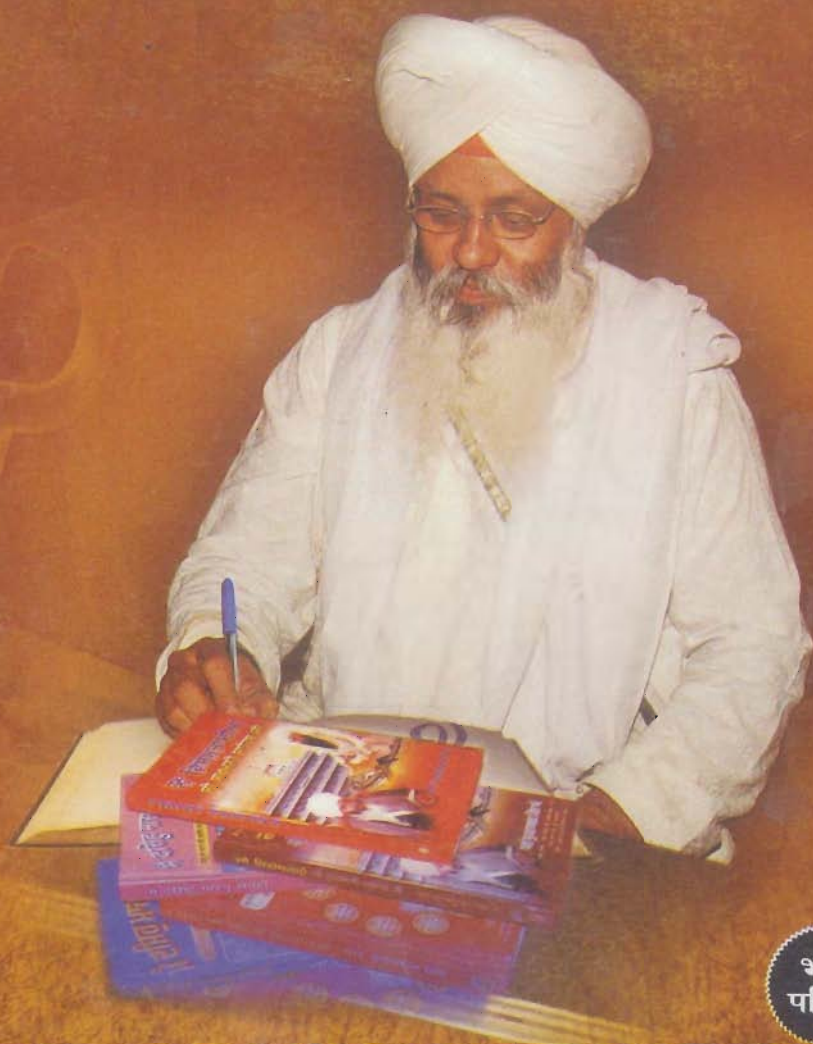
भाग पहिला

भाई गुरइकबाल सिंघ

मुख्य कार्यालय: माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट)
तरन तारन रोड, श्री अमृतसर । फोन : 0183 - 3292255, 98765 - 25850

१ओ सतिगुरु प्रसादि ॥

जीवन सेधां

(अधिआतमक विचारां)

(169) प्रशन-उत्तर

प्रथम भाग

लेखक

दासन दास

भाई गुरइकबाल सिंघ

मुख्य कार्यालय

माता कौलां जी भलाई केन्द्र टरसट

तरनतारन रोड, श्री अमृतसर साहिब ।

फोन 098765-25850,0183-3292255

ISBN :

प्रथम संसकरण- मई 2012

भेटा : 100-00

माता कौलां जी भलाई केन्द्र टरसट

तरनतारन रोड, श्री अमृतसर साहिब ।

फोन 098765-25850,0183-3292255

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।

: 91-183-2542346,2547974

फैक्स : 91-183-5017488

E.Mail : csjssales@hotmail.com

csjspurchase@yahoo.com

csjsexport@gmail.com

Web site : www.csjs.com

(Printed in India)

प्रिंटर्ज : जीवन प्रिंटर्ज, अमृतसर : 0183-2705003, 5095774

समर्पण

धंन धंन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज

व

उन महांपुरषों को

जिन्हों ने गुरबाणी को घर घर पहुचाँ कर

सिक्खी को प्रफुलत किया

व

दास के पित्ता स. पिशोरा सिंघ जी व

माता अत्तर कौर जी की

पवित्र याद को सर्मिपत

भाई साहिब जी के माता-पित्ता जी की यादगार फोटो

स. पिशोरा सिंघ जी (६.९.१९९१) व

माता अत्तर कौर जी की (२५.६.१९९६)

आशीर्वाद
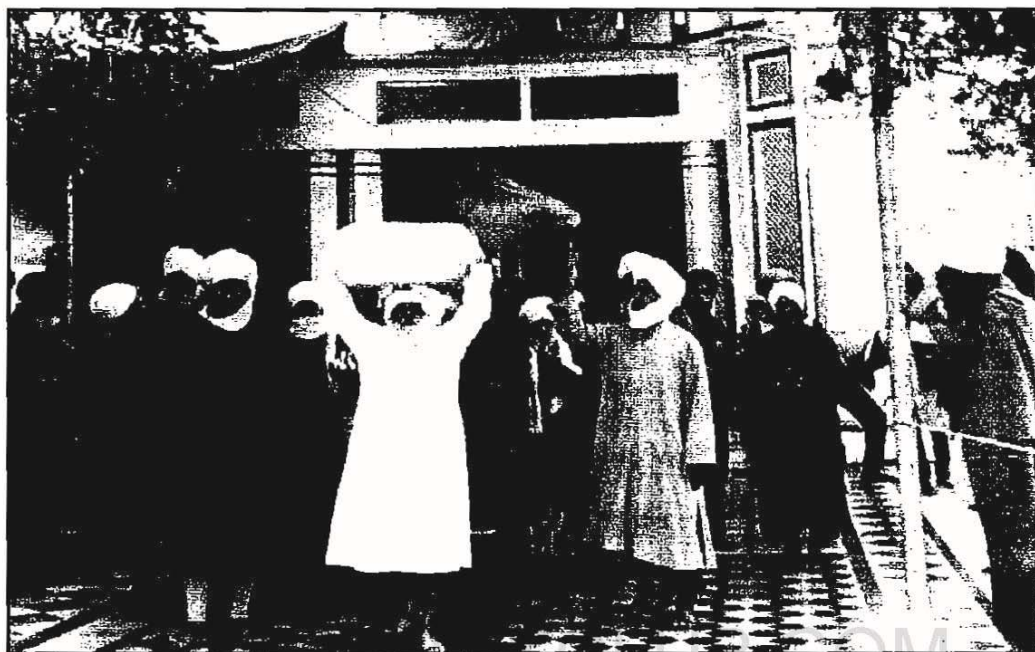
गुरु प्यारी साध संगत जी,

वाहिगुरु जी का खालसा ॥ वाहिगुरु जी की फतेह ॥

धन्य धन्य साहिब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज का कोटि-कोटि धन्यवाद जिन्होंने कृपा की, यह नई पुस्तक 'जीवन शिक्षाएँ' भाई गुरइकबाल सिंघ जी से लिखवा कर संगतों के रू-ब-रू करवाई है। पहली तीन पुस्तकों की तरह यह पुस्तक भी गुरमति के राह का पथिक बनाती है, गुरमति के दायरे में रहने की कला सिखाती है व गुरमति के अनुसार हर कार्य करने की प्रेरणा देती है।

जीवन में विचरण करते हुए अनेक कठिन पथ सामने आते हैं, अनेक दुःख सुख हमारे जीवन का भाग बनते हैं, पर आवश्यकता है कि ऐसे समय को गुरमति के अनुसार कैसे संभाला जाए? कैसे गुरमति के दायरे में रहते हुए अपने कार्यों का समाधान किया जाए ताकि

मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥
गुरु पूरा आराधि नित
इकसु की लिव लागु ॥१॥ रहाउ ॥ (अंग ४५)

की भावना सुदृढ़ हो सके। इस मनोरथ की पूर्ति के लिए, इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये व इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए भाई गुरइकबाल सिंघ जी ने प्रस्तुत पुस्तक लिखने का महान कार्य सम्पूर्ण किया है। बाबा कुन्दन सिंघ जी नानकसर वालों से बहुत आशीष व खुशियाँ व बरकतें भी भाई गुरइकबाल सिंघ जी ने ली हैं।

गुरु साहिब कृपा करें गुरमति की फुलवाड़ी को और सुगंधित करने व गुरमति अनुसार जीवन जीने के लिए कीर्तन के साथ-साथ लिखित के रूप में भी जो कार्य भाई साहिब ने आरंभ किया है, यह कलम लगातार चलती रहे ताकि गुरमति की बारीकियों से समस्त संगत लाभ ले सके।

दास बाबा कुन्दन सिंघ जी के सेवक
बाबा हरभजन सिंघ
नानकसर कलेरां वाले

धन्यवाद

साध संगत जी! कई बार आध्यात्मिक तौर पर संगतें अपने मन के विचार या परमार्थ पर चलने के लिए अहम प्रश्न भाई गुरइकबाल सिंघ जी के साथ सांझे करती रहती हैं। विगत समय में अमेरिका की संगतों की ओर से ज्योति दारा कौर बहन जी द्वारा कई ऐसे प्रश्न जो भाई साहिब जी को किये गए और भाई साहिब जी फोन पर गुरमति अनुसार सहज भाव से उन प्रश्नों के उत्तर देते रहे। आज पाँच-छः वर्ष बाद ज्योति दारा कौर बहन जी ने बताया कि मैं जवाब नोट करती रही हूँ। ट्रस्ट द्वारा प्रयत्न किया गया है वे प्रश्नोत्तर पूरी तरह संशोधन करके पुस्तक के रूप में संगतों के सम्मुख भेंट किये जाएं। लगभग प्रत्येक जिज्ञासु को कई बार जीवन में इन प्रश्नों का सामना करना पड़ता है। क्या पता किसी को अपना उत्तर इसमें से प्राप्त हो जाए और जीवन की कई कमियाँ समाप्त हो जाएं। हम वे १६९ प्रश्नोत्तर इस पुस्तक में छापने का प्रयत्न कर रहे हैं ताकि संगत लाभ ले सके।

हम धन्यवादी हैं बीबी जतिन्द्र कौर (ज्योति दारा) बहन जी अमेरिका वाले व इनकी सहयोगी बहनें बीबी मनमोहन कौर (मोहनी), बीबी मनप्रीत कौर (सपना बहन जी), बीबी रमनदीप कौर (रूबी) व सारे भाईयों का, जिन्होंने यह उद्यम किया है।

-द्वारा : माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट

तरनतारन रोड, श्री अमृतसर

धन्यवाद

धन्य धन्य साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज का कोटि-कोटि धन्यवाद व गुरु साहिब के प्यारे बाबा नंद सिंघ जी व बाबा कुंदन सिंघ जी का धन्यवाद, जिन्होंने कीर्तन के साथ-साथ लिखने की भी प्रेरणा जगाई व तीन पुस्तकें लिखने की सेवा लेकर संगतों के रू-ब-रू करवाई।

इस संसार में विचरण करते हुए अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, दुःख-सुख जीवन में आते रहते हैं, पर गुरसिक्ख वही है जो गुरमति के दायरे में रह कर, गुरु साहिब का आसरा लेकर सारे कार्य करता है। कोई दुःख आ जाये तो नियम बढ़ा कर गुरु चरणों में प्रार्थना करता है। कोई सुख आ जाए तो नियम बढ़ा कर शुक्रिया करता है। अपना जीवन गुरबाणी के ओट आसरे में ही रहे, इसलिए संगतों की प्रेरणा से यह चौथी पुस्तक जीवन शिक्षाएँ (१६९ प्रश्नोत्तर) सतिगुरु जी की कृपा से प्रकाशित की गई है। जुगो जुग अटल सतिगुरु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का धन्यवाद तो है ही जिनकी सारी कृपा हुई है। इसके साथ-साथ श्री नानकसर साहिब के वर्तमान महापुरुष बाबा हरभजन सिंघ जी व सचखंड श्री हरिमंदिर साहिब जी के सिंघ साहिबान का बहुत-बहुत धन्यवाद जिनकी आशीषों से यह पुस्तक लिखने का बल मिला।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में भाई हरभजन सिंघ जी लुधियाने वाले व बीबी भानी भलाई केन्द्र के समस्त स्टाफ का बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने इस कार्य की सम्पूर्णता में अथाह सहयोग दिया। हरवीन कौर बहन जी ग्रीन एवेन्यु जिन्होंने दिन-रात एक करके सारी पुस्तक की फाइनल रूप-रेखा तैयार

यह भी तो किसी के लाडले हैं!

क्या

इनकी परवरिश में
आपका कोई
योगदान है...?

यह वो बच्चे

घर में गरीबी

पिता का साया नहीं

रोटी कहां से खाएं

स्कूल किस तरह जाएं

4165 विधवा स्त्रियां, 9360 इनके बच्चे,
22 शहरों में हर महीने सहयोग प्राप्त कर रहे हैं।
आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।

आपकी विश्वास पात्र संस्था :-

माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट

तरन तारन रोड, श्री अमृतसर।

दास भाई गुरइकबाल सिंघ

संपर्क नं :- 0183-3294659, 98765-25828/20/30 Website :- mkbktrustamritsar.org
www.matakaulanjibhalaikendertrust.com, E-mail:-mkbkt_amritsar@yahoo.com

माता कौलां जी भलाई केंद्र (ट्रस्ट) के अधीन चल रहे सभी युनिटों के विवरण

ट्रस्ट अधीन चल रहे 22 विधवा स्त्रियों के केन्द्र

1. यहां 1625 विधवा स्त्रियों को हर महीने पांच लाख पचास हजार का राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन जरूरतमंद स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. इन स्त्रियों की ही बेटियों और अन्य जरूरतमंद बच्चियों को कम्प्यूटर, सिलाई- कढ़ाई का छः महीने का कोर्स बिलकुल फ्री करवाया जाता है। हमारी इच्छा है कि इन स्त्रियों की बच्चियां अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।
4. इन स्त्रियों को सर्दियों-गर्मियों के सूट, रजाइयां, तलाइयां, सिलाई मशीनें, प्रैशर कूकर, रैबर कूलर आदि सामान साल में चार बार फ्री दिया जाता है।

माता कौलां जी भलाई केंद्र
तरन तारन रोड, श्री अमृतसर की इमारत

इस भलाई केंद्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई मोहन सिंघ जी (भोला वीर जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 98765-25815,98765-25830,0183-3292255

लुधियाना में बीबी भानी जी भलाई केंद्र

1. यहां 595 विधवा स्त्रियों को हर महीने दो लाख रुपए का राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन जरूरतमंद स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. राशन के अलावा समय-समय पर वस्त्र एवं अन्य घरेलू सामान भी दिया जाता है।

आप जी के सहयोग की जरूरत है।

बीबी भानी जी भलाई केंद्र
1219/22-B, हरनाम नगर, माडल टाऊन, लुधियाना

इस भलाई केंद्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरभजन सिंघ जी, भाई अरविंदर पाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 0161-2429900, 98157-93713, 9872634013

अहमदाबाद में माता कौलां जी भलाई केन्द्र

पता: 87/706 पुष्पक अपार्टमैंट, नरनपुरा, अहमदाबाद (गुजरात)
संपर्क न: 98240-21654

1. यहां 96 स्त्रियों को हर महीने राशन फ्री दिया जाता है।
2. राशन उन स्त्रियों को दिया जाता है जिनके बच्चे 15 साल से छोटी उम्र के हैं।
3. राशन के अलावा समय-समय पर वस्त्र एवं अन्य घरेलू सामान भी दिया जाता है।
4. यहां गुजराती विधवा स्त्रियां साड़ी पहन कर राशन लेने आती हैं और उनके मुख से निकलता है... "हमारे पति चले गए, हमें किसी गुजराती ने तो पूछा नहीं, ये सिक्ख कौन हैं जो हमारे पति की मृत्यु के बाद हमारी सार ले रहे हैं? (धन्य सिक्खी)

इस भलाई केन्द्र की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई कन्वरबीर सिंघ जी, भाई सुखबीर सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

अन्य शहरों में चल रहे विधवा स्त्रियों के प्रेरणा केन्द्र

4.	माता कौलां जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	मेरठ (यू.पी.)
5.	माता कौलां जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	नासिक (महाराष्ट्र)
6.	माता कौलां जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	फरीदाबाद (हरियाणा)
7.	माता कौलां जी विधवा बहन भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	सूरत (गुजरात)
8.	माता साहिब कौर जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	चण्डीगढ़
9.	माता नानकी जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	सैदां गेट, जालंधर
10.	माई भागो जी विधवा बहन भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	तिलक नगर, दिल्ली
11.	बाबा दीप सिंघ जी सेवा सिमरन भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	पटियाला
12.	बाबा दीप सिंघ जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	ग्वालियर (म.प्र.)
13.	बाबा जवाहर सिंघ जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	होशियारपुर
14.	बाबा दीप सिंघ जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	निकट नेपाल बार्डर, नतनवा
15.	गुरु नानक भलाई केन्द्र (बेवा औरतें) गु: इमली साहिब	इन्दौर (म.प्र.)
16.	माता कौलां जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें) कौशलपुरी गुमटी न:5, (दशमेश सेवक सभा)	कानपुर (यू.पी.)
17.	माता मनमोहन कौर जी भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	तुगलकाबाद, दिल्ली
18.	माई भागो जी विधवा बहन भलाई केन्द्र (बेवा औरतें)	रजिन्द्र नगर, दिल्ली
19.	माता साहिब कौर जी अशीष भलाई केन्द्र	ईस्ट आफ कैलाश दिल्ली
20.	माता कौलां जी वैल्फेयर सोसाइटी भलाई केन्द्र (राजा जी पूरम)	लखनऊ (यू.पी)
21.	मदर कौलां जी वैल्फेयर सैंटर	मैरीलैंड, अमेरिका
22.	मदर कौलां जी *निष्काम* वैल्फेयर सैंटर	कैलिफोर्निया, अमेरिका

ट्रस्ट अधीन चल रहे 4 अस्पतालों का विवरण

1. यहां X-ray, Ultrasound, Heart, Ortho, Skin, Eyes, Physio, Pseychiatry, Dental E.N.T., T.B. और सभी शारीरक टैस्ट होते हैं। सबसे बड़ी बात यह सारे टैस्ट No Profit, No Loss पर किए जाते हैं।
2. यहां पर T.B. के टैस्ट और दवाई बिलकुल फ्री।
3. यहां गुरु की मेहर से रोज़ाना 1200 मरीज लाभ पा रहे हैं।
4. एक ही छत के नीचे लगभग सभी इलाज केवल 5/-की पर्ची से। दो दिन की दवाई और चैक-अप बिलकुल फ्री।
5. चाय मरीज के पास फ्री पहुंचती है, पानी मरीज के पास पहुंचता है, पांव दबाने की मशीन की सुविधा फ्री है, जोड़े पालिश की सुविधा फ्री है और टी.वी. पर धार्मिक प्रोग्राम चलता रहता है।
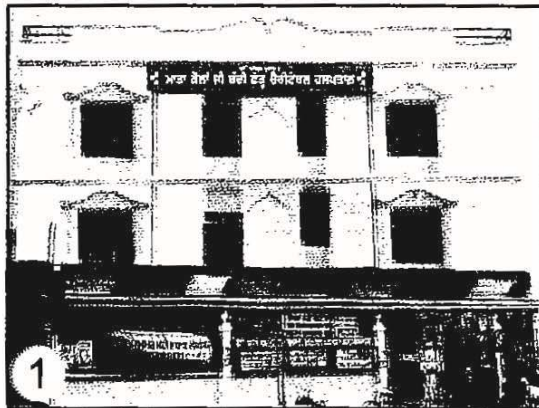
माता कौलां जी बंदी छोड़ चैरिटेबल अस्पताल, तरन तारन रोड, श्री अमृतसर

इस अस्पताल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरविन्द्र पाल सिंघ जी (लिटल जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 97795-99990,98765-25865,98725-95910,0183-2485920

बाबा दीप सिंघ जी बाबा कुंदन सिंघ जी चैरिटेबल अस्पताल, पताः बाबा दीप सिंघ जी कालोनी, अंदरून चाटीविंड गेट, श्री अमृतसर

1. यहां 10 रुपए की पर्ची पर चैक-अप किया जाता है और दो दिन की दवाई फ्री मिलती है।
2. M.D. डाक्टरों से मरीज लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
3. अस्पताल में ही लैब (Lab.) सभी टैस्टों के लिए उपलब्ध है।
4. यह शाम 5 बजे से रात 8 बजे तक खुलता है। लगभग 125 मरीज रोज़ाना लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
5. यह अस्पताल मौजूदा महापुरुष बाबा हरभजन सिंघ जी नानकसर वालों की आशीष से खोला गया है और माता ज्ञान कौर जी की प्रेरणा से चल रहा है।

संपर्क नः 0183-2546277,98725-95910

लुधियाना में बाबा दीप सिंघ जी चैरिटेबल अस्पताल
पता : 1219/22, हरनाम नगर, माडल टाऊन, लुधियाना

दांतों के अस्पताल और होम्योपैथिक का समय सुबह 10 से 1 बजे तक जरनल डाक्टर और आंखों के अस्पताल का समय दोपहर 2 से 4 बजे तक

1. यहां दांतों का इलाज बिलकुल फ्री किया जाता है।
2. होम्योपैथिक की दवाई बिलकुल फ्री दी जाती है।
3. केवल 5 रुपए की पर्ची पर आंखों के टैस्ट और दवाई बिलकुल फ्री।
4. यहां पर (M.D.) डाक्टरों से मरीज लाभ प्राप्त करते हैं।
5. विधवा औरतों को पर्ची का कोई पैसा नहीं और दवाई बिलकुल फ्री।
6. लगभग 125 मरीज रोज़ाना लाभ प्राप्त कर रहे हैं, आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।
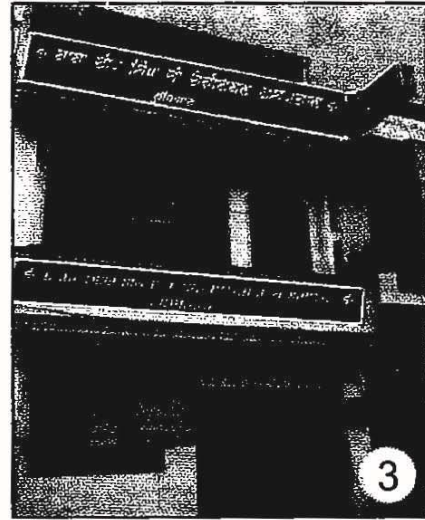
इस अस्पताल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरभजन सिंघ जी, भाई अरविंदर पाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 0161-2429900,98157-93713, 98726-34013

4. भाई घनईया जी चैरिटेबल अस्पताल, देहरादून
संचालक : भाई बलविन्द्र सिंघ (कथवाचक)

ट्रस्ट अधीन चल रही गुः साहिब जी की कार सेवा

कलगीधर के लाडले, प्यारे, बहुत प्यारे, महान तपस्वी, महान जरनैल, यति-सति, पूर्ण ब्रह्मज्ञानी, प्रेम करने और सिखाने वाले अनोखे अमर शहीद, महान योद्धा, धन्य धन्य बाबा दीप सिंघ जी का इस जगह पर आगमन हुआ।

1. 2000 शरीर के बैठने वाला प्रकाश स्थान का हाल, सोने के दरवाजे और सोने की बारियों वाला सुख आसन स्थान।
2. 5000 शरीर के बैठने वाला बड़ा लंगर हाल, लंगर बनाने वाला बड़ा रसोईघर, प्रबंधकी ब्लाक, सुंदर बाग, कार पार्किंग आदि तैयार हो चुकी है।

गुः श्री पहूविंड साहिब

3. बड़ी पानी की टैंकी, बाबा दीप सिंघ जी डे-बोर्डिंग स्कूल, अजायब घर, संगतों के लिए सराय, यह सब निर्माणाधीन है।

   आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।
4. कर्नल जी. एस. संधू जी और गुः साहिब जी की कमेटी की पूर्ण आशीष है।

इस स्थान की कार सेवा की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरमिन्द्र सिंघ जी (बाबा जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 98765-25847, 0183-3292255

ट्रस्ट अधीन चल रही तीन सरायें

गुरधामों के दर्शन करने आई संगत के लिए

माता कौलां जी संगत निवास सराय
पताः संगल वाली गली,
निकट गु: बाबा अटल राए साहिब जी, श्री अमृतसर।

1. माता कौलां जी संगत निवास सराय में गुरधामों के दर्शन करने आई संगत के आराम के लिए **22 A.C.** कमरे और **3** बड़े **A.C.** हाल हैं।
2. सराय में बुकिंग के लिए **98765-25859, 98765-25811** पर संपर्क करो।
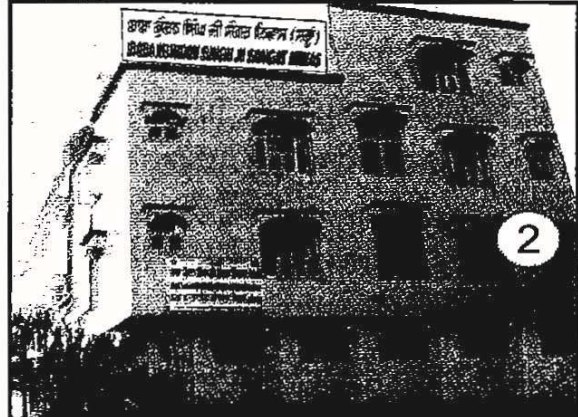
बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय
पताः नजदीक ब्रहम बुटा मारकींट श्री अमृतसर

1. बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय में संगतों के आराम के लिए **29 A.C.** कमरे हैं।
2. सराय में बुकिंग के लिए **98765-25832, 98765-25835** पर संपर्क करो।

माता कौलां जी संगत निवास सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई प्रितपाल सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

इन दोनों सराय में निम्नलिखित सुविधाएं उपलब्ध हैं।

1. हर कमरे में डबल बैड, अलमारी, अटैच बाथरुम (सर्दियों में गर्म पानी की सुविधा), इंटरकोम, TV में Live कीर्तन श्री दरबार साहिब और सारा दिन कथा-कीर्तन चलता है।
2. संगतों के लिए U.S.A. से पांव दबाने वाली मशीन, जोड़े पालिश करने वाली मशीन, लिफ्ट की सुविधा है।
3. सराय के अंदर ही सामान्य मूल्य पर कैन्टीन की सुविधा।
4. आप जी किसी भी जगह से 6 दिन पहले फोन पर भी अपने कमरे की बुकिंग करवा सकते हो।
5. सबसे बड़ी बात, सुविधाएं सब पर कोई बिजनैस नहीं। एक ही चाव है कि आप श्री गुरु रामदास जी के दर पर आकर नाम का रस लो और आपकी सेवा हो सके।

बाबा कुंदन सिंघ जी संगत निवास सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई अमरजीत सिंघ (सिलकी वीर जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है। आप जी के सहयोग की आवश्यकता है।

तीसरी सराय (निर्माणाधीन)

(साहिबजादा अजीत सिंघ जी संगत निवास सराय)

सतिगुरु जी की कृपा से ट्रस्ट द्वारा तीसरी सराय श्री हरिमन्दिर साहिब जी से सिर्फ 2 मिनट का पैदल रास्ता, 260 गज जगह में 45 A.C. कमरे, बड़े हाल, बाहर से आई संगतों की सुविधा के लिए, जो कि शीघ्र ही तैयार की जा रही है।

इस सराय की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई हरमिन्द्र सिंघ जी (बाबा जी) एवं सहयोगियों को सौंपी गई है।

संपर्क नः 98765-25847, 98765-25848, 0183-3292255

ट्रस्ट अधीन चल रहे दो स्कूल

1. यह स्कूल C.B.S.E. हो चुका है।
2. पंजाब में पहली बार सारा स्कूल A.C. है।
3. गुरमति और अंग्रेजी दोनों का खजाना बच्चों को मिले, यह चाव है।
4. रोटी खाने से पहले अरदास, बाद में अरदास, स्कूल छुट्टी के समय अरदास कैसे करनी है, कैसे बोलना है, सारी गुरमति का प्रशिक्षण।
5. गतका, कीर्तन, तबला, पुराने तंती साज, कम्प्यूटर, खेलों के विशेष प्रबंध।
6. पांचवीं का बच्चा अमेरिका की एम्बैसी (Embassy) में अंग्रेजी में बात कर सके, यह हमारी इच्छा है।
7. बच्चा बाणी कंठ करे, रोज गुरुद्वारे जाए, 15 मिनट सेवा करे, इसके अलग नम्बर हैं।
8. इस स्कूल पर आपके दिए दसवंध में से लगभग 10 करोड़ रुपए की लागत आई है।
9. यह सब कुछ होते हुए फीस केवल 375/- रुपए और 425/- रुपए है। कोई व्यापार नहीं, इच्छा है कि आम आदमी भी अपने बच्चों को दोनों विद्या दे सके। अैसे और स्कूल खुलें इस लिए आप जी के सहयोग की जरूरत है।
10. यह दोनों सकूलों में अभी होसटल की सुविधा नही है

माता कौलां जी पब्लिक स्कूल, तरन तारन रोड, श्री अमृतसर
संप्रक नं: 0183-2484920, 98151-18476

माता कौलां जी पब्लिक स्कूल, नजदीक गु: टाहला साहिब
तरन तारन रोड, श्री अमृतसर
(संप्रक 0183-2484922, 98765-25806)

तीसरी ब्रांच निर्माणाधीन

तीसरी ब्रांच दाता बंदी छोड़ पब्लिक स्कूल, निकट गांव भिटेवड, राम तीर्थ रोड, ज़िला अमृतसर में निर्माणाधीन है।

इस स्कूल की ड्यूटी भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गुरु की कृपा से भाई अमनदीप सिंघ जी एवं सहयोगियों को सौंपी गई है। संपर्क न: 98765-25824,98150-89513

माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट के समूह कीर्तनी जथों के संपरक नंबर।

मुख्य कीर्तनीए भाई गुरइकबाल सिंघ जी	
भाई गुरपाल सिंघ जी (उस्ताद जी)	098765-25825
भाई हरविंदरपाल सिंघ जी (लिटल)	097795-99990
भाई अमनदीप सिंघ जी	098765-25824, 098150-89513
भाई हरदेव सिंघ जी (दीवाना जी)	098765-25822, 0183-2493213
भाई जसविंदर सिंघ जी (सिवल-लाईन)	098765-25809
भाई गुरदीप सिंघ जी (बसंत एवेन्यु)	099152-82913
भाई अंतरप्रीत सिंघ जी	097791-12513, 098553-46036
भाई जतिंदर सिंघ जी (बिटू जी)	098150-29312
भाई तेजपाल सिंघ जी	095010-13678
भाई सुरिंद्रर सिंघ जी (मनी जी)	094641-18919
भाई अरविंद्रर सिंघ जी (लौंग मास्टर)	098765-25840
भाई हरमिंदर सिंघ जी (कथा वाचक)	098765-25847, 098765-25846
बीबी परमजीत कौर जी (पम्मा बहन जी)	098765-25833
बीबी हरवीन कौर जी (बिनू बहन जी)	099150-33901
भाई हरभजन सिंघ जी (लुधियाना)	098157-93713, 098720-07184
भाई तजिंद्रर सिंघ जी जोश (लुधियाना)	098760-58304
भाई केवलजीत सिंघ जी (दिल्ली)	098106-22413, 011-26220372
भाई बलविंदर सिंघ जी (कथा वाचक) (देहरादून)	092196-01313, 099277-22464
भाई गगनजोत सिंघ ज़ी (जालंधर)	098154-13138

जरूरी विनती:- सभा के समूह प्रेमियों एवं देश-विदेश की संगतों को हाथ जोड़ कर विन्ती की जाती है कि उपरोक्त सारे जत्थे माता कौलां जी भलाई केन्द्र की प्यार भरी कमांड में निष्काम सेवा निभा रहे हैं। विन्ती है कि दास सहित इन सभी जत्थों को कोई भी घरेलु वस्तु जैसे कि दस्तार, सूट, कुर्ता पजामा, जर्सियां, घड़ी, मोबाइल, बच्चों के कपड़े इत्यादि कोई भी घरेलु वस्तु न दी जाए। यदि आप जी का मन सेवा करना चाहे तो कछहरों का कपड़ा, सिलाई कछहरे, कृपानें, गातरे, गुटके, केसकी के लिए कपड़ा, माला या चल रहे विधवा स्त्रियों के कैन्द्र के लिए माया या राशन का सहयोग दिया जाए जी। हमारी भावना है कि आपकी दी वस्तु संगत के काम आए, जिससे सब का भला हो।

आशा है विनती स्वीकार करते हुए आशीषें प्रदान करोगे जी धन्यवाद।

माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट द्वारा 4 अनुपम लहरें

300 साल गुरबाणी कंठ दे नाल' के अब तक 3 भाग हो चुके हैं, इस लहर में क्रमवार 3,23,207,/4,12,820/11,32000 बच्चों ने भाग लिया।
दूसरी लहर '300 साल लिखन भक्ति दे नाल' इस लहर में 2,81000 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया।
तीसरी लहर '300 साल सिक्खी सरूप दे नाल' इस लहर में 3,24,804 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया।
चौथी लहर '300 साल सिक्ख इतिहास दे नाल' इस लहर में 19,32,536 बच्चों/नौजवान/बुजुर्गों ने भाग लिया।

भला ही भला कोई व्यापार नहीं

यह जो भी सबकुछ चल रहा है, सारी आशीष नदरि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, बाबा कुंदन सिंघ जी (नानकसर कलेरा) और मौजूदा महांपुरुष बाबा हरभजन सिंघ जी नानकसर वालों की है। यह उपरोक्त संस्थाएं आप स्वयं आकर देखो, आप दर्शन दो, हमें और सुमति दीजिए, लगभग हर सिक्ख दसवंध निकालता है। वह दसवंध लग कहां रहा है, यह देखना आपकी ड्यूटी है, दसवंध सही जगह लगाना, सही संस्था में देना, यह हमारा फर्ज है। ध्यान रखना ऐसे भलाई केंद्र, ऐसे अस्पताल, ऐसी सराएं, ऐसे स्कूल और खुलें, संगत जी आप जी की आशीष और सहयोग की जरूरत है।

आपकी विश्वास पात्र संस्थाः–

इन चल रहे कार्यों के लिए यदि आप जी अपने दासवंध में से सेवा हित (चैक या ड्राफ्ट) भेजना चाहो तो निम्नलिखित नाम पते पर भेजना जी:-
नाम :- माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट)
पता:- माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट) तरन तारन रोड श्री अमृतसर साहिब।
आप जी अपना पूरा पता एवं मोबाइल फोन साफ-साफ अक्षरों में लिखकर साथ जरूर भेजना जी ताकि रसीद एवं सत्कार आप जी के दिए पते पर पोस्ट किया जा सके। ट्रस्ट को दी हुई सेवा में इन्कम टैक्स के कानून 80-G अनुसार छूट है जी।
यदि आप जी ने दसवंध की सेवा सीधी बैंक में ट्रांस्फर करके भेजनी हो तो हमारे दोनों बैंकों के आन लाइन एकाऊंट नंबर (ONLINE ACCOUNT NO.) निम्नलिखित है जी:-

नाम: माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट)	नाम: माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट)
खाता नंबर : 3398000100114013	खाता नंबर : 02631770000020
बैंक : पंजाब नैशनल बैंक	बैंक : एच.डी.एफ.सी बैंक
ब्रांच : कोट मित सिंह, तरन तारन रोड, अमृतसर	ब्रांच : आर एस टावर अमृतसर

जरूरी विनती : आन लाइन बैंक खाते में सेवा डालकर मोबाइल नंबर 98765-25820 या 98765-25828 पर जरूर सूचित करो ताकि आप जी को रसीद एवं सत्कार पोस्ट किया जा सके।

जरुरी सुचना
संगत सावधान रहे

कई लोक माता कौलां जी भलाई केंद्र ट्रस्ट का नाम लेकर जां भाई गुरईकबाल सिंघ जी का नाम लेकर चन्दा (सेवा) ईकठा करने आते है संगत सावदान रहे
नोटः- अगर आप के पास कोई अनजान व्यकती हमारा नाम लेकर सेवा लेने आता है तो तुरंत इस नंबर पर संपरक करेः-

M: 98765-25815, 98765-25830, 98765-25821

धन्यवाद सहित दासन दास **भाई गुरइकबाल सिंघ**
एवं सहयोगी

Ph.: 0183-3292255,3294659, FAX 0183-2483920,
(M) 98765-25830, 98765-25828,98765-25849
E-mail:-mkbkt_amritsar@yahoo.com
www.matakaulanjibk.org

करवाई है और भाई पाल सिंघ जी का धन्यवाद जिन्होंने पुस्तक बारे अनेक ड्यूटियां बड़ी ही लगन से निभाईं। भाई तेजपाल सिंघ व भाई अमरजीत सिंघ मैडोलियन वाले जिन्होंने फाइनल संशोधन में बहुत समय दिया। स. प्रितपाल सिंघ (एस.के.एस कम्प्यूटर) वालों का धन्यवाद जिन्होंने पुस्तक की कंपोज़िंग व संशोधन बड़े ही सुचारू रूप से निभाये। इसके अतिरिक्त भाई जसविन्द्र सिंघ पटियाला वाले व हरविन्द्र सिंघ डी.सी. वीर जी के लिए कोई शब्द नहीं मिल रहे, जिन्होंने दिन-रात एक करके पूर्ण सहयोग दिया।

समस्त संगतों का भी बहुत-बहुत धन्यवाद जिनकी प्रेरणा से, जिनकी आशीष से यह पुस्तक इस रूप में पहुंची। समस्त संगतों की आगे से भी इसी तरह आशीषें दास के शीश पर बनी रहें।

दास

-भाई गुरइकबाल सिंघ

भूमिका

श्री गुरु नानक साहिब जी ने जब जगत का उद्धार करने के लिए उदासियों का दौर आरंभ किया तो उन्होंने हिन्दुस्तान के अलग-अलग कोनों में जाकर वहम-भ्रम में फंस चुकी, कर्म-कांड से घिरी इस दुनिया को निकाल कर सीधे सच के राह पर चलाने का न सिर्फ प्रयत्न किया बल्कि अमली जाम भी पहनाया। आप ने जिस का भी उद्धार किया, गुरबाणी का तीर मार कर उद्धार किया, शब्द का बाण मार कर उद्धार किया। फिर जब साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज द्वारा शब्द गुरु को गुरुगद्दी बख्शिश की तो यह आश्चर्यजनक कौतुक समूचे ब्रह्माण्ड के लिए एक नई परंपरा थी, एक नई रेखा थी, एक नई प्रथा थी व एक ऐसे कार्य की सम्पन्नता थी जिसका आगाज स्वयं निरंकार श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (अंग ९४३)

के रूप में किया था। और कमाल की बात, धुर की बाणी को केवल सिक्खों तक ही सीमित न रख कर

जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥

(अंग १४२९)

के महावाक्य के अनुसार पंचम पिता जी ने साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज के रूप में एक ऐसा दुर्लभ खज़ाना समस्त सृष्टि की झोली में डाला कि हर कोई विस्मादि मंडल का आनन्द ले सके, अपनी आध्यात्मिक प्यास को तृप्त कर सके, अपने जीवन को मूलभूत रेखाओं के अनुसार ढाल सके, अपने बौद्धिक विकास को सही दिशा दे सके व हर समय आनन्दित अवस्था में रहते हुए भाईचारे का पैगाम देते हुए समस्त मानवता के लिए प्रकाश स्तम्भ बन सके।

इसलिए आज आवश्यकता है कि हम व्यर्थ के वहम-भ्रम, रस्म-रिवाज, कर्म-कांड व सयानों के उपायों से ऊपर उठ कर गुरमति आशय के अनुसार चल कर गुरबाणी को आधार बना कर जिसका उपदेश दस गुरु साहिबान ने अपने २३९ वर्ष के काल में कमा कर हमें दिया है। उसके अनुसार चलते हुए सात सागरों के पार बेगानी धरती पर अपने जीवन की यात्रा आगे ले जाते हुए अनेक प्रकार के कठिन राह सामने आये। मेरे जीवन में भी आए तो हो सकता है आपके जीवन में भी आते हों।

इन कठिन राहों को संभालने के लिए मन में केवल यही तीव्र इच्छा थी कहीं अपने गुरु साहिबान के दर्शाए हुए मार्ग से कहीं भटक न जाएं, किसी और का दरवाजा न खटखटा बैठें। उस समय को सम्भालने के लिए व अपने कार्यों का गुरमति के अनुसार मार्गदर्शन करने के लिए परम सत्कार योग्य भाई साहिब भाई गुरइकबाल सिंघ जी के साथ फोन पर ही विचार व्यक्त किये व उन अमूल्य विचारों को सतिगुरु की कृपा से कागज़ के पन्नों पर लिखती रही जिसको माता कौलां जी भलाई केन्द्र ट्रस्ट द्वारा पूरे संशोधन के साथ पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। मन की केवल यही इच्छा है कि हम पूर्ण तौर पर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज के बन जाएं। हमारे दिन की शुरुआत बाणी से हो, हमारा हर प्रहर बाणी का ओट आसरा लेते हुए बीते, हमारी हर घड़ी शब्द गुरु के धन्यवाद में व्यतीत हो व हमारा हर कदम बाणी से ही नेतृत्व ले। बात क्या, हमारा समस्त जीवन ही शब्द गुरु के चरणों में लग जाए। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आप सब के लिए एक मार्गदर्शक साबित होगी व गुरमति के दायरे में अपना जीवन व्यतीत करने के लिए यह एक प्रकाश स्तम्भ साबित होगी। मैं व मेरी सहयोगी बहनें भाई गुरइकबाल सिंघ जी के समस्त ट्रस्ट का धन्यवाद करती हैं।

आशीष बख्शनी जी।

वाहिगुरु जी का खालसा ॥ वाहिगुरु जी की फतेह ॥

आपकी चरणरज की आशा में

जतिन्द्र कौर

ज्योति दारा मैरीलैंड (अमेरिका)

प्रश्नोत्तर

१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज जब भी अपने सिक्ख पर खुश होते हैं तो इसकी क्या निशानी होती है?

उत्तर :- जब भी आपका किसी नाम जपने वाले गुरसिक्ख से मिलाप हो जाएं या आपको सत्संग की घड़ियां नसीब हो जाएं या आपके घर संगत के चरण पड़ जायें तो समझ लीजिए कि श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज आप पर खुश हैं। पवित्र गुरबाणी का भी फुरमान है-

जिन कउ क्रिपा करत है गोबिदु ते सतसंगि मिलात ॥ ३॥

(अंग १२५२)

२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमें कितनी देर तक नाम जपना चाहिए ?

उत्तर :- श्री गुरु अर्जुन देव जी का फुरमान है कि मनुष्य धरती पर आया ही नाम जपने के लिए है। सतिगुरु जी बाणी में फुरमान करते हैं :

सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ (सुखमनी साहिब)

इसलिए हमें नाम जपते रहना चाहिए। हमें कोशिश करनी चाहिए कि सारा समय नाम में ही बीते। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज हुक्म करते हैं :

दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥

(अंग ४९८)

ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै ॥

(अंग ८२०)

हमें अपने आप को चैक करना चाहिए कि हम इन पंक्तियों से कितनी दूर हैं। यदि दूर हैं तो अपने नितनेम के अतिरिक्त जपुजी साहिब जी का एक पाठ बढ़ा कर सतिगुरु जी के चरणों में प्रार्थना करें हे सतिगुरु जी! इन पंक्तियों पर चलने का हमें बल व उद्यम बख्शो जी। बाकी अढ़ाई घण्टे कम से कम गुरबाणी व सिमरन का नियम होना आवश्यक है।

३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, नाम जपने के बाद नाम संभालना कैसे है? सुमति दीजिए।

उत्तर :- सबसे बड़ी बात है, किसी का दिल कभी भी नहीं दुखाना चाहिए। शेख फरीद जी अपनी बाणी में कहते हैं, यदि तुझे परमात्मा से मिलने का शौक है तो किसी का दिल न दुःखाना।

जे तउ पिरीआ की सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥ १३० ॥

(अंग १३८४)

किसी का दिल दुखाना अपने पुण्य जला लेना है। जिस प्रकार ट्यूबवैल में से पानी बहुत गति से निकलता है, उसी तरह जब आप किसी का दिल दुखाते हो तो आपके पुण्य इसी तरह बह जाते हैं। इसके अतिरिक्त यदि वाहिगुरु ने आपको सत्संग की घड़ियां बख्शिश की हैं तो संगत करने के उपरांत घर जाकर जपुजी साहिब जी की पांच पउड़ियों का पाठ करके गुरु साहिब का धन्यवाद करो कि आपने कृपा करके सत्संग की घड़ियां नसीब करवाई हैं। इस तरह करने से कमाई संभाली जाएगी और आपकी यह घड़ियां दरगाह में जमा हो जाएंगी। आम तौर पर कीर्तनीऐ को अहं आने का बहुत जल्दी डर होता है। इसलिए हर कीर्तनिया प्रयत्न करे कि कीर्तन करने से पहले जपुजी साहिब जी का पाठ करके कीर्तन करने बैठे। ऐसा करने

से रस बन जाएगा और इसी तरह कीर्तन करने के उपरांत जपुजी साहिब जी का पाठ करके धन्यवाद किया जाए। ऐसा करने से किया हुआ कीर्तन भक्ति बन जाएगा।

४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, वह कौन-सी दुकान है, जहां से मुझे गुरु के प्रेम की दात मिल सके?

उत्तर :- उस दुकान का नाम है साधसंगत ! पवित्र गुरबाणी का फुरमान है-

साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ (अंग ६९४)

जब तक आपको संगत नहीं मिली, तब तक प्रेम नहीं मिलेगा। यहां कच्ची भी पकती है और पक्की भी पकती है। जो कच्ची में है, वह उपदेश लेता है और जो पक्की में है, वह नाम का रस लेता है।

५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सिक्ख का प्रतिदिन नितनेम कितना होना चाहिए?

उत्तर :- कुछ पुरातन गुरु इतिहास की खोज व महापुरुषों के वचनों के अनुसार आम जिज्ञासु को २४ घण्टों में से अढ़ाई घण्टे का समय अवश्य गुरु के चरणों में लगाना चाहिए। बाकी इन अढ़ाई घण्टों में अमृत वेले कितना नियम होना चाहिए? इस बारे श्री गुरु अमरदास जी के इतिहास में से जिक्र मिलता है कि कुछ सिक्खों ने महाराज जी से प्रश्न पूछा था कि सिक्ख के लिए अमृत वेले में कितना समय नितनेम के लिए आवश्यक है तो महाराज जी ने एक नाव की मिसाल देते हुए कहा कि यदि सारी नाव पानी में डूबी हो और केवल चार अंगुल पानी से बाहर हो तो भी दूसरे किनारे लगा देती है। इसी प्रकार यदि सिक्ख को गृहस्थी में रहते हुए बहुत व्यस्तताएं हैं, पर वह अमृत वेला की चार घड़ियां ही संभाल ले तो उसका भी बेड़ा

पार लग जाता है। एक घड़ी २४ मिनट की होती है और चार घड़ियों का समय ९६ मिनट बनता है, भावार्थ एक घण्टा, ३६ मिनट का बन जाता है। इन अढ़ाई घण्टों में अमृत वेले में लगभग डेढ घण्टा आवश्यक है, बाकी समय दिन को या शाम को पूरा कर ले।

६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, परमार्थ के राह पर चलते हुए लोग आम शोभा करने लगते हैं। उस समय अहम् भी आ जाता है। इस चीज़ से कैसे बचा जाये?

उत्तर :- पहली बात यह है कि परमार्थ में हमेशा अपने से बड़े को देखो और सांसारिक पक्ष में अपने से छोटे को देखो तो हमेशा सुखी रहोगे। भावार्थ यदि आप ५ बजे उठते हो तो जो आप से भी पहले उठता है, उसकी ओर देखो, फिर अहम् नहीं आयेगा। बाकी परमार्थ के रास्ते में यह भी अवश्य सोचो कि यदि मेरा शरीर किसी कारण ठीक न होता तो मैं पलंग से उठ नहीं सकता था व जिसके कारण सेवा भी नहीं हो सकती थी। इसलिए उसकी कृपा है, उसकी दया है कि वह इस शरीर से सेवा ले रहा है।

तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ (अंग १०११)

७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आम सुनने में आता है कि अलग-अलग धर्मों में उनके मुर्शिदों द्वारा अपने मुरीदों को बख्शने की गिनती अलग-अलग है। कोई सात बार बख्शता है, कोई पाँच बार, कोई तीन बार, पर सिक्ख धर्म में गुरु साहिब सिक्ख को कितनी बार बख्शते हैं?

उत्तर :- श्री गुरु रामदास जी महाराज के समय कुछ सिक्ख गुरु साहिब के चरणों में आये थे तो उन्होंने भी यह प्रश्न सतिगुरु जी से पूछा था कि आप जी सिक्ख को कितनी बार बख्शते हो? गुरु साहिब जी ने जवाब देते हुए संख्या नहीं बताई, बल्कि कहा कि जितनी बारी भी सिक्ख मन बना कर शरण

में आ जाये, उतनी बार गुरु घर में बख्शा जाता है। गुरबाणी में सतिगुरु जी फुरमान करते हैं-

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥
(अंग५४४)

आप जानते ही हो कि १९८४ को ब्लू स्टार अप्रेशन के समय जिनसे गलतियां हुईं, उनमें से जो भी मन से निश्चय करके श्री अकाल तख्त साहिब जी की शरण में आया, उसको बख्श दिया गया। यहां तक कि जो शरीर अपनी गलती का अहसास होने के बावजूद भूल बख्शवाने के लिए शरण नहीं आ सके व श्वासों की पूंजी समाप्त होने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गए, यदि उनकी मौत के बाद भी उनके किसी सेवादार या औलाद ने भी श्री अकाल तख्त साहिब आकर विनती की कि हमारे बुजुर्गों से गलतियां हुई हैं तो हमें सेवा लगा कर उनको बख्शा दीजिए तो भी श्री अकाल तख्त साहिब ने उनको कलावे में ले लिया। इसलिए हमें मान होना चाहिए कि हमको इतना बड़ा पिता मिला है, पंचम पातशाह भी गुरबाणी में फुरमान करते हैं कि जितनी बार भी कोई मन झुका कर गुरु की शरण आ जाये गुरु साहिब की कृपा द्वारा बख्शा जाता है।

जिसु पापी कउ मिलै न ढोई ॥ सरणि आवै तां निरमलु होई ॥ २॥
(अंग ११४१)

८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सतिगुरु जी के चरणों में विनती करने का कौन-सा समय सबसे अच्छा होता है? किस समय श्री गुरु नानक देव जी महाराज सबसे अधिक सुनते हैं?

उत्तर :- समय कोई भी हो, अच्छा ही होता है, पर अमृत वेले की अधिक महानता है। तीसरे पातशाह जी का पवित्र गुरबाणी में फुरमान है-

बाबीहा अंम्रित वेले बोलिआ तां दरि सुणी पुकार ॥

(अंग १२८५)

विनती करने की युक्ति भी होनी चाहिए। यह नहीं कि सतिगुरु जी के कमरे में जाते ही शुरू हो जाओ कि बाबा जी, यह चाहिए, वह चाहिए। सबसे पहले अपना नितनेम पूरा करो। फिर अपनी विनती करो। दूसरा तरीका यह है कि जब सिमरन में जुड़े हो तो सूक्ष्म रूप में अपनी विनतियां सुरति से उस समय सतिगुरु जी के चरणों में रख दिया करो, सतिगुरु जी स्वयं कृपा करेंगे।

९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरी मांगों की सूची प्रतिदिन बहुत बड़ी होती है। फिर कई बार सोचती हूँ कि सेवा थोड़ी है, पर माँगें बहुत अधिक हैं। साथ ही मन में यह भी विचार आता है कि कहीं यह न हो कि इन माँगों के कारण पुण्य का बैलेंस कहीं समाप्त न हो जाए।

उत्तर :- पहली बात यह है कि जो भी सतिगुरु जी से माँगो, अपने नितनेम के अतिरिक्त नियम बढ़ाकर माँगो। खाली बातों से कुछ नहीं होता। कुछ भेंट देनी भी आवश्यक होती है। दूसरी बात यह है कि जो भी वस्तु माँगो, उसमें लालच नहीं होना चाहिए। जैसे आप किराये के मकान में रहते हैं तो नियम बढ़ा कर मकान की अरदास कर सकते हो। इसमें लालच नहीं, पर आपके पास मकान हो और दूसरे की बढ़िया कोठी देख कर यह अरदास करो कि सतिगुरु जी! कृपा करके मुझे भी इस प्रकार की कोठी बख्श दो। यह लालच है। जहां लालच है, वहां कृपा नहीं होती। जैसे कि गुरबाणी में भी दर्ज है-

लालच लागे जनमु गवाइआ माइआ भरम भुलाहिगा ॥ (अंग ११०६)

१०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, क्या हम अपने नियम उपरांत किसी की भलाई के लिए अरदास कर सकते हैं?

उत्तर :- महापुरुष बाबा नंद सिंघ जी का वचन है कि हर जिज्ञासु अपने आधार के लिए कम से कम अढ़ाई घण्टे का नियम अवश्य रखे। यह नियम कभी कम नहीं करना चाहिए। इसके अतिरिक्त जब भी आपने किसी की भलाई के लिए कोई अरदास करनी है तो उन अढ़ाई घण्टे के नियम के अतिरिक्त कोई और नियम करके उस प्राणी के लिए अरदास कर सकते हो पर उसकी अरदास किस संबंध में है, यह बहुत-सोच विचार कर अरदास करनी है। दास को एक फोन आया था, उससे एक हत्या हुई है, मुझे उसने कहा, आप मेरे लिए नितनेम बढ़ा कर अरदास करो, यहां बहुत सोचना जरूरी है।

११. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मैं एक बार गुरुद्वारा साहिब में गुटका साहिब से पाठ करने लगी तो मेरी एक सहेली ने मुझे टोका कि जो गुरुद्वारा साहिब में गुटका साहिब या माला रखी होती हैं, उनसे पाठ करने से हमें पाठ करने का पूरा महात्मय नहीं मिलता। उसकी यह बात सुन कर मैं गुरुद्वारा साहिब में उन गुटका साहिब से पाठ करने से झिझकती हूँ। क्या यह ठीक है?

उत्तर :- किसी भी गुरुद्वारा साहिब में गुटका साहिब, माला भेंट करनी बहुत बड़ा महात्मय है। यदि आप उन गुटका साहिब से पाठ करते हो तो आपका पाठ करने का महात्मय नहीं घटता बल्कि सतिगुरु जी उस शरीर पर भी बख्शिश करते हैं, जिसने गुटका साहिब या माला भेंट की होती है।

१२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आज के समय में ईर्ष्या का बहुत अधिक बोलबाला है। कई लोग तो दूसरे का बुरा करने के लिए सुखमनी साहिब जी के अधिक पाठ करते हैं। क्या उनके द्वारा ऐसा करना उचित है?

उत्तर :- सुखमनी साहिब जी की बाणी कोई जादू-मंत्र नहीं है कि एक का बिगाड़ा और दूसरे का संवारा। सुखमनी साहिब जी

की बाणी किसी का काम बिगाड़ती नहीं बल्कि ईर्ष्या रखने वाले के मन से ईर्ष्या की भावना ही समाप्त कर देती है। गुरु अर्जुन देव जी का वचन है-

एकसु सिउ जा का मनु राता ॥
विसरी तिसै पराई ताता ॥ १॥ (अंग १८९)

बाकी सिक्खी तो यह है कि सुखमनी साहिब जी का पाठ करके सिक्ख यह अरदास करे कि सतिगुरु जी! जिसके साथ ईर्ष्या है, उसको भी दे व उसके पांवों के पीछे मुझ गरीब को भी दे।

१३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आम घरों में देखने में आता है कि लोग पाठ करते हुए टैलीफोन भी अटैंड करते रहते हैं और साथ ही बच्चों के साथ गुस्सा भी होते रहते हैं। क्या ऐसा करने से भी बाणी का उतना ही महात्मय है जितना अमृत वेले बाणी पढ़ने का होता है।

उत्तर :- नहीं जी। अमृत वेला एक अमूल्य दात है और उस समय को संभालना हीरों का व्यापार करने के तुल्य है। अमृत वेला संभालना गुरु साहिब का हुक्म है-

हरि धनु अंम्रित वेलै वतै का बीजिआ
भगत खाई खरचि रहे निखुटै नाही॥ (अंग ७३४)

और इस समय पाठ करते हुए मन बहुत जल्दी जुड़ता है। इसके अतिरिक्त इस समय वातावरण शांतमय होता है और इस समय किसी का फोन आना, बच्चों पर क्रोधित होने का डर भी कम होता है। इसके साथ नितनेम करने के लिए घर में एक ऐसा स्थान बनाना चाहिए, जहां बैठ कर सिमरन किया जाए और बाणी पढ़ी जाए। ऐसा करने से एक तो एकाग्रता बढ़ती है और दूसरा एकाग्रता बढ़ने से बाणी पढ़ने का महात्मय भी बढ़ जाता है। यदि कोई हर रोज़, एक स्थान एक आसन पर

नियम करता है तो फिर एक दिन ऐसा आ जाता है कि यदि आप उस स्थान पर पहुंचने में लेट हो जाओ तो आभास होता है कि गुरु साहिब प्रतीक्षा कर रहे हैं। बाकी दिन समय पाठ करते हुए भी टैलीफोन अटैंड करना, बातें करने से संकोच होना चाहिए। गुरबाणी में भी फुरमान है-

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ सावधान एकागर चीत ॥

१४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आज के युग में लोग अपनी बुद्धि को अधिक समझते हैं व तर्क से बात करते हैं। कई बार सुनने में आता है कि हम सिमरन नहीं करते, पर इसके साथ-साथ हम किसी का बुरा भी नहीं करते और हमेशा किसी का अच्छा ही सोचते हैं। क्या इसके बावजूद भी पाठ-सिमरन करना आवश्यक है?

उत्तर :- यदि कोई किसी का हमेशा ही अच्छा सोचता है या करता है तो इसको निर्मल करणी कहते हैं, पर निर्मल करणी के साथ-साथ पाठ-सिमरन करना भी बहुत आवश्यक है। जैसे किसी पक्षी का एक पंख हो तो वह उड़ नहीं सकता। यदि उसने उड़ना हो तो उसके लिए दो पंखों की आवश्यकता है। इसी प्रकार यदि हम अच्छे कर्म करते हैं तो हमारे पास एक ही पंख है, यदि इसके साथ पाठ-सिमरन भी है तो दो पंख हैं। दूसरी बात यह भी है कि प्राणी की मौत के उपरांत अंत तक केवल नाम ही साथ जाता है, बाकी जितने पुण्य हमने बनाये होते हैं, वे रास्ते में ही रह जाते हैं। जैसा कि बाणी में फुरमान है-

अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥
हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ (अंग २६४)

संत वरियाम सिंघ जी द्वारा एक पत्रिका छपती है आत्म मार्ग। उसमें उल्लेख है कि एक स्त्री प्रतिदिन संगत में आती थी

जिसका नाम सुरजीत कौर लिखा है। वह स्त्री माया द्वारा इतनी धनी भी नहीं थी, उसके अंदर इतना उत्साह था कि दस मील दूर भी संगत हो रही होती तो पति के साईकल के पीछे बैठ कर संगत में पहुंच जाती थी। एक दिन संत वरियाम सिंघ जी ने उस स्त्री से पूछ ही लिया कि बीबी, तुम कभी सत्संग की घड़ियां नहीं छोड़ती। यदि सात-आठ किलोमीटर दूर भो सत्संग हो रहा हो तो भी तू पहुंचती है, इसका क्या कारण है? वह स्त्री कहने लगी कि मैं एक बार मर चुकी हूँ। उस स्त्री ने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा कि मेरी मौत हो गई तो मुझे यमदूत लेकर चले गए। मैं जा रही थी कि रास्ते में एक बड़ी भयानक पीब व रक्त की नदी आ गई, बड़ी बदबू भी आ रही थी तो मैं सोचने लगी कि मैं इस नदी को कैसे पार करूंगी। अभी मैं सोच ही रही थी कि इतने में एक श्वेत वस्त्रों में कोई स्त्री सामने आई और वह कहने लगी कि मैं तुझे यह नदी पार करवा देती हूँ। उसने मुझे उठा कर नदी पार करवा दी तो मैंने उससे पूछा कि तू कौन है? वह श्वेत वस्त्रधारी स्त्री कहने लगी कि मैं कोई स्त्री नहीं, मैं एक पुण्य हूँ तूने अपने जीवन में एक पक्षी के पैरों में फंसी हुई डोर खोल कर उसको आज़ाद करवा कर उसका भला किया था और तेरा एक पुण्य बन गया था। और जो तूने यह पुण्य किया था, मैं कोई और नहीं, तेरा वही पुण्य हूँ, तेरा वही पुण्य सामने आया है। उस पुण्य के कारण मैंने तुझे नदी पार करवाई है और अब तेरा यह पुण्य यहां समाप्त हो गया है और अंत तक तो जो तूने जीवन में नाम जपा है, उसी ने जाना है। जब धर्मराज के सामने मुझे पेश किया गया तो धर्मराज यमदूतों से कहने लगा कि तुम किस स्त्री को ले आये हो। इसको वापस ले जाओ। वह स्त्री कहने लगी कि यमदूत मुझे वापस ले आये। इधर मैं जीवित हुई और उधर दूसरे मोहल्ले में मेरे नाम की ही एक अन्य स्त्री की मृत्यु हो गई। वह स्त्री कहने लगी कि उस दिन

के बाद से चाहे कितनी दूर भी सत्संग हो, मैं नहीं छोड़ती, क्योंकि आखिर तक केवल नाम ही सहायक होता है। इसलिए निर्मल करनी भी आवश्यक है पर गुरबाणी व सिमरन का नियम भी होना आवश्यक है।

(स्रोत : आत्म मार्ग पत्रिका संत वरियाम सिंघ जी)

(उपरोक्त स्त्री का हाल पढ़ कर यह संशय न करना कि धर्मराज से भी गलती होती है। कई बार कहीं-कहीं निरंकार स्वयं ऐसे संयोग बनाता है, हम सांसारिक लोगों के विश्वास के लिए कि लेखा भी है और धर्मराज भी है)

१५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, होनी कितनी प्रकार की होती है?

उत्तर :- होनी तीन प्रकार की होती है-१. होनी, २. तीव्र होनी, ३. तरतीवर होनी।

होनी व तीव्र होनी पाठ करने से, जप तप बढ़ाने से, गुरु साहिब जी या नाम में रंगे हुए महापुरुषों की कृपा होने से बदली भी जा सकती है। पवित्र गुरबाणी में दर्ज है-

जिसु ऊपरि प्रभु किरपा करै ॥

तिसु ऊपर ते कालु परहरै ॥१॥ (अंग ११४६)

पर तरतीवर होनी होकर ही रहती है।

१६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, समय बिताने (TIME PASS) व समय सफल करने में क्या अन्तर है?

उत्तर :- गुरसिक्ख ने समय बिताना (TIME PASS) नहीं बल्कि गुरसिक्ख ने अपना समय सफल करना है। एक बार संत बाबा अतर सिंघ जी मसतुआणे वाले रेल में यात्रा कर रहे थे और उनका मन गुरु साहिब के चरणों के साथ जुड़ा हुआ था। कुछ समय बाद जब बाबा जी ने आँखें खोलीं तो देखा कि कुछ युवक सामने सीटों पर बैठे ताश खेल रहे थे। बाबा जी ने

सोचा कि चलो थोड़े समय बाद यह ताश खेलने से हट जाएंगे और फिर आँखें बंद कर लीं और गुरु साहिब के चरणों में जुड़ गये। कुछ समय बाद जब दोबारा आँखें खोलीं तो बाबा जी ने देखा कि वे युवक उसी प्रकार ताश खेलने में मशगूल थे। बाबा जी ने उन युवकों से पूछा कि आप ताश क्यों खेल रहे हैं? उन युवकों ने कहा कि बाबा जी! हम टाईम पास कर रहे हैं। बाबा जी ने उपदेश दिया कि भाई, सिक्ख ने समय पास नहीं करना बल्कि समय सफल करना है। महापुरुष भी वचन करते थे कि आप एक पाठ सुखमनी साहिब जी का कर लो, पुण्य बन जायेंगे, पर दो घण्टे टी.वी. पर रंग तमाशे देख लो, जितने पुण्य बने थे, सभी स्वाहा हो जायेंगे। यदि आप टी.वी. बिना नहीं रह सकते तो एक काम कर सकते हो। टी. वी. पर जो धार्मिक कार्यक्रम वाला चैनल आता है, वह देखो या धार्मिक सी.डी. देखो। समय व्यतीत भी हो जायेगा और सफल भी हो जायेगा। जैसे गुरबाणी में फुरमान है-

सफलु मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥ (अंग ४४)

१७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग बहुत पाठ करते हैं पर सारा दिन न तो झूठ बोलना छोड़ते हैं और न ही अपना व्यवहार ठीक करते हैं, भावार्थ कि कपट नहीं छोड़ते। ऐसे लोगों का क्या अंजाम होता है?

उत्तर :- यह वे लोग हैं जो पाठ करके छेद वाले बर्तन में पुण्य रूपी दात डालते जा रहे हैं, पर एक तरफ डालते हैं और साथ ही दूसरी तरफ से बहा देते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में लिखा है-

हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई ॥

अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥ (सूही म: ४, अंग ७३२)

पंक्तियां बहुत शिक्षाप्रद हैं। सुन कर दिल काँप जाता है।

सुखमनी साहिब जी की बाणी में भी लिखा है :-

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥

हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ (अंग २६६)

नाम भी जप, पाठ भी कर और निर्मल कर्म भी कर।

१८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरे रिश्तेदारों में एक लड़का अपने माता-पिता को बहुत तंग करता है और इतनी बदतमीज़ी पर उतर आता है कि बर्दाश्त नहीं होता। क्या किया जाये?

उत्तर :- बच्चे के माता-पिता को विनती की जाये कि श्री अमृतसर साहिब में गु: बिबेकसर साहिब से अमृत लाकर कटोरी में अमृत डाल कर कुछ पाठ श्री जपुजी साहिब जी के करके बच्चे को छकाया जाए। गु: बिबेकसर बारे श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी महाराज ने रसना से वचन किया है-यहां मलिन बुद्धि को विवेक बुद्धि की बख्शिश होगी। जैसे गुरबाणी का फुरमान है-

प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ (अंग २६२)

१९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग कहते हैं,"अपने गुरु से कुछ नहीं माँगना चाहिए। यदि हम माँगते हैं तो हमारे पुण्य जलने शुरू हो जाते हैं।" क्या यह ठीक है?

उत्तर :- श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज इस बारे शिक्षा देते हुए फुरमान करते हैं :

जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥ (अंग ५१९)

यदि सिक्ख अपने गुरु जी से नहीं माँगेगा तो और कहां से माँगेगा? यदि नहीं माँगता तो इसका अर्थ है कि वह रज़ा में रहता है। यह बहुत बड़ी अवस्था है। कई बार हम अरदास नहीं करते तो अहंकार का शिकार भी हो सकते हैं। माँगने में लालच न हो, भक्तों ने भी तो माँगा है :-

दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥

(भक्त धन्ना जी, अंग ६९५)

माँगा है पर लोभ नहीं था माँगने में। भाई जोधका सचियार जी पर जब श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी प्रसन्न हुए तो गुरु साहिब ने प्रसन्न होकर कहा कि तुम पर मैं बहुत प्रसन्न हूँ, कुछ माँगो। भाई साहिब जी ने क्या माँगा कि हे सच्चे पातशाह जी! यदि आप प्रसन्न हैं तो यह कृपा करो कि जब तक मेरी कुल चले, गुरु नानक के घर का वास न निकले। देखो माँगने में भी नाम है। इसलिए सतिगुरु जी कहते हैं -

मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥ ४॥ (अंग १०१८)

२०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मुझे लगता है कि परमार्थ की सीढ़ियां बहुत कठिन हैं। माँगते-माँगते थक जाओ पर बड़ी कठिनाई से अगली सीढ़ी मिलती है। ऐसा क्यों?

उत्तर :- बाबा नंद सिंघ जी के पास एक युवक आया और बाबा जी से कहने लगा कि आप ने गुरु नानक पातशाह जी के दर्शन किये हैं, मुझे भी करवा दीजिए। बाबा जी उसकी बात सुन कर कहने लगे कि तू किस कक्षा तक पढ़ा है? वह युवक कहने लगा कि मैं एम.ए. तक पढ़ा हूँ। बाबा जी कहने लगे कि तू हमें बैठे-बिठाये एम.ए. करवा दे। हम तुम्हें गुरु नानक पातशाह के दर्शन करवा देते हैं। वह युवक कहने लगा कि एम.ए. ऐसे नहीं होती बल्कि कई कक्षाएं पास करनी पड़ती हैं, कई परीक्षाएं पास करनी पड़ती हैं, फिर कहीं जाकर एम.ए. होती है। बाबा जी कहने लगे कि परमार्थ की पढ़ाई में भी कई कक्षाएं पास करनी पड़ती हैं, तब कहीं जाकर गुरु नानक के दर्शन होते हैं। जब हम सेवा-सिमरन करते हैं तो परमेश्वर सेवा सिमरन सदका पहले हमारे मन का मैला बर्तन साफ करता है और जब सेवा सिमरन करके बर्तन साफ हो जाये, तो नाम हृदय में बस जाता है।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥

अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥ (अंग २६३)

२१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, परमार्थ के राह में कौन-कौन से गड्ढे आते हैं?

उत्तर :- बाबा नंद सिंघ जी महापुरुष वचन करते थे कि यदि कोई परमार्थ के राह पर चला है तो उसके रास्ते में चार गड्ढे आते हैं : पहला है वाह-वाह भावार्थ शोभा होनी, दूसरी है पराई स्त्री, तीसरा है ऋद्धि-सिद्धि व चौथा है अहं। यदि कोई इन चारों से बच कर रहे तो परमेश्वर की प्राप्ति हो जाती है।

२२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरसिक्ख किसे कहते हैं?

उत्तर :- गुरसिक्ख करनी का नाम है, कथनी का नहीं। गुरसिक्ख वह है जो २४ घण्टे में से कम से कम अढ़ाई घण्टे अपने गुरु को दे। यहां यह आवश्यक नहीं कि एक समय में ही अढ़ाई घण्टे पूरे कर लिए जायें। गुरसिक्ख थोड़ा-थोड़ा समय निकाल कर भी अढ़ाई घण्टे का समय पूरा कर सकता है। गुरसिक्ख वह है जो समय के दसवंध के साथ अपनी किरत कमाई का भी दसवां हिस्सा निकाले। गुरसिक्ख शुभ कर्म करे, नम्र व मधुर स्वभाव रखे। भाई गुरदास जी बाणी में कहते हैं-

गुर सिख मिठा बोलणा निवि चलणा गुरसिखु परवाणा।

(वार ३२, भाई गुरदास जी)

२३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई बार देखने में आता है कि यदि किसी दुकानदार का काम बढ़िया चल रहा है और उसके बराबर कोई अन्य दुकानदार वही वैरायटी रख कर दुकान शुरू कर दे तो पहला दुकानदार काम कम होने के कारण यह अरदास करने लगता है कि वाहिगुरु, कृपा कर, यह दुकानदार सड़क पर आ जाये और मैं इसको ठोकरें खाता देखूं। क्या ऐसी अरदास स्वीकार होती है?

उत्तर :- गुरसिक्ख किसी का बुरा नहीं चाहता बल्कि सरबत का भला माँगता है। गुरसिक्ख सदैव अरदास में कहता है-नानक नाम चढ़दी कला॥ तेरे भाणे सरबत दा भला॥ जब आप किसी का बुरा (गुरबाणी का वास्ता देकर) माँगते हैं तो गुरु नानक साहिब कभी भी खुश नहीं होते।

पर का बुरा न राखहु चीत॥

तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ ३ ॥ (अंग ३८६)

जब आप दूसरों का भला माँग कर अपनी विनती करते हैं तो वाहिगुरु उस कारण आप पर भी कृपा करेंगे।

२४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब किसी शरीर को अपनी की हुई गलती का अहसास हो जाये कि मुझसे गलती हो गई है तो उसको कैसे भूल बख्शवानी चाहिए?

उत्तर :- वैसे तो प्रयत्न करना चाहिए कि जानबूझ कर कोई गलती न की जाये पर यदि अज्ञानतावश कोई गलती हो गई है तो अपने आप पर छोटे-छोटे गुरबाणी के बैन लगा कर की हुई गलती की माफी माँगे और यदि गलती बड़ी है तो पाँच प्यारों के आगे पेश होकर भूल बख्शावे। जब इस प्रकार गुरबाणी पढ़ कर और मन झुका कर माफी माँगी जाये तो फिर गुरु नानक साहिब कृपा के घर में आकर पन्ने फाड़ देते हैं। पवित्र गुरबाणी का फुरमान है :

सतिगुरु निरवैरु पुत्र सत्र समाने अउगुण कटे करे सुधु देहा ॥

(अंग ९६०)

२५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई व्यक्ति इतने बुरे होते हैं कि समझ में ही नहीं आता कि उनकी मति इतनी भ्रष्ट क्यों है?

उत्तर :- जब भी आपको कोई बुरा दिखाई देता है, तो यह न सोचा करो कि वह बुरा है, बल्कि यह सोचा करो कि कुछ वर्ष पहले हम भी ऐसे ही थे और सतिगुरु जी ने कृपा करके, दया करके

मेरी मति बदल दी है। मेरे सतिगुरु जी ने जिस दिन इस पर भी कृपा कर दी तो क्या पता यह मुझसे भी आगे निकल जाये। ऐसा करने से अहं भी नहीं आयेगा कि वह बुरा है और मैं अच्छा हूँ। दास ने तो आँखों से देखा है कि आज से कुछ समय पूर्व कोई शरीर प्रतिदिन शराब का सेवन करता था। आज उस पर इतनी कृपा हो गई कि शहीदां साहिब अमृत वेले एक पलाथी पर श्री आसा जी दी वार का कीर्तन श्रवण करता है। जब गुरु कृपा करता है तो नीच मलिन को भी कंचन बना देता है-

हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार ॥

गुरि पारस मिलिऐ कंचनु होए निरमल जोति अपार ॥ २ ॥

(अंग ४२७)

२६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मैंने आपकी एक कैसेट सुनी है। उसमें आपने माला फेरने का उल्लेख किया है, पर कई लोग कहते हैं कि माला पकड़नी दिखावा होता है।

उत्तर :- वैसे तो हर प्रचारक के अपने-अपने विचार हैं, पर यदि हम अपने गुरु साहिबान का इतिहास पढ़ें तो उन्होंने भी माला का प्रयोग किया है। जालंधर के पास बिलगा गाँव में आज भी श्री गुरु अर्जुन देव जी का सिमरना मौजूद है। बाणी में भी उल्लेख है-

भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥ (अंग ६५६)

यदि माला इसलिए रखी है कि उसकी याद न भूले तो कोई बात नहीं। यदि माला दिखावे के लिए रखी है तो फिर यह पाखण्ड है।

२७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आप की कैसटें सुन कर वाहिगुरु ने बहुत कृपा की है और अब यही प्रयत्न रहता है कि यदि कोई कुछ कहे तो मन करता है कि उसके साथ झगड़ा न

किया जाये पर अभी भी ऐसी अवस्था नहीं बनी कि किसी की बात बर्दाश्त हो जाये। जब भी मुझे कोई कुछ कहता है तो बहुत देर तक मन ईर्ष्या में जलता रहता है। यह मेरे वश में नहीं है। इसलिए आप कोई युक्ति बतायें कि यह बातें मुझे तंग न करें।

उत्तर :- आपको जब भी कोई ऐसी बात तंग करे तो आप अपना नियम बढ़ा कर चौपई साहिब का पाठ करके अरदास किया करो कि सतिगुरु जी, यह बातें मुझे तंग कर रही हैं। आप जी कृपा कीजिए, कोई विधि बनाइए कि सतिगुरु जी यह बातें मेरे अन्दर से निकल जाएं। बार-बार याचना कीजिए-

सोई बिधाता खिनु खिनु जपीऐ ॥

जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीऐ ॥ (अंग १००४)

जो अवगुण को पहचान कर अवगुण खत्म करने के लिए याचना करता है, सतिगुरु उस पर बहुत मेहरबान होते हैं और स्वयं कृपा करते हैं।

सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥ २ ॥ (अंग ४३)

२८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरा एक रिश्तेदार अमृतसर में रहता है। वह कहता है कि मैं प्रतिदिन बाबा दीप सिंघ जी के दर पर जोड़ों की सेवा करता हूँ और सेवा करते समय मेरे मन में लड़कियों बारे गलत विचार आने शुरू हो जाते हैं। मेरी दृष्टि गंदी हो जाती है। बताइये, मैं क्या करूं?

उत्तर :- परस्त्री की ओर कुदृष्टि से देखना सिक्ख धर्म में बिल्कुल ही वर्जित है, भाई गुरदास जी बाणी में लिखते हैं :

देख पराईयां चंगीआं मावां भैणां धीयां जानै॥ (वार २९, भाई गुरदास जी)

पर यह बहुत अफसोस की बात है कि बाबा दीप सिंघ जी के दर पर इतनी उत्तम सेवा करते हुए ऐसे बुरे ख्याल मन में

आते हैं। जिस सेवा ने आपके पापों का नाश करना है, यदि वही सेवा करते हुए ऐसे बुरे ख्याल मन में आते हैं तो कई गुणा पापों की गठरी सिर पर चढ़ जाती है। यदि बाज़ार में किसी लड़की की ओर कुदृष्टि से देखते हैं तो वह भी पाप है, पर गुरु-घर में आकर किसी लड़की की ओर कुदृष्टि से देखना तो महापाप है।

ध्रिगु लोइणि गुर दरस विणु वेखै पर तरणी।

(वार २७, भाई गुरदास जी)

इसलिए यदि ऐसे विचार तंग करते हैं तो निर्मल भाव मन में रखा कीजिए कि बाबा दीप सिंघ जी के दर पर जो बच्चियां आई हैं, यह बाबा दीप सिंघ जी की बेटियां बन कर आई हैं। ऐसे विचार मन में रखने से शायद ऐसे कुविचार मन में आने बंद हो जायें व सेवा में रस आने लगे।

२९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, किसी गुरु के सिक्ख का यह प्रश्न है कि जब मैं गुरुद्वारा साहिब में जोड़ों की सेवा करता हूँ तो सेवा में मेरा मन नहीं लगता, जिसके कारण सेवा में रस नहीं आता। कोई युक्ति बतायें ताकि सेवा में मन लग जाये व रस भी आने लगे।

उत्तर :- जब आप सेवा करें तो मन में एक भावना बनाओ। यदि किसी पुरुष का जोड़ा है तो सोचो कि यह जोड़ा श्री गुरु नानक देव साहिब का जोड़ा है या यह जोड़ा बाबा दीप सिंघ जी का जोड़ा है। यदि किसी स्त्री का जोड़ा हाथ में हो तो यह भावना बनाओ कि यह जोड़ा माता गुजरी जी का जोड़ा है या बीबी भानी जी का जोड़ा है। यदि बच्चों का जोड़ा हाथ में आ जाये तो यह भावना हो कि यह जोड़ा बाबा ज़ोरावर सिंघ जी का जोड़ा है या बाबा फतेह सिंघ जी का जोड़ा है। इस प्रकार एक-एक जोड़े को बड़े प्रेम से वाहिगुरु-वाहिगुरु जपते हुए रूमाल से साफ करो, धीरे-धीरे सेवा में मन लग जायेगा

व रस आना शुरु हो जायेगा। इसके अतिरिक्त यदि आप संगत के जोड़े खानों में रख रहे हैं तो कभी भी जल्दबाज़ी न करें। यदि कोई और शरीर भी जोड़े खानों में रखने की सेवा कर रहे हों तो बकायदा पंक्तिबद्ध होकर सेवा करें। आप ही जोड़े उठा कर खानों में रखने और दूसरे को अवसर न देना, इससे गुरु साहिब जी की प्रसन्नता नहीं मिलती, क्योंकि गुरु साहिब जी की आज्ञा है कि सेवा करते हुए भी सेवा बांट कर करने की भावना होनी चाहिए। जो कई तरीकों से की जा सकती है-

अनिक भांति करि सेवा करीऐ ॥ जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ॥

(अंग ३९१)

३०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, इस समय मैं जिस नौकरी पर काम कर रही हूँ, उसमें रिश्वत लेना एक आम बात है, पर आपकी संगति में मुझे इस बात का अहसास हुआ है कि रिश्वत लेनी या पराया धन लेना महांपाप है। इसलिए मुझे यह डर लगा रहता है कि मुझसे कहीं भूल से भी रिश्वत न ली जाये या मेरे द्वारा किसी का बुरा न हो जाये। कोई युक्ति बताएं।

उत्तर :- यह बहुत अच्छी बात है कि आप इस पक्ष से सचेत हो, क्योंकि आपके मन में गुरु साहिब का निर्मल भय है। भाई गुरदास जी कहते हैं-

हउ तिसु घोलि घुमाइआ पर दरबै नो हथु न लावै।

(वार १२, भाई गुरदास जी)

महापुरुषों का वचन है कि रिश्वत का एक रुपया भी यदि आपकी हक की कमाई में पड़ जाता है तो उस कमाई में से भी बरकत समाप्त हो जाती है। बाबा ईशर सिंघ जी नानकसर वाले वचन करते थे कि यदि आप रिश्वत की कमाई घर में लेकर आते हैं तो आपके बच्चों की भी बुद्धि ठीक नहीं रहेगी।

इसलिए आप जब भी कुर्सी पर बैठा करें, यह अरदास करके बैठा करें कि हे गुरु नानक साहिब! तेरे बिठाने से ही बैठने लगी हूँ, यह कुर्सी तेरी है, यह अफसरी भी तेरी है, मैं भी तेरी हूँ, दफ्तर भी तेरा है। इसलिए जो कार्य आपको अच्छा लगे, वह खुद ही करवा लेना जी। जो कार्य आपको अच्छा न लगे, उसमें स्वयं ही रुकावट डाल देना जी। आप जी ने यह अरदास दिल से करनी है। जब अरदास दिल से करेंगे तो गुरु साहिब जी कृपा करेंगे।

३१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आम देखने में आता है कि जब भी हम पाठ करने बैठते हैं तो सांसारिक कार्यों की ओर ध्यान चला जाता है, जिसके कारण मन पाठ में नहीं लगता। इन विचारों से कैसे छुटकारा हो?

उत्तर :- जब आप पाठ करने बैठो तो एक कॉपी पैन अपने पास रख लिया करो। जब ऐसा कोई विचार उठे या काम याद आ जाये तो उसको कॉपी में लिख लिया करो। ऐसा करने से ऐसे विचार या सांसारिक कार्य दिमाग में से निकल जायेंगे और उनको एक कागज़ सम्भाल लेगा। यह क्रिया मन टिकाने में सहायक होगी। यदि कोई कार्य याद आया तो मन कहेगा कि कागज़ पर लिखा है, बाद में हो जायेगा। ऐसा करने से मन पाठ में जुड़ने लगेगा, क्योंकि पवित्र गुरबाणी का फुरमान है-

अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥ ता तूं दरगह पावहि मानु ॥

(अंग १७६)

३२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई सिक्ख परिवार शनिवार या गुरुवार को सिर धोने का बहुत वहम करते हैं? क्या यह ठीक है?

उत्तर :- सारी मुसीबत सयानों ने ही डाली हुई है। गुरसिक्ख के लिए सारे दिन एक बराबर होते हैं। हम फरीदाबाद कीर्तन पर किसी के घर रात ठहरे हुए थे। रोज़ की तरह अमृत वेला में केशी

स्नान करने के लिए दास ने उस घर में बीबी से कहा कि शैम्पू दे दीजिए, केशी स्नान करना है तो वह गृहिणी कहने लगी, ना-ना भाई साहब, आज शनिवार है। यदि आपने आज केशी स्नान किया तो शनिदेव ने हमसे रुष्ट हो जाना है। आप कृपा करके केशी स्नान न कीजिए। दास चुप कर गया, पर दास ने केशी स्नान कर लिया और गीले केशी स्नान घर के अंदर ही बाँध कर ऊपर छोटी पगड़ी सजा ली ताकि बाहर आने पर पता ही न चले कि केशी स्नान किया है या नहीं। ३-४ स्थानों पर कीर्तन करके रात को जब हम कार्यक्रम से उसी घर में वापस आये तो वह गृहिणी कहने लगी कि भाई साहिब जी, आपने केशी स्नान नहीं किया तो दिन कितना सुंदर बीत गया है। यदि आप केशी स्नान कर लेते तो पता नहीं क्या हो जाना था। दास ने उसको बताया कि मैंने तो केशी स्नान कर लिया था। यह सुन कर वह चकित रह गई और कहने लगी कि आपने हमें सुबह क्यों नहीं बताया? दास ने कहा कि यदि मैं आपको बता देता तो दिन के समय यदि आपके बच्चे को ठोकर भी लग जाती तो आपने यही समझना था कि मैंने केशी स्नान किया है इसलिए ऐसा हुआ है। वह स्त्री कहने लगी कि आपने केशी स्नान किया है, तो भी हमारा दिन बहुत बढ़िया निकला है और कई ऐसे कार्य हुए हैं जो पिछले काफी समय से रुके पड़े थे। दास ने विनती की कि यही वहम आपके मन में से निकालना था कि यदि गुरबाणी घर में है और दिन की शुरुआत गुरबाणी पढ़ कर होती है तो शनि विघ्न नहीं डालता बल्कि सेवा पूछता है। जो गुरबाणी से जुड़े हुए हैं, देवी-देवता भी उनकी सेवा में उपस्थित रहते हैं। गुरसिक्ख के लिए सभी दिन अच्छे हैं। सतिगुरु जी का भी उपदेश है-

सोई दिवसु भला मेरे भाइ ॥ हरि गुण गाइ परम गति पाइ॥

(अंग ३९५)

३३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मुझे नाम स्मरण करने में बहुत

समस्याएं आती हैं, जिसके कारण मन बहुत व्याकुल होता है। मैं क्या करूं?

उत्तर :- जब कोई व्यक्ति सैर करने के लिए जा रहा हो और जब वह समतल रास्ते पर चलता है तो उसके श्वास नहीं फूलते पर जब वही शरीर चढ़ाई चढ़ कर सैर करने के लिए जाता है तो उसके श्वास भी फूलते हैं, वह थक भी जाता है और पैर भी दर्द करते हैं। परमार्थ का रास्ता चढ़ाई का रास्ता है। यह मार्ग इतना सरल नहीं है। मन नीचा रखो, सरबत का भला मांगो। यह नाम स्मरण में परहेज़ है। परहेज़ नहीं छोड़ना, गुरु साहिब सहायक होंगे।

३४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कलियुग का समय चल रहा है। पाँच विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) की आग लगी हुई है। इससे कैसे बचा जाये?

उत्तर :- पंचम पातशाह जी का वचन है कि कोई विरला ही ऐसा बलवान मनुष्य है, जिसने गुरु को मिल कर पाँच शूरवीरों को मार लिया हो। जगत में वही पुरुष महान् है, जिसने इन पांचों को मार कर कतरा-कतरा कर दिया है। इन पाँचों की बड़ी सेना है न ये किसी से डर कर भागते हैं। इनकी सेना मज़बूत व हठी है। केवल उस मनुष्य ने इनको अच्छी तरह मसला है, जो साध-संगत के सहारे रहता है।

जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे॥
जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे॥ १॥
रहाउ॥
वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे॥
कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ
साधसंगति कै झली रे॥ २॥ ३॥ (अंग ४०४)

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी महाराज का भी वचन है कि

जब किसी जंगल में आग लग जाये तो उस जंगल में जितने जीव होते हैं, वे क्या करें? हाँ, जो जीव नदी में छलांग लगा देते हैं, वे तो बच जाते हैं, बाकी आग में जल जाते हैं। यह जो समय चल रहा है, इस समय भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, निंदा, चुगली, ईर्ष्या, द्वेष की आग लगी हुई है। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी महाराज का वचन है-इन विकारों की आग से बचने के लिए एक रास्ता है कि सत्संग रूपी नदी में छलांग लगा कर आप बच जाएंगे। श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने सत्संग रूपी पुल हमारी झोली में डाला है। इसलिए सत्संग की घड़ियां न छोड़ा करो। भाई अड्डन शाह जी का भी वचन है कि कितने भी कार्य आवश्यक हों, वे पीछे डाल दो, पर सत्संग की घड़ियां न छोड़ा करो। श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज गुरबाणी में फुरमान करते हैं :

मेरे माधउ जी सतसंगति मिलै सु तरिआ ॥ (अंग १०)

३५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरु साहिब जी की कृपा से मैं पाँच बाणियां, फिर कुछ समय सुखमनी साहिब, जपुजी साहिब, चौपई साहिब, कुछ समय गुरमंत्र की माला व कुछ समय शब्द की माला करती हूं। मुझे लगता है कि यह सब कुछ मिल कर खिचड़ी बन जाती है। क्या यह सब कुछ जो वाहिगुरु करवा रहा है, यह उचित है या फिर केवल गुरमंत्र का जप ही करना चाहिए।

उत्तर :- दास नमस्कार करता है, आपकी इस प्यारी खिचड़ी को। वैसे तो आप जो कुछ भी प्रेम से कर रहे हैं, जिस ढंग से कर रहे हैं, वह स्वीकार है। जैसे पहले पाँच बाणियां, फिर सुखमनी साहिब जी की बाणी पढ़ ली एवं फिर जपुजी साहिब जी के निरंतर पाठ कर लिए। फिर माला व स्मरण कर लिया। ऐसा करना भी कोई गलत नहीं। कई बार ऐसा करने से मन नहीं उकताता। गुरु साहिब जी आपसे जो सेवा ले रहे हैं,

अरदास कीजिए कि सतिगुरु जी इसी प्रकार कृपा करके सेवा लेते रहें :

करहु क्रिपा गोपाल गोबिंदे अपना नामु जपावहु॥

(अंग ११२०)

बाकी यदि आपको अधिक रस सिमरन में मिलता है, तो पांच बाणियां प्रातः आवश्यक हैं, एवं प्रयत्न कीजिए कि कम से कम एक पाठ सुखमनी साहिब भी हो जाए। बाकी सारा समय आप वाहिगुरु सिमरन कर सकते हैं।

३६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई बार पाठ करते-करते मन बहुत अधीर हो जाता है। कोई युक्ति बताइए, जिससे मन अधीर न हो।

उत्तर :- साधना करते हुए हर समय मन की अवस्था अलग-अलग होती है। किसी समय मन जुड़ जाता है और किसी समय नहीं। एक महापुरुष के घर दास गया था। दास ने खुद अपनी आँखों से देखा। उन्होंने घर में नाम-बंदगी के लिए दस अलग-अलग ढंग रखे हुए थे, जैसे : आसन, गुटका साहिब, बिरागण, झूला, माला, कैसेटें, खड़े होकर, बड़ी बैरागण पाईप की आदि। नाम जपते-जपते जब कभी आपका मन अधीर हो तो ढंग बदलते रहें, पर नाम जपना न छोड़ें।

सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै॥ राम नामु दे सरणि परेकै॥

(अंग १०२९)

३७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मुझे किसी ने बताया है कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी बारे सुप्रीम कोर्ट ने कोई फैसला दिया है, यह फैसला क्या है?

उत्तर :- सुप्रीम कोर्ट के पाँच न्यायधीशों के बैंच ने यह फैसला दिया है कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज जागती ज्योति हैं व दशम पातशाह जी ने इनको बकायदा गुरुगद्दी बख्शश

की है। इसलिए श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के नाम पर संपत्ति खरीदी व बेची जा सकती है।

३८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हम प्रतिदिन कितनी प्रकार के श्वास लेते हैं?

उत्तर :- हर व्यक्ति तीन तरह के श्वास लेता है : १. एक श्वास ऐसे हैं जो व्यर्थ चले जाते हैं। २. दूसरी प्रकार के श्वास जब हम किसी की निंदा, चुगली करते हैं तो उस समय के लिए श्वास केवल व्यर्थ ही नहीं जाते, बल्कि हमारे सिर पर पापों का बोझ रख जाते हैं। ३. तीसरी प्रकार के श्वास, जो हम परमेश्वर का नाम जप कर सफल कर लेते हैं। अब आप स्वयं को परखिये कि आप कौन से श्वास अधिक लेते हैं। यदि पहली दो प्रकार के श्वास अधिक लेते हैं तो अपने नितनेम के अतिरिक्त एक पाठ जपुजी साहिब जी का अधिक करके सतिगुरु जी के चरणों में प्रार्थना किया करो कि हे सतिगुरु! कृपा करो, मुझे तीसरी प्रकार के श्वासों की पंक्ति में ले आओ।

तुम्ह करहु दइआ मेरे साई ॥
ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥ १॥
(अंग ६७३)

३९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब कोई परमार्थ के रास्ते द्वारा ऊपर उठता है तो लोग नतमस्तक होने लगते हैं। जब माथा टेकना शुरु हो जायें तो गुरसिक्ख को क्या करना चाहिए?

उत्तर :- सिक्ख जब भी एक दूसरे से मिलें तो फतेह (वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह) का आदान-प्रदान करें, पर यदि कोई धक्के से माथा टेक दे तो आपको संत अतर सिंघ जी मस्तुआने वाले के जीवन में से एक घटना याद रखनी चाहिए। जब भी बाबा जी के पास बड़ी एकत्रता होने वाली होती, उस रात्रि बाबा जी कोई ५०-१०० बार श्री गुरु ग्रन्थ

साहिब जी महाराज के आगे नतमस्तक होते थे। किसी ने पूछ लिया, बाबा जी! क्या कर रहे हैं? बाबा जी कहने लगे कि मेरे मना करने के बावजूद भी लोग हमें माथा टेक जाते हैं और हम वही नमस्कार गुरु साहिब जी को कर रहे हैं। अब गुरु साहिब जाने या वह व्यक्ति जाने जिसने माथा टेका है। पवित्र गुरबाणी का फुरमान है :

तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥

कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥ ४ ॥

(अंग ३८३)

४०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मैं बहुत प्रयत्न करती हूँ कि मेरी सारी बुरी आदतें खत्म हो जाएं, पर फिर भी कभी-कभी मन में गलत विचार जाग उठते हैं। बताइये, मैं क्या करूं?

उत्तर :- सत्संग करने से यह पता चल जाता है कि हमारा मन गलत दिशा में जा रहा है या सही दिशा में। कई लोग तो ऐसे होते हैं, जिनको यह भी पता नहीं होता कि वे गलती कर रहे हैं। एक बार श्री गुरु नानक देव जी महाराज को सिद्धों ने पूछा था कि मन कैसे वश में आये? उन सिद्धों को सतिगुरु जी ने प्रेरणा दी थी कि मन जहां से मुड़ता है, मोड़ लो भावार्थ कि कोई कार्य बुरा मन में आया है पर किया नहीं, प्रयत्न कीजिए कि वहीं से मोड़ लो। कहीं शरीर करके कर्म न बन जाये। एक दिन आयेगा, यह मोड़ इतना छोटा हो जायेगा कि आप कोई बुरा कार्य करने से पहले ही रुक जाओगे। सतिगुरु जी भी गुरबाणी में फुरमान करते हैं :

करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥

(अंग ४७३)

४१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कभी कोई बड़ी परेशानी आ जाये तो मन बहुत सोच में पड़ जाता है। इतने विचार आ जाते

हैं कि कुछ और समझ में ही नहीं पड़ता।

उत्तर :- जब मन अधिक तरफ दौड़ रहा हो और आप पूरी तरह सोच में पड़ जाओ तो आप एक काम कर सकते हैं। कुछ समय के लिए अपने श्वास रोक लीजिए जितनी देर तक रोक सकते हैं और अन्दर वाहिगुरु वाहिगुरु रस से जपें। ऐसा करने से आप कुछ नहीं सोच सकोगे। ऐसा आप कुछ क्षण कीजिए। आपके सारे विचार समाप्त हो जायेंगे। पवित्र गुरबाणी का वचन है:

हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ (अंग ९२६)

४२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, श्री गुरु नानक देव जी महाराज के जन्म दिवस या अन्य गुरुपर्वों पर कितने पाठ करने चाहिएँ?

उत्तर :- जन्म दिन शरीरों के होते हैं, पर गुरु साहिब जन्म नहीं लेते, वे अवतार लेते हैं। उनका प्रकाश होता है। बाबा नंद सिंघ जी भी वचन करते थे, भूल कर भी गुरु साहिबान के प्रकाश दिवस को जन्म दिवस नहीं कहना चाहिए। दूसरी विनती यह है कि जिस दिन गुरु साहिब जी का प्रकाशोत्सव हो या कोई गुरुपर्व हो तो उस दिन बाहरी भक्ति के साथ-साथ आंतरिक भक्ति भी किया करो। बाहरी भक्ति का अर्थ है : रोशनी करनी, आतिशबाज़ी चलानी, लंगर लगाने आदि। आंतरिक भक्ति होती है कि अपने नितनेम के अतिरिक्त गुरु साहिबान के प्रकाश दिवस के संबंध में या गुरुपर्व के संबंध में अधिक नियम करना। ऐसा करने से गुरुपर्व मनाने सफल हो जाते हैं। भाई गुरदास जी की भी यह पंक्ति हमें शिक्षा देती है :-

कुरबाणी तिना गुरसिखां भाइ भगति गुरपुरब करंदे ॥

(वार १२, भाई गुरदास जी)

४३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, संगत करने वालों पर दुःख अधिक क्यों आते हैं?

उत्तर :- ऐसी कोई बात नहीं। जब कोई पुलिस कर्मचारी हो,

न्यायधीश हो या वकील हो, यदि वह कोई कानून तोड़ता है तो उसको अधिक सज़ा मिलती है, क्योंकि उसको कानून की जानकारी है। आप संगत करते हैं, जब आप कोई गलती करोगे तो दण्ड अधिक है। जिसको ज्ञान नहीं, वह गलती करे तो दण्ड कम है। संगत करते-करते गलतियां छोड़ दें और जो सत्संग में सुनें, उस पर अमल करें तो फिर सुख पीछे लगे फिरते हैं। यह सतिगुरु जी का अटल उपदेश है-

गावीऐ सुणीऐ मन रखीऐ भाउ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ॥ (अंग २)

४४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, शरण में रहना किसको कहते हैं?

उत्तर :- शरण में रहने का अर्थ है, गुरु साहिब के समक्ष अपने आप को समर्पित कर देना। समर्पण कैसे हो? अपना आंतरिक अहं त्याग कर व निमाने बन कर गुरु साहिब जी के चरणों में ढहना। अमृत छकें, अमृत वेला संभालें व अमृतमयी बाणी से जुड़े रहें। यदि दुःख सुख आ जाये तो और बंधनों में नहीं पड़ना चाहिए। यदि दुःख आये तो नियम बढ़ा कर सतिगुरु जी के चरणों में विनती करें। यदि सुख आये तो नियम बढ़ा कर धन्यवाद करें। यह है शरण में रहना। गुरु साहिब जी ने ऐसा फुरमान किया है-

सरणि पए प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु॥
सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल॥ (अंग ४८)

४५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरुद्वारे जाकर सेवा करने की युक्ति बताएं, जिससे अधिक से अधिक महात्मय हमारी झोली में पड़ सके।

उत्तर :- सेवा दो प्रकार की होती है। एक सेवा ऐसी होती है कि सेवा करते-करते हम सांसारिक बातें भी करते हैं व निंदा भी

करते रहते हैं। ऐसी सेवा का महात्मय बहुत कम ही मिलता है, पर दूसरी तरफ है कि पूरे चाव से सेवा करनी व सेवा करते-करते साथ सिमरन भी करना या गुरबाणी पढ़नी। बाबा नंद सिंघ जी का वचन है कि जो सेवा करते नाम बाणी साथ चल रही है तो इस सेवा का महात्मय १००% मिलता है, क्योंकि इस सेवा को नाम का इक्का लग गया है, तीसरे पातशाह जी का वचन है। इस प्रकार चाव से की सेवा के सदके गुरु को बुरे से बुरा कर्म भी काटना पड़ता है।

सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मंने ॥

जा सतिगुरु का मनु मंनिआ ता पाप कसंमल भंने ॥

(अंग ३१४)

४६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई बार देखने में आता है कि कई लोग चाहते हैं कि गुरुद्वारा साहिब में खुद ही सेवा किये जाएं और दूसरे को सेवा का अवसर ही न दें। ऐसा ही देखने में आता है कि कई बार जोड़े घर में लोग सेवा एक दूसरे से खींचते हैं। क्या ऐसी सेवा स्वीकार है?

उत्तर :- नहीं भाई! यह बात ठीक नहीं। सिक्ख ने सेवा छीननी नहीं, बल्कि निमाणा बनकर सेवा करनी है। यदि आपका मन उस सेवा को कर रहा है जहां पहले कोई और सेवादार कर रहा हो तो आप नम्रता सहित उस सेवादार से मांग कर सेवा ले लो। ऐसे सेवा करने से गुरु साहिब की प्रसन्नता भी प्राप्त होती है और किसी का दिल भी नहीं दुःखता। श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने हमें बांट कर खाने का उपदेश दिया है। इस प्रकार सतिगुरु जी द्वारा दर्शाये मार्ग के अनुसार बांट कर सेवा करनी चाहिए। यदि हम जोड़े-घर में सेवा कर रहे हैं या कोई अन्य सेवा कर रहे हैं जहां सेवा करने वाली संगत बहुत अधिक है तो बकायदा पंक्तिबद्ध होकर व संयम से सेवा की जाये। अन्य सेवादारों को नज़रअन्दाज करके खुद ही

आगे-आगे होकर सेवा करते रहने से गुरु साहिब की प्रसन्नता नहीं मिलती। गुरु घर में अनेक प्रकार की सेवाएं की जा सकती हैं और कई बार गुरु घर की सेवा ढूंढनी भी पड़ती है। जैसे विष्ठा साफ करनी, लिफाफों की सेवा, पोंछा लगाना, दरवाजे-खिड़कियां, जाले साफ करने, बाथरूम भलीभांति धोने इत्यादि। पर हमने हर सेवा को निमाणे बन कर करना है। गुरबाणी हमें सुमति देती है :

ऐसी सेवकु सेवा करै ॥

जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥ (अंग ६६१)

४७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मैं जब भी पाठ करना आरम्भ करती हूँ तो मुझे पता नहीं चलता मैंने पाठ कब आरम्भ किया और कब समाप्ति हो गई। फिर सोचती हूँ कि इस प्रकार पाठ करने का क्या लाभ है? इससे तो अच्छा है कि मैं पाठ करूँ ही ना।

उत्तर :- यह मनुष्य चोला हमें कई योनियों के पश्चात् मिला है, जिस कारण हमारे पिछले कई जन्मों के पाप-पुण्य साथ ही चल रहे हैं। जब हम पाठ करने बैठते हैं तो गुरबाणी सबसे पहले हमारे पूर्व के पाप कर्मों को काटती है, जिस कारण हमारा मन गुरबाणी में नहीं लगता, पर सिक्ख ने कभी भी बाणी पढ़नी नहीं छोड़नी, चाहे मन लगे या न लगे। गुरबाणी पढ़ते-पढ़ते जैसे-जैसे पुण्यों की तह ऊँची होती जाती है तो मन जुड़ना आरम्भ हो जाता है। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि आग का कार्य है जलाना। चाहे आग में कोई वस्तु सीधी डाल दो या उल्टी, आग ने जला ही देना है। इसी प्रकार गुरबाणी का कार्य है, पापों को जलाना। चाहे मन जुड़े न जुड़े पर गुरबाणी पढ़नी नहीं छोड़नी। भाई वीर सिंघ जी का वचन है कि गुरबाणी जहां धुर से आई है, वहां गुरु साहिब के मुख से होकर आई है। इसलिए इस अमृतबाणी

ने हमारे पाप कर्मों को काट कर अपने आप हमारा मन गुरु के चरणों में जोड़ देना है। गुरबाणी का उपदेश है-

गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥
सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥ १ ॥ (अंग ६६५)

४८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमें कैसे पता चले कि हमारे पाप समाप्त हो रहे हैं?

उत्तर :- एक है गुरबाणी पढ़ते हुए मन का ऊबना भावार्थ गुरबाणी पढ़ते हुए मन बार-बार घड़ी की ओर जाता है कि कब पाठ समाप्त होगा और दूसरा है गुरबाणी पढ़ते हुए मन का जुड़ना। यदि सुखमनी साहिब जी का पाठ करते हुए आपका मन रस में भीग जाए और अन्तर्मन से अरदास निकले कि सतिगुरु जी! आप जी का शुक्र है कि कृपा करके एक पाठ की सेवा ली है और कृपा कीजिए। एक और पाठ की सेवा लीजिए।

मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी ॥
अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा
तेरी बाणी ॥ १॥ (अंग ७४९)

जब ऐसी अवस्था बन जाए तो समझ लेना कि पाप समाप्त हो रहे हैं।

४९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, एक चौकड़ी पर पाठ करना क्या होता है?

उत्तर :- एक चौकड़ी पर पाठ करने का अर्थ यह है कि पाठ करो चाहे बैठ कर और यदि थकावट महसूस हो तो उस स्थान पर खड़े होकर भी पाठ सिमरन कर सकते हो। चल-फिर कर भी कर सकते हो। एक चौकड़ी का अर्थ है कि पाठ सिमरन करते हुए फोन, या काम-काज या बातें नहीं करनीं। पंचम पातशाह

जी का वचन है-

मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥
गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥१॥
(अंग ४५)

५०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कलयुग के क्या लक्षण हैं?

उत्तर :- संगत में बैठे मन अधीर हो जाये कि उठो चलें, भावार्थ यह कि संगत करते हुए या पाठ करते हुए विघन पड़ने आरम्भ हो जाएं, यह भी कलयुग के लक्षण हैं।

५१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, तप किसे कहते हैं?

उत्तर :- गुरबाणी अनुसार सिक्खी में निमाणे व निताणे होकर गुरु की श्रद्धा भाव से सेवा करना बड़ा भारी तप है, जैसे गुरबाणी में फुरमान है-

गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु ॥ (अंग ४२३)

इसके अतिरिक्त संत बाबा अतर सिंघ जी मस्तुआणे वाले वचन करते थे कि किसी का कुवचन सहन करना भी बहुत बड़ा तप है।

५२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जाने-अनजाने मेरे मुँह से कोई अहंयुक्त बात निकल जाए तो तुरंत इम्तिहान शुरू हो जाते हैं, पर मैंने देखा है कि जो लोग ईश्वर पर विश्वास नहीं रखते, वे चाहे जितनी मर्जी अहंयुक्त बात कर लें, उन पर कोई इम्तिहान नहीं पड़ता। इसका क्या कारण है?

उत्तर :- नाम जपने वाले की संगत करने से ईश्वर पर विश्वास होता है, जिस कारण अपने अवगुणों के प्रति मन जागना आरम्भ हो जाता है। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि जिसको पता चल जाए कि मैं अवगुण कर रहा हूँ तो फिर वह अवगुण छोड़ने की ओर चल पड़ता है, पर जिनके भाग्य में संगत नहीं

लिखी होती, वे अपना जीवन निष्फल कर लेते हैं और उनको पता ही नहीं चल पाता कि वे अवगुण किये जा रहे हैं। यदि आपको पता चल गया है कि मुझे अहं के कारण इम्तिहान पड़ रहे हैं तो नियम बड़ा कर सतिगुरु जी के चरणों में अरदास करो कि हे सतिगुरु जी! कृपा करके इस अहं से छुटकारा दिलाइये। बाकी जिनका परमात्मा में विश्वास ही नहीं, उनका तो अभी जन्म भी नहीं हुआ, इम्तिहान उनको भी पड़ते हैं, पर उनको इम्तिहान बारे ज्ञान ही नहीं, आपको ज्ञान हो गया है।

५३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरे मन की अभिलाषा है कि मैं श्री हरिमंदिर साहिब जी के प्रतिदिन दर्शन करुं, पर मैं विदेश में रहने के कारण ऐसा नहीं कर सकती। कोई युक्ति बताएं ताकि मेरी भी श्री गुरु रामदास जी महाराज के द्वार पर हाजिरी दर्ज हो जाया करे।

उत्तर :- विदेश में होने के कारण किसी भी गुरु-स्थान पर शारीरिक रूप से यदि आप नहीं जा सकते तो प्रेम से सुरति से लगाई हाजरी भी स्वीकार है। सुरति में बहुत बल है। मौसम बदलने के कारण जिन पक्षियों को अपना देश त्यागना पड़ता है, पर घोंसले में अपने जो बच्चे हैं, उनको सुरति से खुराक पहुंचाते हैं।

ऊडै ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥

तिन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥

(अंग ४९५)

आप बाणी पढ़ते, सिमरन करते, सुरति श्री गुरु रामदास जी महाराज के द्वार पर ले जा कर सुरति की हाजरी दर्ज करवा दिया करो। चौथे पातशाह जी का भी वचन है-

जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु सहाई ॥ (अंग ७३३)

५४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कभी-कभी नाम जपते-जपते बहुत रस आता है और कभी बहुत समय कोई रस नहीं आता, ऐसा क्यों? और जब रस न आये तो क्या करें?

उत्तर :- नाम जपते-जपते अवस्था में कई तरह के उतार-चढ़ाव आते हैं। गुरबाणी में लिखा है-

कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाइ पइआले ॥

(अंग ८७६)

जब रस आये तो समझ लो कि आज बाबा जी की कृपा हुई। उस समय नियम बढ़ा कर शुक्रिया किया करो, पर जब बैटरी डाऊन हो जाये भावार्थ कि जब रस न बने तो रंगे हुए महापुरुषों की संगत करो।

धनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ
मिलि जन नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥

(अंग १०)

संगत कई प्रकार से मिल सकती है : शारीरिक रूप से महापुरुषों के चरणों में जाकर भी और रंगे हुए गुरसिक्खों का जीवन पढ़ कर या श्रवण करके भी। गुरसिक्खों का जीवन पढ़ कर बुझी हुई बैटरियां अपने आप चार्ज हो जाती हैं।

५५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हम अमेरिका में रहते हैं। यहां केवल रविवार को ही दीवान लगते हैं। फिर हम प्रतिदिन कैसे संगत करें?

उत्तर :- संगत कई ढंगों से हो सकती है। जैसे गुरुद्वारे में जाकर कीर्तन श्रवण करना या सेवा करनी। इसके अतिरिक्त कुछ शरीरों से मिल कर वाहिगुरु वाहिगुरु जपो, गुरु इतिहास पढ़ो, टेपें सुनो, धार्मिक वी.सी.डी. देखो और ऐसा करते हुए भावना बनाओ कि मैं संगत में बैठी हूँ। इसको भी संगत करनी कहते हैं। जैसे भाई गुरदास जी लिखते हैं-

इकु सिखु दुइ साधसंग पंजी परमेसर।(वार १३, भाई गुरदास जी)

५६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आप कहते हैं कि अढ़ाई घण्टे का नियम आवश्यक है, पर मेरा कार्य दूर होने के कारण मुझे प्रतिदिन दो-तीन घण्टे यांत्रा में ही बिताने पड़ते हैं, जिसके कारण मुझे इतना समय नहीं मिल पाता कि मैं अढ़ाई घण्टे का नियम पूरा कर सकूँ।

उत्तर :- आप अपनी यात्रा को भी भक्ति बना लें। आपको जितना समय घर में मिल जाए, उतने समय में अपना नियम कर लो व बाकी का नितनेम अपनी यात्रा में कर लो। आप यदि कार स्वयं चला रहे हो तो शब्दों की टेप लगा सकते हो, पर यदि आप बस या रेल में यात्रा कर रहे हैं तो माला से सिमरन कर सकते हैं या जो बाणी आपको कंठस्थ है, वह कर सकते हैं। वर्तमान समय मीडिया का युग है। इसलिए आप यात्रा के दौरान अपने मोबाईल पर भी शब्द या पाठ श्रवण कर सकते हैं। ऐसा करके आप अपनी यात्रा में अढ़ाई घण्टे से भी अधिक समय प्रभु चरणों में लगा सकते हैं। सतिगुरु जी का भी वचन है-

ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ॥

मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥ १॥ (अंग ३८६)

५७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरु नानक साहिब कैसे प्रसन्न होते हैं?

उत्तर :- जिसने संगत को प्रसन्न कर लिया, उसने गुरु नानक को भी प्रसन्न कर लिया। श्री गुरु रामदास जी महाराज के दर्शनों को अमृतसर में बाहर से काफी संगत आई थी और लंगर की सारी लकड़ी गीली हो गई थी। भाई आदम जी ने अपने घर के दरवाजे, चौगाठें, खिड़कियां तक उखाड़ कर कीर्तन कर रही संगत के लिए लकड़ियां जला दीं ताकि संगत को ठंड न

लगे। भाई आदम जी की इस सेवा से अत्यन्त प्रसन्न होकर श्री गुरु रामदास जी महाराज कहने लगे-भाई आदम किस मनोरथ से यह सेवा की है ? जब मनोरथ बताया, सच्चे पातशाह घर में औलाद नहीं है तो श्री गुरु रामदास जी ने वचन किया! तूने संगत को प्रसन्न किया है और जिस पर संगत प्रसन्न, उस पर गुरु प्रसन्न। इतनी मौज में महाराज जी आ गए व वचन किया कि चाहे तेरे कर्मों में सात जन्मों तक औलाद नहीं लिखी पर तूने संगत की प्रसन्नता प्राप्त की है, इसलिए हम अपना चौथा पुत्र तुम्हारे घर भेजते हैं और इतनी कृपा की कि उस बच्चे का नाम भी पहले रखते हुए कहा कि भाई आदम, उसका नाम भाई भगतू रखना और वह बड़ा करनी कमाई वाला सिक्ख होगा। ऐसे ही यह प्रयत्न किया करो कि किसी प्रकार संगत की प्रसन्नता प्राप्त हो सके। यदि आपके पास कोई गुण है तो वह भी संगत के लिए अर्पण किया करो। संगत की प्रसन्नता प्राप्त करो गुरु नानक साहिब आप पर स्वयं प्रसन्न हो जायेंगे, क्योंकि-

गुरसिखां अंदरि सतिगुरू वरतै जो सिखां नो लोचै से गुर खुसी आवै ॥ (अंग ३१७)

५८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरी एक सहेली ने मुझे फोन पर कहा है कि मेरी अगले महीने अदालत में तारीख है और जज ने कहा है कि तारीख से पहले-पहले आप दोनों पक्ष इकट्ठे बैठ कर समझौते का प्रयत्न करो, पर दूसरे पक्ष के व्यक्ति बहुत अभिमानी हैं और किसी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहते। कोई युक्ति बताओ ताकि वे समझौता कर लें।

उत्तर :- आप गुरबाणी का आसरा लेते हुए घर में ही सुखमनी साहिब जी की सैंची लगा लें और सारा परिवार मिल कर प्रतिदिन पाँच पाठ सुखमनी साहिब जी के करो पर जिस दिन आपने दूसरे पक्ष से मिलने के लिए जाना है, उस दिन गुरु

साहिब को साथ ले जाएं। गुरु साहिब साथ कैसे जाते हैं? जिस दिन आपने तारीख निश्चित की है, उस दिन अमृत वेला में उठ कर केशी स्नान करके, देग बना कर, पाँच पाठ सुखमनी साहिब जी के करके व गले में पल्ला डाल कर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के आगे अरदास करो कि बाबा जी! आज दूसरे पक्ष के साथ समझौते के लिए मिलने जाना है व आप दूसरे पक्ष के हृदय में विराज कर आप ही फैसला करवाएं। जाने से पहले घर के किसी सदस्य की ड्यूटी लगा दें कि वह आपके पीछे सुखमनी साहिब जी का पाठ जारी रखे। जब आप इस प्रकार करेंगे तो आप बाद में पहुंचेंगे और आपका कलगीधर पिता आप से पहले पहुंचा होगा। इस तरह गुरु को रिझाने से वह कार्य भी हो जाते हैं जो व्यक्ति कभी सोच भी नहीं सकता। गुर वाक्य है-

सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई ॥
(अंग ५८८)

५९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जिसके पास नम्रता होती है, उसकी क्या निशानी है?

उत्तर :- जिसके पास नम्रता होती है, उसकी निशानी है कि उस में सहज भाव होगा। उसके अन्दर सम्पूर्ण शान्ति, बोल-चाल, पहरावा, हर बात में निमाणापन होगा।

६०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मैं अधिकतर भूल जाती हूँ कि अरदास में क्या कहना है?

उत्तर :- हमारी अरदास में यह बोल आने बहुत आवश्यक हैं। वे ये हैं कि जब अरदास करते समय सुरति जुड़े तो यह माँगा करो कि गुरु नानक साहिब! मैं आप जी की उंगली पकड़नी भूल जाती हूँ, पर आप जी मेरी निमाणी की बाँह पकड़नी न भूलना। मैं आप को अपने दिल के आसन पर बिठाना भूल जाती हूँ, पर आप मेरे साथ जाना न भूलना। जब भी आपको

याद आये, इस प्रकार गुरबाणी द्वारा कह दिया करो।

तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥

भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥ १॥

(अंग ५१)

६१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरे सिर पर मेरे पति का साया नहीं, जिसके कारण बच्चे मनमानी कर रहे हैं। संसार में विचरण करते हुए कभी समस्या आ जाती है तो मन उदास हो जाता है। क्या करुं?

उत्तर :- जब इस प्रकार की कोई समस्या आये तो आप इस रुदन को वैराग्य में बदल दिया करो। जब भी समस्या आये, गुरु साहिब जी के चरणों से जुड़ कर कहा करो, बाबा जी! संसार में सब प्रीतें झूठीं, आप मेरे साथी बन जायें, मेरे पिता बन जायें, मेरे जीवन के मालिक बन जायें, मेरे मित्र बन जायें, मुझे कभी अकेलापन महसूस न होने दें। कृपा करें व मेरा साथ दें। वैराग्य में आकर, जो मन में है, श्री गुरु नानक देव जी महाराज के चरणों में रख दिया करो। एक तो रुदन वैराग्य बन जायेगा और दूसरा आपके कई पाप धुल जायेंगे।

तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥

तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ (अंग १८१)

६२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई सिक्ख परिवारों में देखा है कि कोई जरुरी काम जा रहा है और यदि कोई बिल्ली रास्ता काट जाये या कोई छींक मार दे तो वे बहुत वहम करते हैं कि अभी रुक जाएं आदि। क्या यह वहम करने ठीक हैं?

उत्तर :- श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में वहम-भ्रम के लिए कोई स्थान नहीं है। नाम जपने वाले अपने सारे वहम-भ्रम श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज के चरणों में रखते हैं। वैसे जब भी कभी घर से किसी अन्य स्थान पर जाने लगो तो पाँच पउड़ियां जपु

जी साहिब जी की पढ़ कर अरदास किया करो कि बाबा जी, जरुरी काम के लिए बाहर जा रहे हैं, कृपा करो, साथ चलो। अब जब वह (गुरु) आपके संग चल रहा है तो कोई डर या वहम-भ्रम होना ही नहीं चाहिए। गुरबाणी में भी दर्ज है-

सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै॥

(अंग ४०१)

६३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमने नई कार ली है। कई लोग सलाह देते हैं कि कार के पीछे काले परांदे लटका लो, बुरी नज़र नहीं लगेगी। क्या गुरमति के अनुसार ऐसा करना उचित है?

उत्तर :- परांदी कुछ नहीं कर सकती। जब भी कोई वस्तु लो, आप ही कुछ नियम का बैन लगा दिया करें। नियम पूरा करके फिर ली हुई कार का प्रयोग करें। यदि आप पहले नियम के बैन लगाना भूल गये हैं तो अब भी कार के धन्यवाद स्वरूप कुछ भी १०१ या ५१ पाठ जपुजी साहिब जी के कर लें। जब भी आप कार चलाएं, हमेशा शब्द गुरबाणी ही सुनें। कार स्टार्ट करने से पहले जपुजी साहिब की पहली पउड़ी पढ़ कर स्टार्ट किया करें। जब आप इस प्रकार करेंगे तो गुरबाणी की बाड़ के कारण बुरी नज़र निकट नहीं आएगी। गुरबाणी में भी फुरमान है-

ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥

चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥ १॥ (अंग ८१९)

६४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, क्या हमें गुरुद्वारा साहिब प्रतिदिन दर्शन करने जाना चाहिए?

उत्तर :- गुरुद्वारे जाने का अर्थ है स्कूल जाना। स्कूल जा कर ही समझ पड़ेगी कि गुरु के चरणों से कैसे जुड़ना है। इसलिए गुरबाणी का भी यही फैसला है-

गुरु दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ (अंग ७३०)

६५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरमति अनुसार कौन-सा यज्ञ स्वीकार है?

उत्तर :- वैसे तो यज्ञ कई प्रकार के होते हैं, पर सबसे बड़ा यज्ञ है-दुनिया के झंझटों से हट कर अपने पर नियम का बैन लगाना, जप-तप करना, बांट कर खाना, निर्धन की सहायता करनी, हर बुरे कार्य को गुरु के चरणों में रख कर उससे बचाने की अरदास करनी एवं गुरु जी के बताये हुए मार्ग पर चलना। प्रभु के गुण सुनने व गाने-

कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम॥

हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम॥ (अंग ५४६)

६६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरी पड़ोसन बड़ी श्रद्धा रखती है। कोई भी वस्तु खरीद कर लाये, किसी को तब तक प्रयोग नहीं करने देती जब तक श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज के कमरे में न रखे, पर हमारे घर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश नहीं है, बताइये मैं क्या करूं?

उत्तर :- एक तो धन्य है वह परिवार, जिसमें ऐसी स्त्री रहती है। बहुत सारे गुरसिक्ख हैं जो घर में कोई वस्तु खरीद कर लायें तो वे पहले गुरु साहिब जी के कमरे में रख कर और पांच पउड़ियां पढ़ कर आज्ञा लेते हैं कि बाबा जी! पहले इस पर अपनी कृपादृष्टि डालो, फिर बाद में कोई वस्तु प्रयोग करते हैं। यदि आपके घर में गुरु साहिब जी का प्रकाश नहीं है तो नई वस्तु का प्रयोग करने से पहले आप भावना बना कर पांच पउड़ियां जपु जी साहिब की करके नई वस्तु की हाजरी दर्ज करवा कर उसका प्रयोग कर लिया करो।

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर॥ गुरु बिना मै नाही होर॥

गुर की टेक रहहु दिनु राति॥ जा की कोई न मेटै दाति॥ १॥

(अंग ८६४)

६७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरे घर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज का पावन स्वरूप नहीं है और न ही अभी मैं रख सकती हूँ, पर कोई साधना करने वाला स्थान बनाना चाहती हूँ, कोई राय दें।

उत्तर :- आपके पास साधना करने का एक निश्चित स्थान होना चाहिए। कमरे को विभाजित करके या आप पूरा कमरा प्रयोग कर सकते हैं तो बहुत ही उत्तम है नहीं तो जिस स्थान पर भी जप-तप कर सकें, वह बनवा लें। अपने बैठने के स्थान के ठीक सामने सैंचियां भी रख सकते हैं। सरब लोह के शस्त्र का भी आसन लगा सकते हैं। इस प्रकार यदि एक स्थान पर बैठ कर भक्ति करेंगे तो मन अधिक जुड़ेगा। यदि आप प्रतिदिन इस प्रकार करते हैं तो एक दिन ऐसा आ सकता है कि आप लेट हो जायें तो गुरु साहिब आपकी आसन पर प्रतीक्षा आरम्भ कर देते हैं, मेरा प्यारा आज लेट हो गया है।

६८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग सुखमनी साहिब जी का पाठ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज से करते हैं। क्या यह ठीक है?

उत्तर :- श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज से अखण्ड पाठ व सहज पाठ के अतिरिक्त, इस प्रकार श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज में से न पढ़ा जाये तो ठीक है। आप पाठ गुरु साहिब जी के समक्ष बैठ कर गुटका साहिब या सैंची साहिब से पढ़ें तो आप जी को दुगुना महात्मय मिलेगा-एक, पाठ करने का व दूसरा, पाठ सतिगुरु जी को सुनाने का।

६९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के रुमाले कितने दिनों बाद बदलने चाहिएं?

उत्तर :- श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के वस्त्रों व रुमालों का भी उसी प्रकार ध्यान रखा जाये जिस प्रकार हम अपने वस्त्रों का रखते

हैं। दशम पातशाह जी ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज को प्रगट गुरां की देह कह कर बड़ाई की है। इसलिए यदि हो सके तो प्रतिदिन रुमाला साहिब बदलने चाहिएं। यदि हम भावना से सेवा करेंगे तो ही गुरु साहिब का अधिक से अधिक सत्कार हो सकेगा। बाबा नंद सिंघ जी का वचन है जितना तू श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज का सत्कार करेगा, संसार तेरा दस गुणा अधिक सत्कार करेगा।

जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥ २॥ (अंग ४५०)

७०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मैंने अमेरिका में क्रैच खोली हुई है (भावार्थ अमेरिका में जिस घर में दम्पत्ति नौकरी करें तो बच्चे संभालने के लिए कईयों का काम है। घरों में ८-१०-१२ छोटे बच्चे संभालने उसको क्रैच कहते हैं।) चाहे मैं अपने लिए शब्दों की कैसेट लगाए रखती हूँ पर मुझे बच्चों के लिए टी.वी. भी लगाना पड़ता है व कार्य भी करना पड़ता है। यदि कोई फोन आ जाये तो वह भी सुनती हूँ। इसलिए जो शब्दों की कैसेट चल रही होती है, वह हर समय नहीं सुनी जाती। ऐसा करने से कोई अवज्ञा तो नहीं हो रही?

उत्तर :- शब्दों की कैसेट से आपके घर का माहौल भक्तिमय ही बन रहा है और आपके कानों में भी बाणी की धुनें पड़ती रहती हैं। यदि आपके घर टी.वी. काम के कारण लगा हुआ है और केवल बच्चों के चैनल ही चल रहे हैं तो कोई हर्ज़ नहीं, पर कोशिश कीजिए कि बच्चों को धार्मिक चैनल भी दिखाये जाएं ताकि वे बचपन से ही गुरबाणी से जुड़ सकें। इसके अतिरिक्त आजकल धार्मिक ऐनीमेशन वी.सी.डीज़ भी बाज़ार से मिल जाती हैं जो कि बच्चों को दिखाई जाएं ताकि वे अपने गौरवमयी इतिहास से अवगत हो सकें।

७१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरी सहेली ने मुझसे ज़िक्र किया है कि उसके घर का माहौल अधिक सुखमय नहीं, जिसके

कारण उसे डर लगा रहता है कि वह कहीं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज से न टूट जाये या सतिगुरु जी के सत्कार में कोई भूल न हो जाये। उसको क्या करना चाहिए?

उत्तर :- यह जो आपकी सहेली का डर है, यह बहुत अच्छी बात है। इसको निर्मल भय कहते हैं। यह उसे टूटने नहीं देगा, पर इसके साथ ही अपनी सहेली को कहो कि एक काम और भी किया करे। वह यह कि वह अरदास करे कि बाबा जी! मेरी प्रीत तेरे चरणों में इसी प्रकार आखरी श्वासों तक निभ जाये।

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥

(अंग ५३४)

७२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, खाना बनाते समय मेरा यह प्रयत्न होता है कि सिमरण करूं ताकि खाने में वाहिगुरु के नाम की बरकत पड़ जाये और खाना पवित्र हो जाये, पर मुझे याद नहीं रहता।

उत्तर :- पंजाबी की आम कहावत है, 'जैसा अन्न वैसा मन।' गुरबाणी में बड़ी तासीर है और इस में तत्वों को बदलने का सामर्थ्य भी है। इसीलिए यह मिट्टी को चरण धूलि बनाती है, अन्न को प्रसाद बनाती है व पानी को अमृत बनाती है। कोशिश कीजिए कि बाणी पढ़ते या सिमरन करते सिर ढंक कर खाना तैयार किया जाये, पर यदि सिमरन करना याद नहीं रहता तो आप अपनी रसोई में टेप रिकार्डर रख लें। जब भी खाना बनाने लगें, गुरबाणी की कैसेट लगा दिया करो। इस प्रकार युक्ति से तैयार किया गया खाना आपके बच्चों की दुर्मति को भी बदल देगा।

तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥

(अंग ६४८)

७३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, अभी मेरी यह अवस्था नहीं कि श्वास-श्वास सिमरन चल पड़े। इसलिए रसना द्वारा मैं माला

व वाहिगुरु- वाहिगुरु जपने का प्रयत्न करती हूँ, पर किसी ने मुझे ताना मारा है कि तू दिखावा कर रही है। क्या मैं ठीक कर रही हूँ।

उत्तर :- वह दिखावा भी स्वीकार है जो गुरु से जोड़ दे। आप किसी तोड़ने वाले की बात पर गौर न किया करें व तोड़ने वाले की बात वहीं छोड़ दिया करें। चौथे पातशाह जी का वचन है-

साकत सिउ मन मेलु न करीअहु जिनि हरि हरि नामु बिसारे ॥
साकत बचन बिछूआ जिउ डसीऐ तजि साकत परै परारे ॥ ५ ॥

(अंग ९८१)

आप जो कर रहे हैं, ठीक है। यदि यह दिखावा है तो भी आपको गुरु से जोड़ रहा है।

७४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग अपने माता-पिता की सेवा तन-मन से नहीं करते व बहुत बोझ महसूस करते हैं। ऐसे लोगों को कैसे समझाया जाये?

उत्तर :- माता-पिता की सेवा बड़ी उत्तम सेवा है व भाग्यवान को ही मिलती है। भाई गुरदास जी की वार :-

पउड़ी १३

(माता-पिता के अपकारी के जप तप निष्फल हैं)

मां पिउ परहरि सुनै वेदु भेदु न जाणै कथा कहाणी।
मां पिउ परहरि करै तपु वणखंडि भुला फिरै बिबाणी।
मां पिउ परहरि करै पूजु देवी देव न सेव कमाणी।
मां पिउ परहरि न्हावणा अठसठि तीरथ घुंमण वाणी।
मां पिउ परहरि करै दान बेईमान अगिआन पराणी।
मां पिउ परहरि वरत करि मरि मरि जंमै भरमि भुलाणी।
गुर परमेसरु सारु न जाणी ॥ १३॥ (वार ३७, भाई गुरदास जी)

इसलिए माता-पिता की जितनी भी सेवा की जाये, उतनी ही कम है।

७५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरा परिवार बहुत बड़ा है व घर का कार्य अधिक होने के कारण कई बार मन सहज में नहीं रहता व दुखी हो जाता है। इसलिए कोई विधि बताइये, जिससे मन सहज भाव में रहे।

उत्तर :- आप अपने काम को भी भक्ति बना सकते हो। जब सफाई करो तो सोचो कि मैं अपने गुरु नानक के बख्शे हुए घर को साफ कर रही हूँ। पता नहीं आज संगत रूप में गुरु नानक के बख्शे घर में किस के चरण पड़ जायें। मेरा परिवार भी गुरु नानक का परिवार है। फिर बर्तन धो रहे हो तो सोचो कि मैं श्री गुरु नानक देव जी महाराज के परिवार के ही बर्तन धो रही हूँ। खाना बनाते समय भी यही सोचो। ऐसा करने से आपके घर का काम भी हो जायेगा व आपका मन भी सहज भाव में रहेगा। पवित्र गुरबाणी का भी वचन है-

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥ २१३ ॥ (अंग १३७६)

७६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, यह किसी की विनती है। उसका कहना है कि मेरी पेचों की फैक्टरी है। काम अच्छा है पर हर समय ठक-ठक की आवाज़ सुनकर मेरा सिर दुःखना शुरू हो जाता है। इसलिए मेरा दिल करता है कि यह काम बंद करके कोई और काम शुरू करूं, जिस में शान्ति हो।

उत्तर :- उन को कहो कि आप काम न बंद करें। आपका काम उत्तम है, पर यदि आपको यह समस्या आती है तो आप एक काम किया करें। यदि आवाज़ आती है, इसमें वाहिगुरु-वाहिगुरु सुनो। पहले-पहले आपको आदत बनानी पड़ेगी। फिर बाद में खुद ही चलना आरम्भ हो जायेगा व फिर धीरे-धीरे रस आने लगेगा। एक महापुरुष हुए हैं संत परमानंद जी। उन्होंने दास को एक वचन सुनाया, कहने लगे कि वे एक बार रेलगाड़ी में

यात्रा कर रहे थे व यात्रा करते समय नाम जप रहे थे। एक बार श्वास लेने पर एक बार वाहिगुरु जपा जा रहा था, पर रेल की गति अधिक होने के कारण उसकी आवाज़ ने हमारे अन्दर वाहिगुरु के जाप की लय भी तीव्र कर दी व एक बार की बजाये चार बार वाहिगुरु चल पड़ा। आप पेचों का कार्य बंद न कीजिए, मशीनों की ठक-ठक की आवाज़ में ठक-ठक के स्थान पर वाहिगुरु-वाहिगुरु सुनें। एक दिन आयेगा इस अवस्था में पहुंच जायेंगे-

हरहट भी तूं तूं करहि बोलहि भली बाणि ॥ (अंग १४२०)

७७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सुखमनी साहिब जी की बाणी कैसे पढ़ें कि रस आये?

उत्तर :- सुखमनी साहिब जी का पाठ प्रतिदिन एक अवश्य करें, पर उसके अतिरिक्त आप सुखमनी साहिब जी की दो-दो अष्टपदियां प्रतिदिन सहज भाव से पढ़नी शुरू करें। इस तरह आपको समझ भी आनी आरम्भ हो जायेगी कि हर शब्द का अर्थ क्या है अर्थ पता लगने पर रस आना शुरू हो जायेगा। जैसे गुरबाणी का भी वचन है-

सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम॥

जिसु मनि बसै सु होत निधान॥ (अंग २९५)

७८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मुझे सपना आ रहा था कि श्री गुरु नानक देव जी महाराज मेरे घर आये हैं। इतनी देर में मेरे घर के किसी सदस्य ने मुझे नींद से जगा दिया। मैंने उस पर बहुत क्रोध किया।

उत्तर :- आप भाग्यवान हैं कि आपको नींद में गुरु साहिब जी के दर्शन हुए हैं,

सुतड़ी सो सहु डिठु तै सुपने हउ खंनीऐ ॥ २ ॥ (अंग ११००)

चाहे एक क्षण के लिए ही दर्शन हुए हैं। आपको यदि किसी

ने नींद से जगा दिया है तो इसमें उसका कोई दोष नहीं, आपके भाग्य में इतने ही दर्शन थे।

७९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरे लड़के को हर १०-१५ दिन बाद कभी बुखार हो जाता है और कभी कुछ हो जाता है। क्या करूं?

उत्तर :- आप प्रयत्न करें कि पहले जो नितनेम है उसके अतिरिक्त बच्चे की देह अरोग्यता के लिए एक पाठ सुखमनी साहिब बढ़ा दें। सुखमनी साहिब की बाणी तन के रोग भी ठीक करती है।

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥

कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ (अंग २६२)

८०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, यदि वाहिगुरु सब का है तो फिर हरेक को दर्शन क्यों नहीं देता?

उत्तर :- दमदमी टकसाल के महापुरुषों द्वारा लिखी पुस्तकों में चार प्रकार के दर्शनों का उल्लेख मिलता है: चित्र-दर्शन, स्वप्न-दर्शन, शब्द-दर्शन व प्रत्यक्ष-दर्शन। चाहे कई लोग चित्रों को इतना महत्व नहीं देते, पर चित्र में भी शक्ति होती है। कोई गलत भावना वाला चित्र देखा जाये तो मन बुरी तरफ ही जायेगा, पर यदि घर में श्री दरबार साहिब जी का चित्र लगा है, और उसको देखोगे तो याद भी श्री दरबार साहिब की आयेगी। हर जिज्ञासु की अपनी अवस्था है व उस अवस्था के अनुसार ही वाहिगुरु दर्शन देता है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज के दर्शन भी वाहिगुरु के दर्शन हैं। इसके अतिरिक्त वाहिगुरु किसी को उस जिज्ञासु की कमाई व अवस्था के अनुसार सपने में दर्शन देता है व जिसको सपने में दर्शन हो जायें तो यह भी बहुत बड़ी कृपा की निशानी है। प्रत्यक्ष दर्शन तो बाबा नंद सिंघ जी या बाबा अतर सिंघ जी

जैसे किसी विरले महापुरुषों के भाग में ही आते हैं।

८१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, क्या सिक्ख को पान सुपारी खानी चाहिए?

उत्तर :- पान सुपारी के सेवन पर पूरी तरह से पाबंदी है व दशम पिता जी ने इसको चार कुरहितों में शामिल किया है। पाँच प्यारे जब अमृतपान करवाते हैं तो इस बारे बकायदा ताकीद करते हैं कि इनका सेवन नहीं करना। यदि यह गलती से भी निगली जाये तो पाँच प्यारों के सम्मुख पेश होकर भूल बख़्शानी पड़ती है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज में भी फरमान किया गया है-

पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥

हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥ (अंग ७२६)

इतिहास में वर्णन है कि एक दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज अपने सिंघों के साथ जा रहे थे तो महाराज का नीला घोड़ा अचानक रुक गया। गुरु साहिब जी ने भाई दया सिंघ को हुक्म किया कि जाकर देखो कि हमारा नीला क्यों रुक गया है तो जब भाई दया सिंघ जी ने घोड़े से उतर कर देखा तो नाक पर रुमाल रख लिया व महाराज जी को विनती की कि आगे तो तंबाकू के खेत हैं। भाई दया सिंघ जी की बात सुन कर श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज कहने लगे कि गुरसिक्खों की संगत में रह कर हमारे घोड़े को भी ज्ञान हो गया है कि तम्बाकू या पान सुपारी के खेतों में नहीं जाना चाहिए। यदि कहीं हमारा नीला इन खेतों में से गुज़र जाता तो इसकी सारी सेवा निष्फल हो जानी थी।

बाबा नंद सिंघ जी के समय एक सिक्ख संतरों का प्रसाद लेकर आया और बाबा जी ने अपने सेवादार को बुला कर कहा कि इन संतरों को कहीं दूर जाकर मिट्‌टी में गाड़ आओ।

वह सिक्ख बहुत चकित हुआ एवं बाबा जी से कहने लगा कि मैं प्रसाद लेकर आया हूँ और आप यह संतरे मिट्टी में क्यों दबा रहे हैं? बाबा जी कहने लगे कि जहां से तूने संतरे लिये हैं, इन संतरों को बेचने वाले ने जो दूर से छड़ी लगाई है कि कौन से संतरे लेने हैं, यह वाले, यह वाले कि यह वाले, वह छड़ी नहीं थी वह तम्बाकू पीने वाले हुक्के की नली थी। उसके लगते ही यह संतरे प्रसाद के योग्य नहीं रहे। बाबा जी ने सुमति दी कि प्रसाद के लिए सामान, दुकान देख कर लिया करो। इसलिए यह साखियां हमें यही बताती हैं कि पान, सुपारी, तम्बाकू का सेवन सिक्ख धर्म में बिल्कुल वर्जित है।

८२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सृष्टि का कर्ता वाहिगुरु आप है, पर कोई अच्छा कार्य करने पर हम यह क्यों कहने लगते हैं कि अमुक काम मैंने किया है। क्या यह ठीक है?

उत्तर :- यह ठीक है कि सृष्टि का कर्ता वाहिगुरु स्वयं है, पर जब कोई अच्छा कार्य करने पर यह कहता है कि यह कार्य मैंने किया है तो फिर इम्तिहान शुरू हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि अहं करने वाला वाहिगुरु के घर का शरीक बन जाता है।

जब इह जानै मै किछु करता ॥

तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ (अंग २७८)

दास आगरे एक कार्यक्रम के लिए गया। सारा दीवान खुले पंडालों में था। दीवान की समाप्ति के उपरांत संगतों ने वहीं लंगर के लिए पंक्तियां लगा लीं। हम पंडाल में से वापस आ रहे थे व प्रबंधक भी हमारे साथ थे। उन प्रबंधकों में से एक प्रबंधक दास का कंधा पकड़ कर कहने लगा, भाई साहिब जी, देखा जनसमूह, मानते हो? दास समझ गया कि इस शरीर को अभी तक महापुरुषों की संगति प्राप्त नहीं हुई, जिसके कारण अहं बहुत ज्यादा है। दास ने कहा कि गुरु की कृपा।

वह प्रबंधक पुनः कहने लगा कि अपनी छोड़ो, मेरी सुनो। ऐसी एकत्रता आगरे में आज तक नहीं हुई। दास ने पुनः कहा कि गुरु की कृपा। वह फिर कहने लगा, अपनी छोड़ो। मैं जोड़े घर से पूछ कर आया हूँ। ८००० नंबर लग गया है व एक नंबर पर तीन शरीरों के भी जोड़े हों तो २४००० की एकत्रता हो गई। कहता मानते हैं मुझे? मैं अहं देख कर हैरान रह गया कि जोड़े घर से नंबर पूछ कर आया है कि कितने नंबर लगे हैं। आखिर दास को कहना ही पड़ा, भाई मानते हैं आपको। जब अगले दिन दीवान सजा तो वर्षा कहे कि आज ही बरसना है। मूसलाधार वर्षा हुई। पंडाल का कुछ भाग वाटर-प्रूफ था व बाकी सारा साधारण था। जब दास कीर्तन की हाजरी देने के लिए पंडाल में पहुंचा तो संगत पिछले दिन से केवल १५% थी। समाप्ति पर दास ने उस प्रबंधक से कहा कि आज संगत बहुत कम है। वह शरीर कहने लगा, गुरु की रज़ा। दास ने कहा कि यदि एकत्रता अधिक हो गई तो मैंने की है और यदि संगत कम हो गई तो गुरु की रज़ा। इसलिए जब हम अहं कर बैठते हैं तो फिर इम्तिहान शुरु हो जाते हैं।

कोटि करम करै हउ धारे॥ स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥

(अंग २७८)

महापुरुष शिक्षा देते हैं कहीं यदि संगत बढ़ गई तो एक पाठ जपुजी साहिब जी का करके शुक्राना करें। इस प्रकार यह किये कार्य दरगाह में जमा हो जाते हैं व यदि ऐसा न किया जाये तो फिर अहं के कारण इम्तिहान शुरू हो जाते हैं। दास शुक्र करता है कि बाबा नंद सिंघ जी के घर की संगति प्राप्त हुई है। यदि कहीं उनकी संगति न मिलती तो हमने बर्बाद हो जाना था, क्योंकि ऐसी बारीकियां तो वही बता सकता है जो इन सीढ़ियों पर चढ़ा हो।

८३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सिक्ख गुरु रज़ा में रहे या दुःख

आने पर अरदास करे?

उत्तर :- संत बाबा अतर सिंघ जी मस्तुआणे वाले वचन करते थे कि रज़ा मानना गुरु नानक के घर की आखरी कक्षा है। यहां तो कोई-कोई पहुंचता है।

तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिस नो होहि दइआला॥ (अंग ७८४)

पंचम पातशाह जी ने गर्म तवी पर बैठ कर व गुरु साहिबान के अनेक सिंघों ने अपने आप को न्यौछावर करके गुरु की रज़ा मानी, पर यह बहुत बड़ी अवस्था है। हमें तो यह सुमति है कि जीवन में दुःख-सुख आते रहते हैं। इसलिए यदि दुःख आये तो नियम बढ़ा कर गुरु साहिब जी के चरणों में अरदास करें व यदि सुख आये तो नियम बढ़ा कर गुरु साहिब जी का शुक्राना करें।

८४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी महाराज व सातवें पातशाह श्री गुरु हरि राय साहिब जी महाराज के बाग में से गुज़रते हुए सातवें पातशाह के चोले से लग कर एक फूल टूटने पर छठे पातशाह जी ने यह उपदेश दिया, 'बेटा, दामन समेट कर चलो।' इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर :- छठे पातशाह जी के कहने का भावार्थ यह था कि संसार में विचरण करते हुए इतने सावधान होकर चलो कि कहीं कोई जुड़ा हुआ आपके कारण न टूट जाये। इसलिए इस वचन के बारे हम सभी के लिए यह शिक्षा है कि तोड़ने जैसा पाप नहीं व जोड़ने जैसा पुण्य नहीं। श्री गुरु नानक देव जी महाराज के समय कोई सिक्ख सतिगुरु जी के दर्शन करने के लिए आया तो वह कहने लगा, सतिगुरु जी! कोई उपदेश दीजिए। महाराज कहने लगे, सामने वृक्ष से पत्ता तोड़कर लाओ। वह पत्ता तोड़ लाया तो सतिगुरु जी कहने लगे कि अब जोड़ कर आओ। वह कहने लगा कि पत्ता तोड़ तो लाया हूँ पर अब यह जुड़ नहीं

सकता। श्री गुरु नानक देव जी महाराज कहने लगे कि यही उपदेश है। वह सिक्ख कहने लगा कि मैं समझा नहीं। सतिगुरु जी ने फुरमाया कि जीवन में कभी कोई ऐसा कर्म न करना कि आपके कारण कोई टूट जाये। बाबा फरीद जी को किसी ने सोने की कैंची भेंट की तो बाबा फरीद जी आगे से कहने लगे कि चाहे लोहे की सूई दे दे, यह सोने की कैंची मैंने क्या करनी है, क्योंकि मैंने जीवन में सीना सीखा है, काटना नहीं। भाई गुरदास जी की बाणी भी यही शिक्षा देती है कि कोई सात मंदिर सोने के दान दे, उसका इतना महात्मय नहीं जितना कोई एक टूटे हुए को शब्द से जोड़ दे।

जैसे सत मंदर कंचन के उसार दीने,

तैसा पुंन सिख कउ इक सबद सिखाए का।। (कबित्त ६७३)

बाबा नंद सिंघ जी का भी वचन है कि किसी भूखे का पेट भर देना या किसी नंगे का तन ढंक देना अच्छी बात है, पर बड़ी नहीं। बड़ी क्या है? किसी टूटे हुए को गुरु नानक के चरणों से जोड़ देना, यह सबसे बड़ी बात है।

८५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज की बाणी का निष्कर्ष क्या है?

उत्तर :- श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बाणी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि यह मनुष्य जन्म कई योनियों के बाद मिला है। इसलिए संसारिक मोह-ममता में फंस कर इन श्वासों को निष्फल न करें। खुद भी जुड़ें व अन्यों को भी जुड़ने की प्रेरणा दें। इसलिए महाराज गुरबाणी में फुरमान करते हैं-

भई परापति मानुख देहुरीआ।।

गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ।। (अंग ३७८)

८६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, क्या कोई अति दुराचारी भी गुरु साहिब की कृपा का पात्र बन सकता है?

उत्तर :- सिक्ख इतिहास में अनेक उदाहरण इस बात के साक्षी हैं कि अति नीच काम करने वालों को भी गुरु नानक ने अपने गले लगाया। सज्जन ठग, कौडा राक्षस, मलिक भागो, भूमिया चोर जिनके कारनामे पढ़ सुन कर हृदय काँप उठता है, उनको भी श्री गुरु नानक ने शब्द का तीर मार कर न केवल उनका जीवन ही बदला, बल्कि ऐसी कृपा कर दी कि वे अन्यों के भी उद्धारक बन गये।

गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभि छपे ॥

पारब्रहम गुरदेव नीचहु उच थपे ॥ (अंग ७१०)

संसार के सभी धर्म अच्छे हैं, पर एक यही गुरु नानक का घर है जिस में गुरु नानक महाराज स्वयं दुराचारी के घर उसका उद्धार करने के लिए गये। इसलिए धन्यवाद करो कि हमने गुरु नानक के घर में जन्म लिया है।

८७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरी सहेली का नितनेम बहुत अधिक है, पर उसने अमृतपान नहीं किया। वह स्वयं कहती है कि मैंने अमृतपान नहीं किया, पर मेरा नितनेम अमृतधारी सिंघों से अधिक है। इसलिए मैं दुविधा में हूँ कि वह बड़ी है या अमृतधारी लोग बड़े हैं?

उत्तर :- उनके चरणों में नमस्कार है जो अधिकाधिक नितनेम से जुड़े हुए हैं, पर उनकी भक्ति निगुरी भक्ति है। जैसे गुरबाणी का भी फुरमान है-

वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि॥

(अंग ५८८)

इतिहास में जिक्र है कि एक बार श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज भाई डल्ला जी की सेवा से बहुत प्रसन्न हो गये, क्योंकि भाई डल्ला जी ने सारी रात डट कर पहरा दिया था और सतिगुरु जी ने प्रसन्न होकर वचन दिया कि मांगो कुछ।

तो भाई डल्ला जी ने विनती की कि पातशाह! दरगाह में पीढ़ी जितना स्थान दे देना। गुरु साहिब कहने लगे, दरगाह में पीढ़ी जितनी तो क्या, सूई जितना भी स्थान नहीं दे सकते जब तक तू अमृतपान नहीं करता। भाई डल्ला जी कहने लगे, मैंने अमृतपान किया है। गुरु साहिब पूछने लगे, भाई डल्लिया! कब अमृतपान किया है? भाई डल्ला जी कहने लगे, जब आपके सिक्ख अरदास करते हैं तो प्रसाद को (कृपाण) भेंट करते हैं और मैंने वह प्रसाद ग्रहण किया है। यह अमृत ही हो गया। महाराज जी ने कहा, नहीं डल्लिया! खण्डे बाटे का अमृत। जो शब्द उस समय हुए, भाई वीर सिंघ जी ने लिखे हैं। डल्ले ने दूसरी बार कहा, महाराज! मैंने अमृतपान किया है। महाराज जी ने पूछा कब किया है? कहने लगा, आपने अमृतपान किया है या नहीं? महाराज जी ने कहा, किया है तो भाई डल्ला जी कहने लगे कि मैं आपका शीत प्रसाद ग्रहण करता हूँ, इसलिए मैंने भी अमृतपान किया है। दास भाई वीर सिंघ जी द्वारा लिखा इतिहास पढ़कर चकित रह गया कि वह व्यक्ति कितना भाग्यशाली होगा, जिसको श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी का शीत प्रसाद मिलता हो। गुरु साहिब जी कहने लगे, डल्लिया, चाहे तूं शीत प्रसाद ग्रहण करता है पर दरगाह में सूई जितनी भी जगह नहीं मिल सकती, जब तक तू अमृतपान नहीं करता। गुरु साहिब का शीत प्रसाद ग्रहण करने वाले को भी दरगाह में स्थान मिलने की मनाही है, जब तक वह गुरु की मर्यादा में नहीं आता। गुरु साहिब जी की यह बात सुन कर भाई डल्ला जी ने फिर बांहें फैला कर कहा कि महाराज जी, यदि आपकी इसी में प्रसन्नता है तो फिर पता नहीं कल दिन चढ़े या न। आज ही अमृत की दात बख्श दें। भाई डल्ला जी कुछ साथियों सहित अमृतपान करके भाई डल्ल सिंघ सुशोभित हुए व आश्चर्य की बात कि कुछ महीने बाद ही भाई डल्ले ने शरीर त्याग दिया। इसलिए गुरु साहिब

की खुशी इसी में है कि हम अमृत की दात प्राप्त करें ताकि हमारी की हुई भक्ति गुरु वाली भक्ति बन जाये। जिसका नितनेम अधिक है, पर उसने अमृत ग्रहण नहीं किया तो वह निगुरी भक्ति कर रहा है। अमृतपान किया है और नियम कम है तो उनकी भक्ति गुरु वाली है। इसलिए तीसरे पातशाह जी का वचन है-

भाई रे गुर बिनु भगति न होइ॥

बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ १॥ (अंग ३१)

८८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब रागी सिंघ पढ़ते हैं-हउ आइआ दूरहु चलि कै, इन पंक्तियों का क्या अर्थ है?

उत्तर :- हउ आइआ दूरहु चलि कै, इन पंक्तियों का यह अर्थ नहीं कि मैं यू.एस.ए. या कैनेडा से आया हूँ। इसका अर्थ बड़े सरल तरीके से गुरबाणी में आया है :-

कई जनम भए कीट पतंगा॥ कई जनम गज मीन कुरंगा॥

कई जनम पंखी सरप होइओ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ॥

(अंग १७६)

कई जन्मों से बिछुड़े हुए हैं, कितने जन्मों से चल रहे हैं व अब जाकर मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है। इसलिए इस मानव चोले को नाम जप कर सफल कर लें।

गुर सेवा ते भगति कमाई॥ तब इह मानस देही पाई॥

(अंग ११५९)

८९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब मैं खाना बनाती हूँ तो बच्चों ने स्कूल जाना होता है, जिसके कारण उनको साथ रोटी देनी पड़ती है। प्रातः इतना समय नहीं होता कि समय पर सतिगुरु जी को भोग लगा लें, जिसके कारण यह समय बाद का रखा हुआ है। कहीं यह बेअदबी तो नहीं?

उत्तर :- बहुत सारी बहनो का यही प्रश्न होता है। इसलिए प्रसादा या जो भी दाल-सब्जी आप बनाते हैं, वह बाबा जी को भोग लगाने के लिए एक साफ कटोरी में पहले निकाल लिया करें। ऐसा करने के उपरांत आप बच्चे को रोटी सब्ज़ी दे सकते हैं।

१०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की सेवा कितनी प्रकार की है?

उत्तर :- श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज की सेवा तीन प्रकार की होती है : पहली सेवा-कनिष्ठ सेवा, दूसरी सेवा-मध्यम सेवा व तीसरी सेवा-उत्तम सेवा। सरल रूप में लिखते हुए दास विनती करता है कि कनिष्ठ सेवा यह है कि आप हम ए.सी. कमरों में सोयें व बाबा जी के कमरे में पंखा भी न हो। कभी प्रसादे का भोग लगाया और कभी न लगाया। रुमाले का भी पता नहीं कि कब बदलने हैं व कब नहीं। कभी पाठ किया और कभी नहीं किया। ऐसी सेवा कनिष्ठ सेवा है जो स्वीकार्य नहीं है। मध्यम सेवा इस प्रकार की होती है कि जैसे हमने अपने लिए सुविधायें रखी हैं, उसी प्रकार गुरु साहिब के लिए रखें। उत्तम सेवा बाबा नंद सिंघ जी जैसे महापुरुष ही कर सकते हैं। बाबा जी ने सारी-सारी रात हाथ से पंखा करना, समय पर सतिगुरु जी का प्रकाश करना, आप भूमि पर आसन बिछा कर विश्राम करना और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज को पलंग पर विराजमान करना। गृहस्थी मध्यम सेवा भी कर ले तो भी स्वीकार्य है, पर कनिष्ठ सेवा न करे। सतिगुरु जी बाणी में भी उपदेश करते हैं-

सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ॥ (अंग ६४४)

११. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई प्रचारक यह प्रचार करते हैं कि अधिक गुरबाणी पढ़ने की आवश्यकता नहीं और न ही पाठों की गिनती करनी चाहिए। इसलिए मन दुविधा में आ जाता है। आप जी कोई दिशा दिखाएं।

उत्तर :- जब मन दुविधा में पड़ जाये तो सिक्ख ने दो स्थानों से रास्ता लेना है : एक है श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज व दूसरा गुर इतिहास। जब कोई यह कहे कि अधिक बाणी पढ़ने की आवश्यकता नहीं तो इस बारे श्री गुरु अमरदास जी महाराज की यह पंक्ति सामने रखा करो :-

कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी॥ (अनंदु साहिब)

श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज भी फुरमान करते हैं :-

आइओ सुनन पड़न कउ बाणी॥ (अंग १२१९)

इसके अतिरिक्त यदि हम गुर-इतिहास की ओर दृष्टिपात करें तो हमें पता चलता है कि बाबा दीप सिंघ जी का १०१ पाठ प्रतिदिन जपुजी साहिब जी का नियम था। संत बाबा अतर सिंघ जी मस्तुआणे वालों ने सवा लाख जपुजी साहिब जी के पाठों की दो बार हाज़री इसलिए लगाई कि दशम पातशाह जी के प्रत्यक्ष दर्शन हो जायें। भाई बचित्तर सिंघ जी, जिन्होंने मस्त हाथी का सिर बेंधा था, उनका अमृत वेले कुछ खाने से पहले २१ पाठ जपुजी साहिब जी का नियम था। ऐसे प्रसंग आपको डोलने नहीं देंगे, बल्कि आपकी बैटरी चार्ज करेंगे। जहां तक इस सवाल का संबंध है कि पाठों की गिनती में पड़ना चाहिए या नहीं तो इस बारे श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज से शिक्षा लिया करो। अमृत संचार के समय भी पाँच प्यारे यह हुक्म करते हैं कि पाँच बाणियों का नितनेम करना सिक्ख के लिए प्रतिदिन आवश्यक है। यह भी तो गिनती ही हो गई। इसके अतिरिक्त श्री गुरु अमरदास जी महाराज ने गोइंदवाल साहिब ८४ सीढ़ियों पर श्रद्धा से स्नान तथा ८४ पाठ जपुजी साहिब जी की प्रेरणा भी तो गिनती ही है। इसके अतिरिक्त श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के हरेक अंग पर गिनती लिखी है, जपु जी साहिब, अनंदु साहिब जी की हर पउड़ी पर गिनती है। हम कहते हैं कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज जी से सहज

पाठ की सतिगुरु मुझसे सेवा ले रहे हैं। मैंने इतने अंग तक पाठ कर लिया है, यह भी तो गिनती ही है। यदि कोई खुद पर बैन लगाकर बाणी पढ़ता है कि इतने पाठ मैंनें प्रतिदिन पढ़ने हैं तो यह भी स्वीकार है। हां, जिसका श्वास-श्वास सिमरन चल पड़ा है, वह सतिगुरु जी की कृपा से खुद ही इन संख्याओं से ऊपर उठ जाता है। इसलिए आप जब भी कीर्तन श्रवण करने जाएं, बौद्धिक वृत्ति लेकर जाएं। यदि कोई बात अच्छी लगे, ले आया कीजिए। जो बात गुरु से तोड़े, उसको वहीं छोड़ आया करो। सिक्ख का कार्य है : गुणों को एकत्रित करना व अवगुणों का त्याग करना। गुरु साहिब जी भी गुरबाणी में शिक्षा देते हैं :-

जे गुण होवन्हि साजना मिलि साझ करीजै॥

साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ॥

(अंग ७६५)

१२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमारे घर गुरु जी की कृपा से हर माह सत्संग होता है, पर कई बार जो कीर्तन करते हैं, उनका अपना जीवन ऊंचा न होने के कारण हमें कीर्तन में रस नहीं आता। इसलिए कोई युक्ति बतायें जिससे कीर्तन में मन जुड़ जाये।

उत्तर :- यह बाबा नंद सिंघ जी का वचन है, सिक्ख जब भी कीर्तन के मंडल में बैठे तो हंस वृत्ति रखे। हंस का कार्य है हीरे मोती चुगने। इसलिए सिक्ख को कीर्तनीए के अवगुणों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि हंस की तरह गुरबाणी का रस लेते हुए हीरे मोती चुगने चाहिएं। संत बाबा ईशर सिंघ जी (नानकसर वाले) फुरमान करते थे कि संगत में चार प्रकार के शरीर आते हैं : ऊंघे, सूंघे, डूंगे व चूंघे। कई तो सत्संग में आते ही सो जाते हैं और कईयों का कार्य होता है कि कार्यक्रम में गलती कौन सी हो रही है, पर जो डूंगे की पंक्ति में आते

हैं, वे कीर्तन श्रवण करते हुए हर पंक्ति की गहराई में जाते हैं एवं एक अवस्था है सबसे ऊपर, वे है चूंघे। इस अवस्था के जिज्ञासु कीर्तन की हर पंक्ति में से रस चूसते हैं। कबीर जी ऐसे जिज्ञासुओं बारे फुरमान करते हैं :-

संतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु॥ (अंग १३६५)

इसलिए सिक्ख को डूंगे या चूंघे की कतार में आना चाहिए।

९३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, परमार्थ की शिक्षा, जो इस जीवन में हमने ली है, क्या मृत्यु के साथ समाप्त हो जाती है?

उत्तर :- नहीं जी। सांसारिक शिक्षा व परमार्थ की शिक्षा में अंतर है। सांसारिक शिक्षा किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के साथ समाप्त हो जाती है। यदि कोई व्यक्ति इस जन्म में डॉक्टर है तो यदि अगले जन्म में उसे पुनः डॉक्टर बनना है तो उसको दुबारा डॉक्टरी की शिक्षा लेनी पड़ेगी डिग्री लेनी पड़ेगी, डिप्लोमे करने पड़ेंगे, पर परमार्थ की शिक्षा में ऐसा नहीं। जितनी सीढ़ियां कोई जिज्ञासु इस जन्म में चढ़ चुका है, उसको अगले जन्म में यह सीढ़ियां तैयार मिलेंगी। दास अपने जीवन का एक और दृष्टांत देना चाहता है। दास किसी कार्यक्रम की समाप्ति पर पंक्ति में बैठ कर लंगर ग्रहण कर रहा था कि एक लगभग १२ वर्षीय बालक बड़ी सहजता व संतोष के साथ वाहिगुरु जपते हुए लंगर बांट रहा था। दास काफी समय उस बच्चे की ओर देखता रहा और फिर दास ने अपने साथी से कहा कि इस बच्चे में इतनी सहजता है जो किसी ८० वर्ष के वृद्ध में नहीं देखी। इसका अर्थ है कि यह पिछले जन्म में संतोष की सीढ़ी चढ़ा हुआ है जो इसको इस जन्म में तैयार मिल गई है। इसलिए परमार्थ की शिक्षा की जितनी सीढ़ियां चढ़ जायें वह नाश नहीं होतीं, अगले जन्म में तैयार मिल जाती हैं। गुरबाणी में भी फुरमान है-

तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥ (अंग १०८)

९४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आप आसा जी दी वार की हाज़री लगाने के उपरांत यह पंक्तियां क्यों पढ़ते हैं :

लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥

(अंग २६१)

उत्तर :- गुरबाणी पढ़ते हुए हमसे बेअंत भूलें हो जाती हैं, इसलिए कीर्तन करने के पश्चात् यह दो पंक्तियां इसलिए पढ़ते हैं कि कीर्तन करते समय यदि कोई जाने-अनजाने भूल हो गई हो तो सतिगुरु जी कृपा करके बख़्श दें, क्योंकि गुरु साहिब जी के फुरमान के अनुसार संगत में परमेश्वर स्वयं बसता है।

मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥

(अंग ९४)

कई बार संगत अधिक होने के कारण कीर्तनीये के मन में अहं आ जाता है कि मेरे कारण इतनी संगत एकत्र हो गई है। अहं के कारण कमाई बहनी शुरु हो जाती है। महापुरुष तो यह भी वचन करते हैं कि हर कीर्तनीये को बैठते समय भी जपुजी साहिब का पाठ करके बैठना चाहिए व कीर्तन की समाप्ति के उपरांत भी कम से कम पांच पउड़ियां जपु जी साहिब का पाठ करके सतिगुरु जी का अवश्य धन्यवाद करना चाहिए कि सतिगुरु जी आप ने कृपा करके कीर्तन की सेवा ली है। हम दो पंक्तियां पढ़ते हैं भूलें बख़्शवाने के लिए व अहं से बचाव के लिए-

लेखे कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥
बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥ (अंग २६१)

९५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज ने जितने भी युद्ध लड़े। इन युद्धों का क्या मनोरथ था?

उत्तर :- श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज निर्वेरता का मूर्त्त रूप हुए हैं।

गुर पूरा निरवैरु है, निंदक दोखी बेमुख तारे ॥

(वार २६, भाई गुरदास जी)

सतिगुरु जी ने जितने भी युद्ध लड़े, उनकी शुरुआत स्वयं नहीं की, बल्कि दूसरी तरफ से कोई वार आया है तो उसको ही रोका है। इतनी निर्वेरता कि जितने भी युद्ध लड़े किसी मस्जिद, किसी गिरजा घर, किसी मंदिर का अपमान नहीं होने दिया, क्योंकि सतिगुरु जी का किसी धर्म से बैर नहीं। जिस दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज को पहचान लेंगे, हर जन्म में कहेंगे कि तेरी सिक्खी के घर जन्म मिले। यही मांगेंगे कि यदि अगला जन्म देना है तो उस माँ के घर देना जो मुझे बचपन से ही जपुजी साहिब के साथ जोड़ दे। तेरी सिक्खी से जोड़ दे। हो युद्ध का मैदान जिसमें जो कुछ भी हो जाये, वह उचित है, पर श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज को पढ़ो। उन्होंने युद्ध के मैदान में भी सात असूल रखे हुए थे। इतनी पक्की मर्यादा कि स्त्री पर वार नहीं, वृद्ध पर वार नहीं, बालक पर वार नहीं, सोये हुए पर वार नहीं, पीठ पर वार नहीं, शरणागत पर वार नहीं, निहत्थे पर वार नहीं। एक बात और देखें। यह युद्ध न धन के लिए लड़े, न स्त्री के लिए, न ज़मीन के लिए, बल्कि सारे युद्ध अत्याचार को रोकने के लिए हुए व हर युद्ध में विजय प्राप्त की। हद तो इस बात की है कि युद्ध के समय भी सतिगुरु जी ने किसी शत्रु की स्त्री की भी अस्मिता नष्ट नहीं होने दी, बल्कि स्त्री का सम्मान करना सिखाया। नितनेम में भी सतिगुरु इतने पक्के थे कि युद्ध के दौरान भी अमृत वेला नहीं गंवाया। २५० सिंह शहीद करवा लिए पर अमृत वेला नहीं गंवाया। और तो और, भाई घनैया जी की साखियां हम आम पढ़ते हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि सतिगुरु जी इतनी निर्वेरता की मूर्त्त थे कि भाई साहिब द्वारा शत्रुओं को जल पिलाने पर न केवल उनको आशीर्वाद दिया अपितु मल्हम-पट्टी भी हाथ में पकड़ाते हुए कहा कि यह

भी घायलों को लगा दिया करो। इसके अतिरिक्त जिसको भी श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज बाण मारते थे, उस बाण पर सवा तोला सोना लगा होता था ताकि यदि वह मर जाये तो उसका क्रिया-कर्म हो सके और यदि घायल हो जाये तो उसका उपचार हो सके। सतिगुरु जी का वचन था कि जिस को बाण मार रहे हैं, उसके साथ कोई शत्रुता नहीं, यह अत्याचारी द्वारा आया है, इसलिए बाण मार रहे हैं। सतिगुरु जी के युद्ध अत्याचार को रोकने के लिए हुए हैं, अत्याचार करने के लिए नहीं। सतिगुरु जी के युद्धों में भी संसार का भला छुपा हुआ था।

सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु इकु सोइ ॥

(अंग ३०२)

९६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरुपर्व के दिन में जब प्रभात फेरियां निकलती हैं, तब अमृत वेला संभाल लेते हैं, क्योंकि प्रभात फेरी के साथ जाना होता है, पर कई बार मन में यह ख्याल आता है कि दो-चार दिन उठने का क्या लाभ, यह नियम तो प्रतिदिन का होना चाहिए।

उत्तर :- अमृत वेला बहुमूल्य दात है। यह जल्दी किसी की झोली में नहीं पड़ती। इसलिए जिस दिन भी आप किसी विधि द्वारा अमृत वेला में उठ कर उसे संभाल लेते हो, उस दिन सतिगुरु जी का धन्यवाद किया करो। कबीर साहिब जी भी फुरमान करते हैं :-

पीसत पीसत चाबिआ सोई निबहिआ साथ ॥ (अंग १३७६)

इसके अतिरिक्त अमृत वेला में उठ कर इसको संभालने के लिए अपने नियम के अतिरिक्त एक पाठ जपुजी साहिब जी का करके सतिगुरु जी के चरणों में अरदास किया करो कि प्रतिदिन अमृत वेला संभालने की यह अनमोल दात मेरी झोली में कब पड़ेगी। फिर सतिगुरु स्वयं ही कृपा करते हैं।

सतिगुरु जागि जगाइदा साधसंगति मिलि अमृत वेला।
(वार २६, भाई गुरदास जी)

१७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई सिक्ख भी ज्योतिष विद्या वालों के पास जाते दिखाई देते हैं, क्या उनका जाना उचित है?

उत्तर :- ज्योतिष विद्या वाला तो शायद यह बता दे कि तेरे हाथ की रेखाएं यह कहती हैं पर इनको बदलना उसके हाथ में नहीं। यह रेखायें बदलती कैसे हैं? गुरुद्वारा साहिब जा कर जोड़ों की सेवा करने या लंगर की सेवा करने या झाड़ू की सेवा करने या बर्तन साफ करने की सेवा द्वारा। यदि किसी के भाग्य में बुरी रेखायें भी लिखी हैं तो वे भी बदल जाती हैं। महापुरुष तो यह भी वचन करते हैं कि भविष्य की कोई बात बताने वाला परमेश्वर का शरीक बन जाता है। गुरसिक्ख ने ज्योतिष विद्या के चक्कर में नहीं पड़ना। दास श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज के विश्वास के साथ कहता है कि जो गुरसिक्ख अमृत वेले उठ कर गुरबाणी पढ़ कर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज के आगे नतमस्तक होकर यह अरदास करे कि सतिगुरु जी! आपकी कृपा से दिन चढ़ा है, नाम जपते हुए सुखपूर्वक व्यतीत हो तो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज उस दिन की बुरी रेखाओं को अपने चरणों में ले लेते हैं। इसलिए हमने ज्योतिष विद्या के चक्कर में बिल्कुल भी नहीं पड़ना। हमें गुरबाणी का भी उपदेश है-

पंडित जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम॥
माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम॥ (अंग ५७०)

१८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब हमारा कोई कार्य सफल हो जाये तो क्या करना चाहिए?

उत्तर :- जब भी आपका कोई कार्य सम्पन्न हो जाये तो नियम बढ़ा कर सतिगुरु जी के चरणों में शुक्राना करना चाहिए।

सतिगुर अपुने सुनी अरदासि॥ कारजु आइआ सगला रासि॥
(अंग ११५२)

ऐसा करने से नम्रता के घर में रहोगे व सतिगुरु जी की और खुशियां प्राप्त होंगी।

९९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरा मन अरदास में नहीं टिकता। कोई युक्ति बताएं जिससे अरदास करते हुए मन टिक जाये।

उत्तर :- जब आप अरदास करते हैं तो सबसे पहले गुरु नानक देव जी का नाम लो व सतिगुरु जी के चरणों में नमस्कार करो।

सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए॥ जो इछै सोई फलु पाए॥
(अंग ६६१)

इस प्रकार जब सुरति में गुरु साहिब जी को रख कर सारी अरदास करेंगे तो मन नहीं दौड़ेगा। प्रेम, प्यार व निकटता बढ़ेगी व विस्मयजनक आनन्द आने लगेगा।

१००. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग नाम तो बहुत जपते हैं, पर दूसरे धर्मों की निंदा भी करते हैं। क्या ऐसा करना उचित है?

उत्तर :- सिक्ख ने अपने गुरु महाराज के अतिरिक्त किसी और से प्रभावित नहीं होना, पर इसके साथ ही किसी की निंदा भी नहीं करनी। नहीं तो बात बिगड़ जायेगी, क्योंकि जब हम दूसरे धर्मों की निंदा करते हैं तो सबसे पहले श्री गुरु नानक देव जी महाराज की हमारी ओर पीठ होती है। जैसे गुरबाणी का फुरमान है-

पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा॥ १॥
(अंग १२५३)

गुरु नानक साहिब जब संसार का उद्धार करने के लिए घर से निकले थे तो अपने साथ भाई बाला जी व मरदाना जी को रखा जो कि एक हिन्दू था व एक मुसलमान था। यदि मन में

कोई भेद होता तो ऐसा कदापि न करते। हमारा केन्द्रीय स्थान श्री हरिमंदिर साहिब है और इसकी नींव पंचम पातशाह जी ने एक मुस्लिम फकीर साईं मियां मीर जी से रखवाई। और तो और, श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज में कबीर जी, जो कि जुलाहे का कार्य करते थे, उनकी भी बाणी दर्ज की। बाबा फरीद जी जो कि मुसलमान दरवेश थे, उनकी भी बाणी दर्ज की। भक्त रविदास जी, जो कि जूते मुरम्मत का काम करते थे, उनकी भी बाणी दर्ज की। इसलिए रहना हमने गुरबाणी के दायरे में ही है, पर सत्कार हर धर्म का करना है। गुरु साहिब जी की कृपा से '३०० साल सिक्खी सरूप दे नाल' जिस कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई गई है, उसका नारा भी इसीलिए यही रखा है : हर धर्म दा करो सत्कार। सिक्ख लई जरूरी केस ते दस्तार।

१०१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आम सुनने में आता है कि कई लोगों को रात को बहुत बुरे व डरावने सपने आते हैं। कोई युक्ति बतायें कि सपने भी न आयें और रात भी सफल हो जाये।

उत्तर :- नींद भी दो प्रकार की है : एक मनमुख की नींद व एक है गुरमुख की नींद। मनमुख की नींद के बारे में गुरबाणी में फुरमान है :-

सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई ॥
महा मोहनी दूता लाई ॥१॥ (अंग ७४५)

बाबा खड़क सिंघ जी वचन करते थे कि मनमुख उपन्यास या कहानियां पढ़ कर सोता है, जबकि गुरमुख सिमरन करता हुआ सोता है। बाबा नंद सिंघ जी भी वचन करते हैं कि प्रतिदिन रात्रि को सोने से पहले पांच स्नान करके, सिक्ख सिरहाने की ओर मुख करके कीर्तन सोहिले का पाठ करके सोये। महापुरुष समझाते हैं कि हर मनुष्य जब रात को सोता

है तो नींद आने से पहले २ या ४ या १० मिनट लगते हैं। गुरसिक्ख ने वह समय भी संभालते हुए वाहिगुरु का सिमरन करके सोना है। सिमरन करते समय जब वह नींद में जायेगा तो सारी रात भी सफल हो जायेगी। गुरबाणी में भी गुरमुख की नींद के बारे में फुरमान :-

आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ। (अंग ५५८)

१०२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई सिक्ख भी व्रत रखते हैं। उनको कैसे समझाया जाये कि व्रत सिक्ख धर्म में स्वीकार नहीं हैं।

उत्तर :- गुरु इतिहास में एक साखी का ज़िक्र आता है। भाई कल्याणा जी श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज के अनन्य सेवक हुए हैं व जिस शहर में वह रहते थे, उस शहर के राजा ने सारे राज्य के लोगों को यह आज्ञा दी कि करवा चौथ का व्रत अवश्य रखना है। सभी लोगों ने व्रत रखा, पर भाई कल्याणा जी ने व्रत न रखा। जब यह शिकायत राजा तक पहुंची तो भाई कल्याणा जी को राजदरबार में बुलाया गया तो राजा ने पूछा कि आपने यह व्रत क्यों नहीं रखा? भाई कल्याणा जी ने कहा कि मेरे गुरु द्वारा हुक्म है कि व्रत नहीं रखने और यदि रखने हैं तो वह व्रत रखें जिससे हमारा लोक-परलोक सफल हो जाये। जैसे अपने आप को झूठ बोलने से रोकें, निंदा, चुगली, द्वेष से दूर रहें व निर्वेरता व नम्रता का दामन हर समय थामे रहें। भाई कल्याणा जी की इन बातों को सुन कर राजा बहुत प्रभावित हुआ व श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज के चरणों में आकर गुरु का सिक्ख बना। गुरबाणी में भी व्रत रखने की कठोरता से मनाही है। कबीर जी फुरमान करते हैं :-

छोडहि अंनु करहि पाखंड॥ ना सोहागनि ना ओहि रंड॥

(अंग ८७३)

यदि कोई फिर भी व्रत रखता है तो इस बारे में भी श्री गुरु

ग्रन्थ साहिब जी फुरमान करते हैं -

कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि॥

गदहि होइ कै अउतरै भारु सहै मान चारि॥ (अंग १३७०)

इसका भावार्थ यह है कि जो भी व्रत (अहोई) रखता है, उसका अगला जन्म गधी का होगा और जन्म भी उस मालिक के घर होगा जो उस गधी पर कम से कम चार मन का भार डालेगा। इसलिए गुरु साहिब के हुक्म का पालन करते हुए ऐसे व्रत रखें, जो हमें गुरु नानक के निकट ले जाएं। हो सके तो महीने में १-२ दिन यह व्रत रखें कि सारा दिन किसी की निंदा नहीं करनी या महीने में एक दो दिन यह व्रत रखें कि मैंने आज सारा दिन किसी से क्रोध नहीं करना या महीने में एक-दो दिन यह व्रत रखें कि सारा दिन मैंने झूठ नहीं बोलना। ऐसे व्रत हमें गुरु नानक के निकट लेकर जायेंगे।

१०३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आपकी कैसेट में सुना है कि चिड़िया की तरह खाये जो हमेशा शुक्राने में रहती है। यह बात कुछ समझ में नहीं आई।

उत्तर :- चिड़िया जब भी दाना चुगती है, अपना सिर झुका कर चुगती है। यह एक गुरसिक्ख की दृष्टि है कि वह समझता है कि चिड़िया हर दाना खाने से पहले शुक्राना कर रही है। इसलिए दूसरे पातशाह जी का भी गुरबाणी में वचन है-

जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि॥ (अंग ४७४)

१०४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमारा कोई संसारिक कार्य लेट हो जाये तो हमारा मन डोलने लगता है। कोई युक्ति बतायें ताकि दृढ़-निश्चय बन जाये।

उत्तर :- बाबा नंद सिंघ जी वचन करते हैं कि सिक्ख में तीन गुण हों तो कभी गुरु नानक के द्वार से खाली नहीं लौट सकता: द्वार न छोड़े, अधीर न हो व अभिमान न करे। यह सोच रखे

कि यदि दात देने में कुछ देर हुई है तो इसमें भी मेरा ही भला है। हो सकता है कि मैं किसी आग पर हाथ डाल रहा होऊं, जिसकी मुझे इस समय जानकारी नहीं। इसलिए यदि कोई दात मिलने में देरी हुई है तो इसमें कोई न कोई भलाई छुपी हुई है।

तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥

(अंग ६१३)

बाबा कुन्दन सिंघ जी भी वचन करते थे कि दो व्यक्तियों के भाग्य नहीं बदलते : एक चुफेरे के व एक मनमुख के। बाकी कोई भी यदि वह गुरु साहिब के प्रति निष्ठा व श्रद्धा रखता है तो वह कभी भी गुरु नानक के द्वार से खाली नहीं लौटता।

१०५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, क्या नितनेम करने के उपरांत अरदास करनी आवश्यक है?

उत्तर :- जब हम नितनेम करने के उपरांत अरदास करते हैं तो यह सीधी श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज के चरणों में पहुंचती है। अरदास एक कृपा का काम करती है। अरदास न की जाये तो मन में अहंकार उपज सकता है। इसलिए नम्रता के दायरे में रहने के लिए अरदास करनी अत्यावश्यक है।

तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥

ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥ १॥

(अंग ७१४)

१०६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग लंगर ग्रहण करने के उपरांत बहुत सारा लंगर घर के लिए भी डाल लेते हैं। क्या ऐसा करना उचित है?

उत्तर :- प्रतिदिन गुरु घर दर्शन करने जाना, कीर्तन श्रवण करना, सेवा करनी, सिमरन करना बहुत बड़े भाग्य की बात है।

वडभागी हरि संगति पावहि ॥ (अंग ९५)

पर प्रतिदिन लंगर ग्रहण करना ठीक नहीं, क्योंकि इसके अनेक कारण हैं। श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने एक बार भाई मंझ जी से पूछा था कि आप प्रसादा कहां से ग्रहण करते हैं? भाई मंझ जी ने कहा कि लंगर घर में से। गुरु साहिब जी कहने लगे कि आप जो सेवा करते हैं, उसकी साथ ही मज़दूरी ले जाते हो। गुरु साहिब ने उपदेश दिया कि हाथ से परिश्रम करके उसमें से प्रसादा ग्रहण किया करो। आप गुरुद्वारे गये हैं, २-३ घण्टे हाज़री भरी, लंगर लालच के साथ नहीं, जरूरत के अनुसार ग्रहण किया है फिर यह अमृत है, पर लोभवश घर में लाना उचित नहीं है।

करम धरम सुचि संजमु करहि अंतरि लोभु विकार ॥
नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै
दरगह होई खुआरु ॥ २३॥ (अंग १४२३)

१०७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरी सहेली ने मुझसे कहा है कि उसके पिताजी बीमार हैं, इसलिए अमृतसर के अलग-अलग गुरुद्वारों में तेरह श्री अखण्ड पाठ साहिब रखवा दे। क्या इस प्रकार श्री अखण्ड पाठ साहिब रखवाने उचित हैं?

उत्तर :- श्री अखण्ड पाठ साहिब रखवाने बहुत अच्छी बात है, पर यदि समस्त परिवार स्वयं बैठ कर पाठ न करे या श्रवण न करे तो फिर उसका पूरा महात्मय नहीं मिलता।

१०८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आजकल बच्चे कुमार्गगामी हो रहे हैं, गुरु चरणों से जोड़ने के लिए क्या किया जाये?

उत्तर :- यदि बच्चों को कलियुग से बचाना चाहते हो, अपने घर में माहौल गुरबाणी वाला बनाएं। बच्चों को प्रातःकाल उठकर आयु के अनुसार बैन लगाओ, पांच पउड़ियां जपुजी साहिब जी की करोगे तो नाश्ता मिलेगा। इस प्रकार करने से बच्चों को बचपन से ही गुरबाणी की खुराक अंदर जायेगी, वह बच्चे

कुमार्गगामी होने से बच जायेंगे। यदि बच्चे छोटे हैं तो एक बच्चे के पीछे १ पाठ जपुजी साहिब अधिक किया करो, नित्य अरदास किया करो, गुरु नानक साहिब! मेरे बच्चे के जीवन से गुरसिक्खी न चली जाये। हम पाकिस्तान से हैं। हम चार भाई-बहन हैं। दो बहनें व दो भाई। हम बाल्यावस्था में थे। हमारे माता-पिता ने एक घर में असूल पक्का किया हुआ था कि सायंकाल को रहिरास साहिब के पाठ के बाद एक शरीर ने गुरु नानक साहिब जी की जन्म साखी में से साखी सुनानी। बाकी सभी ने पास बैठकर सुननी पर आजकल दुःख होता है कि रहिरास का समय होता माँ ने बच्चे को क्या जोड़ना है माँ स्वयं टी.वी. पर धारावाहिक देखती है। आज वह समय टी.वी. ने ले लिया है। प्रयत्न करो थोड़ी प्रेरणा देकर गुरबाणी से जोड़ो, गुरुद्वारे ले जाया करो, सेवा सिमरन ही गुरु चरणों से जोड़ने का एक साधन है।

१०९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरु साहिब और परमेश्वर के दर्शन एक जैसे हैं या अलग-अलग हैं?

उत्तर :- सिक्ख ने गुरु साहिब में से ही परमेश्वर के दर्शन करने हैं। कोई समय था जब दास भी इस पक्ष से दुविधा में रहा और जब दास श्री गुरु रामदास जी महाराज के द्वार पर जाता था तो मन में यह भावना होती थी कि श्री गुरु रामदास जी महाराज, आप जी के चरणों में आया हूं और परमात्मा कोई और है पर जब महापुरुषों की संगत की, गुरबाणी पढ़ी, फिर आँख खुली व ज्ञान प्राप्त हुआ :-

गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ (अंग ८६४)

नानक सोधे सिंमृति बेद॥ पारब्रहमु गुर नाही भेद ॥ (अंग ११४२)

समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई॥
गुर गोविंदु गुोविंदु गुरु है नानक भेदु न पाई ॥ (अंग ४४२)

हर सिक्ख प्रतिदिन अरदास में यह माँगा करे कि भाई नंद लाल जी जैसी दृष्टि मिल जाये, जिन्होंने पहचान लिया था श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज को। क्या उच्चारण किया :

कादिरे हर कार गुरु गोबिंद सिंघ ॥ (भाई नंद लाल जी)

कादर कहते हैं कर्ता को। कादर (कर्ता) हर कार्य में समर्थ है। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज आप जी भी हर काम में समर्थ हो। फिर भाई नंद लाल जी कहते हैं :-

हक्क हक्क आईना गुरु गोबिंद सिंघ॥ (भाई नंद लाल जी)

हक का अर्थ है सच्चा परमात्मा। आईना का अर्थ है शीशा। क्या अर्थ बना? श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज आप परमात्मा के शीशे हो। किसी ने परमात्मा के दर्शन करने हों तो श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी के दर्शन करे। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज परमात्मा का शीशा हैं। इसलिए आप गुरु साहिब में ही परमात्मा के दर्शन किया करो।

११०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सचखण्ड श्री हजूर साहिब या किसी अन्य गुरुधाम के दर्शनों के लिए जाने की युक्ति समझायें।

उत्तर :- आप गुरबाणी से इतना प्रेम करें कि जब भी किसी गुरुद्वारा साहिब या श्री हजूर साहिब यात्रा जाने के लिए, सबसे पहले घर से निकलते समय जपु जी साहिब जी का एक पाठ या पांच पउड़ियां जपु जी साहिब जी की करके, अरदास करके घर से चलें और रास्ते में समय अनुसार अपने पर बैन लगा कर गुरबाणी पढ़ते हुए (जपु जी साहिब जी, चौपई साहिब जी, सुखमनी साहिब जी या जो भी जिस बाणी का आपका अभ्यास है) करते हुए जायें या वाहिगुरु का स्मरण करते हुए जायें। आपकी यात्रा भी भक्ति बन जायेगी। जैसे गुरबाणी का वचन है-

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥

तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ (अंग ६८७)

कलगियों वाले पिता जी आपके घर से निकलते ही आपकी प्रतीक्षा करनी आरम्भ कर देंगे। आपकी हाजरी घर से चलते ही दर्ज हो जायेगी। गुरु साहिब जी ने रहतनामे में खुद गुरुद्वारे जाने का ढंग सिखाया है :-

गुर दुआरे जाए मारगि मे ब्रहमचरज रखीऐ।

१११. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, यदि बच्चा पढ़ाई में बहुत कमज़ोर हो तो क्या करें?

उत्तर :- यदि आपका बच्चा पढ़ाई में कमज़ोर है तो कोई भटकने की आवश्यकता नहीं, ना ही घबराने की आवश्यकता है। यदि बच्चे की आयु १०-११ वर्ष की है तो बच्चे को प्रेरणा दीजिए कि दो पाठ चौपई साहिब जी के करे। यदि बच्चा १५-१६ वर्ष का है तो प्रेरित कीजिए कि पाँच पाठ चौपई साहिब जी के प्रतिदिन करे। यदि बच्चा चौपई साहिब का पाठ शुद्ध नहीं करता तो उसके स्थान पर बच्चे की माता पाठ कर ले। साहिब श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज ने चौपई साहिब जी की गुरबाणी के अंत में मोहर लगाई है :-

सुनै गुंग जो याहि सु रसना पावई॥

सुनै मूड़ चित लाइ चतुरता आवई॥

दुख दरद भौ निकट न तिन नर के रहै॥

हो जो या की एक बार चौपई को कहै॥ (चौपई साहिब)

११२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी कैसे दात देते हैं?

उत्तर :- श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी चार युक्तियों से दात देते हैं। पहली युक्ति-जो आपके भाग्य में लिखा है, वह आपको मिल

जाना है।

विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै॥ (अंग ७२२)

दूसरी युक्ति-बाणी के नियम बढ़ा कर अरदास करने पर दात मिलती है।

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे॥ (अंग २६३)

तीसरी युक्ति-गुरु साहिब जिस पर प्रसन्न हो जायें तो दात उसकी झोली में डाल देते हैं।

दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई॥ (अंग ६०४)

चौथी युक्ति-बड़े प्रेमी सिक्खों के लिए-गुरु साहिब दात पकड़ कर बैठे हैं और इंतजार करते हैं कि मेरा बहुत प्रेमी सिक्ख ख्याल बनाये और उसको दात दे देते हैं।

जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै॥ १॥
(अंग ४०३)

११३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग अरदास करते हैं कि मेरा स्वर्ग में निवास हो। आप सूझ दें कि किसी सिक्ख को गुरु साहिब जी के चरणों में क्या अरदास करनी चाहिए?

उत्तर :- बाबा ईशर सिंघ जी अरदास करते समय यह मांगते थे कि हे गुरु नानक! यहां रख, चाहे वहां रख पर एक कृपा करना, रखना अपने चरणों के पास। सिक्ख ने हर समय गुरु नानक की शरण ही माँगनी है।

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे॥
(अंग ५३४)

११४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब भी मैं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज में से हुक्मनामा पढ़ती या सुनती हूँ तो थोड़ा-सा ही सुनना होता है। बाकी का पता नहीं चलता, क्योंकि उस समय मैं अपने ख्यालों में होती हूं। सुमति दें।

उत्तर :- हुक्मनामा ना सुनना एक बेअदबी है। जब हुक्मनामा पढ़ना या सुनना है तो उस समय हमारी भावना यह होनी चाहिए कि गुरु साहिब जी हमें अपनी ओर से आज्ञा दे रहे हैं। अपने मन को निर्मल भय में रखें कि इस समय तेरा गुरु तुझे आज्ञा सुना रहा है। मन और किसी सोच या ख्याल की ओर न जाये। बाकी प्रयत्न किया करो और तीसरे पातशाह के वचन गांठ बाँध लो-

से गुरसिख धनु धंनु है जिनि गुर उपदेसु सुणिआ हरि कंनी॥

(अंग५९०)

११५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के अनुसार सच्चा सुख कैसे प्राप्त हो सकता है?

उत्तर :- श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में फुरमान है :-

जे लोड़हि सदा सुखु भाई॥ साधु संगति गुरहि बताई॥

(अंग११८२)

बख्शी हुईं आत्माएं नाम रस में लीन आत्माओं की संगति किया करो।

११६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आप कहते हैं कि कुसंगति से बच कर रहें। कुसंगति क्या होती है?

उत्तर :- कुसंगति कहते हैं, जो गुरु से तोड़ दे। इससे बचना अत्यन्त आवश्यक है। कुसंगति का मारा मनुष्य इस प्रकार दुःख भोगता है जैसे केले के पौधे के निकट कांटेदार बेरी हो। जब उसने झूलना है तो केले के पत्ते को भी चीर कर रख देना है। गुरबाणी में भी फुरमान है :

कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥

उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥ (अंग१३६९)

बाबा नंद सिंघ जी भी अरदास में अक्सर यह शब्द प्रयोग करते

थे कि हे गरीबनवाज़! अपने गुरमुख प्यारों, बख्शे हुए गुरुसिक्खों की संगति बख्शो जिनसे मिलने पर याद आये सतिनाम श्री वाहिगुरु! किसी ऐसे गिरे की संगत मत देना, जिसको मिलने से तू विसर जाए। अरदास किया करो कि हे वाहिगुरु मुझे कुसंगति से बचा कर रखना, क्योंकि कई बार किसी की कुसंगति हो जाये तो ऐसा कुप्रभाव पड़ता है कि अच्छा-भला गुरु चरणों से जुड़ा व्यक्ति भी टूट जाता है। एक बार हम नानकसर गये तो वहां बाबा भजन सिंघ जी (बड़े) ने एक तस्वीर दिखाई। उस तस्वीर में बाबा ईशर सिंघ जी हाथी पर बैठे थे और उनके पीछे एक सोलह-सत्रह वर्षीय लड़का, बाबा जी के गले में बांहे डाल कर बैठा था। दास को बाबा भजन सिंघ जी कहने लगे, यह लड़का बाबा जी के कितने निकट होगा! और भी उस समय बाबा ईशर सिंघ के पास दो-अढ़ाई सौ सेवादार साथ थे, पर बाबा जी ने इसको ही अपने साथ बैठाया है। बाबा जी के साथ देखो कैसे गले लग कर बैठा है! दास ने कहा कि इस बच्चे के बड़े भाग्य हैं। बाबा भजन सिंघ जी कहने लगे, आज इस बालक की दाढ़ी भी कटी हुई है और अन्य बुरी आदतों का भी यह शिकार हो गया है तो दास ने चकित होकर पूछा, 'जी यह कैसे?' बाबा भजन सिंघ जी कहते, किसी बुरे की कुसंगति मिल गई। बाबा ईशर सिंघ जी की इतनी कमाई, कमाई वालों की संगति छोड़ कर किसी कुसंगी का संग कर लिया, जीवन कहां का कहां गिर गया! इसलिए कुसंगति से सदा बच कर रहना चाहिए।

११७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, संसार में रहते हुए इस संसार से कैसे निर्लेप रहा जा सकता है?

उत्तर :- बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि नाव डूबती भी जल में है और तैरती भी जल में है। सिक्ख ने गृहस्थी की नाव में डूबना नहीं, तैरना है।

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नैसाणे ॥ (अंग ९३८)

काम-धंधे नहीं छोड़ने, इनमें आसक्ति छोड़नी है।

चारि पदारथ कमल प्रगास ॥

सभ के मधि सगल ते उदास ॥ (सुखमनी साहिब)

११८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सिक्ख सेवा व नाम की कमाई कैसे संभाले?

उत्तर :- सिक्ख नाम जपे, सेवा करे, दान-पुण्य करे, पर अपने आप को बड़ा न माने।

आपस कउ करि कछु न जनावै ॥

हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ (अंग २८६)

यदि नितनेम किया है तो गुरु का धन्यवाद करो, हे गुरु नानक पातशाह! शुक्र है कि आपजी ने अपनी कृपा करके गरीब से नितनेम की सेवा ली। यदि कोई सेवा की है तो भी गुरु का धन्यवाद करो। फिर वह की हुई सेवा जपा हुआ नाम सफल होगा व कमाई संभली रहेगी।

११९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, चौपई साहिब जी की रचना किस पातशाही ने की थी और कहाँ उच्चारित की ?

उत्तर :- कबयो बाच बेनती चौपई साहिब जी की रचना श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने की थी और यह बाणी गुरु साहिब जी ने नंगल में उच्चारित की, जहां आज-कल गुरुद्वारा श्री बिभौर साहिब सुशोभित है।

१२०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सुखमनी साहिब जी की बाणी की क्या विशेषता है?

उत्तर :- सुखमनी साहिब जी की बाणी की विशेषता बेअंत है। कोई चाहे जितनी गहरी डुबकी लगाये, उतना ही खज़ाना प्राप्त कर सकता है। दास से जो किताब गुरु साहिब ने लिखवाई है, गुरु

जी की कृपा से उसमें लगभग नौ विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

१. २४००० श्वास दिन के सफल करती है।

२. कलियुग से रक्षा करती है।

३. शारीरिक रोग भी ठीक करती है।

४. जन्म मरण के बंधन से मुक्त करती है।

५. यह हमारे कर्मों को बदलती है।

६. किसी दूसरे के मन के ख्यालों को बदलाती है।

७. जो अवगुण छोड़ने आपके बस में नहीं हैं, वे अवगुण छुड़वाती है।

८. वहम-भ्रम, ईर्ष्या, यन्त्र-मन्त्र, भूत-प्रेतों से बचाती है।

९. हमारे पर्दे भी ढंकती है, आदि।

पूरा विवरण नौ विशेषताएं सुखमनी साहिब जी की किताब पढ़ कर प्राप्त कर सकते हैं पर नौ विशेषताओं के अतिरिक्त जितनी कोई गहरी डुबकी लगाए और हीरे भी निकाल सकता है।

१२१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जिस का श्वास-श्वास सिमरन चल पड़े, क्या उसे गुरबाणी पढ़नी चाहिए?

उत्तर :- बाणी अवश्य पढ़नी चाहिए। दास ने कई महापुरुषों के दर्शन किये हैं जिनका श्वास-श्वास सिमरन था, पर उन्होंने सुखमनी साहिब जी का नियम नहीं छोड़ा। बाबा नंद सिंघ जी का नियम था कि पांच पाठ सुखमनी साहिब जी के प्रतिदिन सेवादार से श्रवण करने। संत मीहां सिंघ जी का सत्रह पाठ सुखमनी साहिब प्रतिदिन नियम था। संत निहाल सिंघ जी दो पाठ सुखमनी साहिब के प्रतिदिन करते थे। संत गुलाब सिंघ जी घोलिये वाले दो पाठ सुखमनी साहिब जी के प्रतिदिन करते थे। संत गुरबचन सिंघ जी खालसा भिंडरांवाले और अन्य

कई महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने श्वास-श्वास सिमरन होते हुए भी सुखमनी साहिब जी की बाणी व पांच ग्रन्थी, दस ग्रन्थी का भी साथ-साथ नियम निभाया है।

१२२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, क्या कोई सिक्ख बच्चा या बच्ची किसी अन्य धर्म का ग्रन्थ पढ़ सकते हैं?

उत्तर :- हाँ, आप पढ़ सकते हैं। हर ग्रन्थ में से आपने गुण ग्रहण करने हैं पर मन अपना श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज को ही बेचना है, क्योंकि हमारा नाम है सिक्ख और सिक्ख शब्द के अर्थ हैं सीखना। सिक्ख को जहां भी गुण सीखने को मिलें, वह सीखे, पर झोली श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज के आगे ही फैलाये। गुरबाणी में भी फुरमान है।

गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥

जे गुण होवन्हि साजना मिलि साझ करीजै ॥ (अंग ७६५)

१२३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आम देखने में आता है कि जब भी बाणी पढ़ी जाए तो मन एक क्षण के लिए भी नहीं जुड़ता। क्या बाणी पढ़नी छोड़ देनी चाहिए?

उत्तर :- प्रयत्न कीजिए कि बाणी पढ़ते हुए मन जुड़ जाये पर यदि न जुड़े तो घबरायें नहीं। जिस प्रकार अग्नि में कोई वस्तु चाहे सीधी या औंधी डालो, अग्नि का काम है जलाना। जब आप शरीर से बाणी पढ़ने बैठोगे तो आपके पाप जलने आरम्भ हो जायेंगे। जैसे-जैसे पाप जलेंगे, पुण्य बनेंगे और जब पुण्य बनेंगे तो मन जुड़ना आरम्भ हो जायेगा। इसलिए बाणी पढ़नी नहीं छोड़नी चाहिए। बाबा हरभजन सिंघ जी (बड़े) नानकसर वालों के पास एक शरीर आया था तो उसने बाबा जी को विनती की कि बाणी पढ़ते हुए मन नहीं जुड़ता। बाबा जी कहने लगे, अमृत वेले बिना कुछ खाये पांच पाठ जपुजी साहिब जी की हाज़री लगाया करो, मन भी जुड़ जायेगा।

पवित्र गुरबाणी का भी फुरमान है-

इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥१॥

(अंग ७९७)

१२४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आप बताते हैं कि बाणी जहां लिखी हो उसका सत्कार करो। बेअदबी न हो और साथ ही आप कंघे व केश उनके बारे भी सत्कार बताते हैं, पूरा बतायें कैसे सत्कार करें?

उत्तर :- आम घरों में खुशी गमी के कार्ड आते रहते हैं या कोई पेपर, पत्रिका धार्मिक होती है जिस पर गुरबाणी लिखी होती है। कई अज्ञानतावश उसको फाड़ कर कूड़े वाले डिब्बे में फैंक देते हैं जो कि घोर बेअदबी है। अपने घर में एक छोटा सा लिफाफा या थैला लगाओ जिस में यह गुरबाणी लिखे हुए कार्ड डालो और अपने केशों में कंघा करके जो केश कंघे में रह जाते हैं, वे केश भी उस थैले में डालो। महीने या दो महीने बाद अपने घर छोटे से बाटे या बाल्टी में इन कागज़ों व कंघे में आये केशों का सत्कार सहित संस्कार कर दो और राख को बहते पानी में जल प्रवाह कर दो। ऐसा करने से धार्मिक कागज़ व कंघे में निकले हुए केशों की बेअदबी नहीं होगी।

१२५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आम घरों में देखने में आता है कि यदि कोई गुटका साहिब से पाठ कर रहा है तो पाठ करते-करते किसी को कोई काम पड़ गया है तो वह गुटका साहिब टेबल, सैल्फ, टी.वी. या फ्रिज पर रख देते हैं। क्या ऐसा करना उचित है?

उत्तर :- नहीं, यह बात बहुत गलत है। बाणी का जितना सत्कार करो, उतना ही कम है। श्री गुरु हरिराये साहिब जी महाराज के समय कुछ सिक्ख गुरु साहिब जी के दर्शनों के लिए आये तो महाराज जी उस समय पलंग पर विश्राम कर रहे थे। सिक्खों ने गुरु साहिब जी के कमरे के बाहर भूमि पर बैठ कर

बाणी पढ़नी प्रारम्भ कर दी। जब गुरु साहिब उठे तो कानों में बाणी की आवाज़ पड़ी और जब दृष्टि बाणी पढ़ने वालों पर पड़ी तो महाराज शीघ्रता से उठे। पलंग का किनारा महाराज जी के घुटने पर भी लगा। सिक्खों ने पूछा कि महाराज जी, इतनी शीघ्रता क्यों की? गुरु साहिब जी कहने लगे कि मेरे सिक्ख नीचे बैठ कर बाणी पढ़ रहे थे और मैं पलंग पर था। शीघ्रता इसलिए की कि यह बाणी की बेअदबी है।

जिन भै अदब न बाणी धारा ॥ जानहु सो सिक्ख नाही हमारा ॥

गुटका साहिब रखने के लिए एक स्थान बनाना चाहिए। उस स्थान पर साफ वस्त्र या तौलिया बिछा लो और उस स्थान पर केवल गुटके साहिब व माला ही रखने चाहिएं। कई लोग चाय पीकर खाली गिलास शैल्फ, टी.वी. या फ्रिज आदि पर रख देते हैं। कुछ समय बाद परिवार का कोई सदस्य गिलास उठा कर ले गया। उसके बाद कोई और सदस्य पाठ करता है और पाठ करने के बाद उसी स्थान पर गुटका साहिब रख देता है। यह बेअदबी है बाणी की, क्योंकि उस स्थान पर कुछ क्षण पहले जूठा गिलास पड़ा था। इसलिए गुटका साहिब और माला के लिए अलग स्थान ही होना चाहिए।

१२६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, अहं कितनी प्रकार का होता है?

उत्तर :- एक अहं होता है कि कोई अच्छा काम आपने कर लिया, वह लोगों को बताना कि यह काम मैंने किया है।

जब लगु मेरी मेरी करै ॥ तब लगु काजु एकु नही सरै ॥

(अंग ११६०)

यदि मैं वहां न पहुंचता तो यह काम होना ही नहीं था यह काम भी अहं है और दूसरा होता है सूक्ष्म अहं। कोई व्यक्ति अहं नहीं करता पर मन में सोचता है मैं कितना अच्छा हो गया

हूँ कि मैं अहंकार नहीं करता। यह दूसरा अहं है। इसको सूक्ष्म अहं कहते हैं। बाकी अहं के बहुत रूप हैं जो कि सी.डी. द्वारा आप श्रवण कर सकते हैं। सो गुरबाणी का भी फैसला है कि अहं वाले की मुक्ति कभी नहीं होती।

गति मुकति कदे न होवई हउमै करम कमाहि ॥ (अंग १२५८)

१२७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मुझे रेलगाड़ी में एक लड़का मिला। उसने अपने हाथ में सुखमनी साहिब जी का गुटका साहिब पकड़ा व पाठ कर रहा था। उसने २०-२५ मिनट में पाठ समाप्त कर लिया। फिर दूसरा पाठ आरम्भ किया और वह भी उसी प्रकार समाप्त कर लिया। जब तीसरा पाठ आरम्भ करने लगा तो मैंने उसको डांटा कि तू पाठ कर रहा है या गाड़ी चला रहा है, कितनी गति है तेरी?

उत्तर :- कभी किसी को परमार्थ के लिए डांटने से पहले सौ बार सोच लें कि यदि आपके कारण किसी का मन टूट गया तो उसका भार भी आप पर पड़ेगा। कोई किसी प्रकार भी जुड़ा है, शुक्र है जुड़ा तो है। वैसे भी अभ्यासी पुरुष सुरति में २५ मिनट में पाठ समाप्त कर सकता है और इस प्रकार किया हुआ पाठ भी स्वीकार है। कोई ऊंचा बोल कर पाठ करते हैं तो ४५ मिनट में कर लेते हैं। कई एक घण्टे में संपूर्ण पाठ करते हैं। हर किसी की अपनी-अपनी अवस्था है।

१२८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सांसारिक कार्य-व्यवहार करते हुए क्रोध से भी बोला जाता है, झूठ भी बोला जाता है और निंदा भी की जाती है, पर समझ नहीं आती कि इन पर कैसे काबू पाया जाये?

उत्तर :- आप एक कॉपी लगा लें। उस पर लिखते जायें कि कितनी बार आज मैंने झूठ बोला, कितनी बार क्रोध किया। इस प्रकार लिखने से अपने अवगुणों की पहचान हो जाती है। फिर वे अवगुण छोड़ने आसान हो जाते हैं। संगत में एक बहन आती

है। उसने दास को अपनी कॉपी दिखाई। कागज़ पर प्रतिदिन अपने किये हुए अवगुण लिखकर और नियम बढ़ा कर गुरु साहिब के आगे अरदास करनी, सच्चे पातशाह ! मुझ से सारे दिन में इतने अवगुण हुए हैं। कृपा करके इन अवगुणों से छुटकारा दिलाऐं। फिर अवगुण छुड़ाने, कुमति को दूर करने की जिम्मेदारी गुरु साहिब की लग जाती है। गुरु अर्जुन देव जी ने सुखमनी साहिब जी की बाणी में लिखा है :-

सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥

पर कब? अगली पंक्ति में बताते हैं :-

गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ (अंग २८६)

१२९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आपने सुमति दी है कि एक जिज्ञासु का कम से कम अढ़ाई घण्टे का नियम होना चाहिए, पर जो प्रचारक बन जाये या किसी सोसायटी का पदाधिकारी बन जाये या मंच पर कीर्तन करने लगे तो उसका नियम कितना होना चाहिए?

उत्तर :- एक साधारण व्यक्ति का नियम अढ़ाई घण्टे का होना चाहिए, पर जो मुखिया हो, कीर्तन-कथा करता हो, उसको कम से कम चार या पांच घंटे नियम करना चाहिए, क्योंकि लोग उनको नमस्कार कर जाते हैं। यदि वह चार या पाँच घंटे नियम नहीं करते तो उनकी कमाई बहनी शुरू हो जाती है। कुछ समय उपरांत भार पड़ना शुरू हो जाता है। इसलिए यत्न करो कि नियम अधिक हो, कम नहीं। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि यदि पतंग अधिक उड़ी हो तो डोर का गोला बड़ा चाहिए भाव कि यदि संसार में सम्मान अधिक बढ़ गया हो तो नितनेम भी बढ़ा देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं तो फिर खतरा ही खतरा है।

१३०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरसिक्ख की धूलि क्या होती है?

उत्तर :- रंगे हुए गुरसिक्ख की धूलि दो प्रकार की होती है। पहली धूलि होती है-पैर के नीचे जो चरण-धूलि होती है।

नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे ॥१६॥ (अंग ३२२)

दूसरी प्रकार की धूलि होती है-उनके दर्शाये गये मार्ग पर चलना। जैसे वह कह गये, उस पर धीरे-धीरे चलने का प्रयत्न करो। जब आप इस प्रकार करने का प्रयत्न करते हैं तो इसका मतलब होगा कि आप उनके वचनों की धूलि ले रहे हैं।

१३१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कुछ लोग हाथों पर या बाजू पर सतिनाम वाहिगुरु लिखवाते हैं। क्या यह ठीक है?

उत्तर :- परमात्मा का नाम बहुत पवित्र है। हाथों-बांहों पर नाम लिखवाने से बेअदबी होती है। हाथ हर समय स्वच्छ नहीं होते। इसलिए नाम बाणी का जितना भी सत्कार करो, कम है।

१३२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हम चलते-फिरते अपने श्वासों को कैसे सफल करें? कोई युक्ति बताएं।

उत्तर :- संत बाबा अत्तर सिंघ जी मस्तुआणे वालों को भी कभी किसी शरीर ने यही प्रश्न किया था तो बाबा जी ने यह उत्तर दिया था कि आप एक कदम उठायें तो कहो वाहे, दूसरा कदम उठायें तो कहो गुरु। इस प्रकार यात्रा आरम्भ करो। इसके दो लाभ हैं। एक तो हर पग पर वाहिगुरु स्मरण होगा और दूसरा ध्यान किसी ओर तरफ नहीं जायेगा। सतिगुरु जी भी गुरबाणी में कहते हैं-

मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥१॥ (अंग ३८६)

१३३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, क्या यह सत्य है कि मनुष्य को हर क्षण, हर घड़ी का हिसाब देना पड़ता है?

उत्तर :- हाँ जी, हमारे हर क्षण-क्षण का हिसाब है, पर जिस पर गुरु नानक पातशाह की कृपा हो जाये, उसका हिसाब पढ़ा नहीं जाता, हिसाब फाड़ दिया जाता है :

धरम राइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥४॥
(अंग ६९८)

सिक्ख को हर क्षण गुरु नानक की नदरि व कृपा माँगनी चाहिए। गुरु नानक की कृपा हो गई, फिर उससे हिसाब नहीं पूछा जाता :-

जिस नो तेरी नदरि न लेखा पुछीऐ॥ (अंग ९६१)

१३४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हम प्रतिदिन जाने-अनजाने में कितने ही पाप कर लेते हैं। यह कैसे बख्शे जा सकते हैं?

उत्तर :- आप जब गुरु नानक की शरण में आ गये तो फिर कोई चिन्ता न करो। बेशक हमारे पापों का ढेर बड़ा है पर गुरु नानक की बख्शिश का, दया का सागर उससे भी बड़ा है। मलिक भागो, कौडा राक्षस, सज्जन ठग, भूमिया चोर, जिनके पाप सुन कर मन काँप उठता है, उनको भी गुरु नानक ने बख्शिश में आकर, ना केवल बख्शा अपितु वे अन्यों को भी गुरु नानक के चरणों के साथ जोड़ने वाले बन गये। बात तो यह है कि सिक्ख अंतर्मन से शरण में आ जाये। दास ने एक नगर में एक फकीर की कब्र देखी जिस पर वचन लिखा था कि हे गुरु नानक! यदि मेरे सौ वर्ष के पाप तराजू के एक पलड़े में डाल दिये जाएं और दूसरे पलड़े में तेरी एक क्षण भर की नदरि डाल दी जाये तो भी तेरी क्षण भर की नदरि का पलड़ा भारी होगा। गुरवाक्य है-

नानक जिन कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥ ४ ॥ २ ॥
(अंग ११९८)

१३५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, क्या मनुष्य जीवन का संबंध श्वासों से है या दिनों के साथ?

उत्तर :- मनुष्य जीवन का संबंध श्वासों से है। हम पूरे दिन में लगभग २४००० श्वास लेते हैं भावार्थ एक घंटे में १००० श्वास लेते हैं। हमें श्वास गिन कर मिलते हैं। न एक श्वास

अधिक हो सकता है, न कम। जो अधिक भोग भोगते हैं, क्रोध करते हैं, अधिक सोते हैं, उनके श्वास जल्दी चलते हैं। जो सिमरन करते हैं, ध्यान में बैठते हैं, उनकी आयु अधिक होती है, क्योंकि सिमरन, ध्यान में बैठने से श्वास धीरे-धीरे चलते हैं। श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने भी सालस राए जौहरी को पटना शहर में यह उपदेश दिया था कि तू चाहे हीरों का व्यापारी है पर असली हीरे हमारे यह श्वास हैं। इसलिए इनको व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए बल्कि वाहिगुरु के चरणों में जुड़ कर सफल करना चाहिए। जो हमें जीवन मिला है, यह श्वास गिन कर मिले हैं। आयु का संबंध श्वास से है। इसलिए गुरबाणी का भी हुक्म है-

करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥ ३॥ (अंग ७२४)

१३६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मेरे पास गुरु नानक की कृपा से अमृत वेला भी है, नियम भी है, पर अगली मंज़िल कैसे मिले?

उत्तर :- जिसको अगली मंज़िल मिलती है, वह नाम का अभ्यास करके मिलती है। कई लोग चालीस दिन तक भौरा साहिब में नाम जपने के लिए चले जाते हैं ताकि हमारी नाम जप-जप कर बैटरी चार्ज हो जाये। आप चालीस दिन नहीं तो बीस दिन कर लें। यदि बीस दिन नहीं कर सकते तो सात दिन कर लें। चाहे एक दिन ही भौरा साहिब में चले जायें ताकि आपका मन भी अभ्यास में आ जाये। यदि एक दिन भी नहीं कर सकते तो कम से कम ६ घण्टे के लिए बैठ जाओ। जब आप अभ्यास में बैठते हैं तो आपका घर भी गुरुद्वारा बन जाता है :

हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ॥ (अंग ९२१)

अभ्यास करो, अगली मंजिल स्वयं प्राप्त हो जाएगी।

१३७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमारे गुरु साहिबान ने

शहीदियां दीं पर गुरु साहिब सर्व कला समर्थ थे भावार्थ कि सब कुछ कर सकते थे, फिर क्या आवश्यकता थी शहीदियां देने की?

उत्तर :- गुरु घर में करामात दिखानी गलत है। यह श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने अपने शरीर पर ढाल कर बताया है। संसार में पता नहीं कौन सी आग बरसनी थी जो श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने अपने शरीर पर झेली। स्वयं हो जाये, यह और बात है पर जान-बूझ कर कोई करामात नहीं दिखाई, गुरु साहिब जी ने। साईं मियां मीर जी के सूरज प्रकाश में वचन हैं, जो जहांगीर को कहे थे कि श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज इतने समर्थ थे कि एक हाथ ही हिला देते तो आकाश फट सकता था, एक हाथ ही हिला दें तो युग पलट सकता था, पर उन्होंने रज़ा मानी है व शक्ति होते हुए भी सहन किया है।

१३८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, यदि श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज शहीदी न देते तो क्या होता हिन्दुस्तान का?

उत्तर :- गुरु साहिब यदि शहीदी न देते तो आज हिन्दुस्तान का नक्शा कुछ और होना था। औरंगज़ेब रोज़ सवा मन जनेऊ उतार कर खाना खाता था। कोई नया मंदिर बनाने या पुराना मंदिर ठीक करवाने की आज्ञा नहीं थी। आरम्भ में मुस्लिम भाई अढ़ाई प्रतिशत टैक्स अदा करते थे तो हिन्दू भाई पाँच प्रतिशत टैक्स देते थे। फिर बाद में मुसलमान को टैक्स माफ हो गया और केवल हिन्दू भाइयों को सारा टैक्स देना पड़ता था। श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज की शहीदी एक प्रकार से ऐसी क्रांति थी।

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन॥

कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि॥१६॥

(अंग १४२७)

१३९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, प्रेम की दात के क्या अर्थ हैं एवं प्रेम कितनी बड़ी दात है?

उत्तर :- यह सच है कि प्रेम बहुत बड़ी दात है। दास के मन में भी आया था कि प्रेम क्या है? बाबा अत्तर सिंघ जी मस्तुआणे वाले शब्द के अर्थ बताते थे : परे म भावार्थ परे मैं। जिसने मैं को अर्थात् अहं को अपने से दूर कर दिया, उसका प्रेम ही असली प्रेम है। श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने कहा है :-

जिन प्रेमु कीओ तिन ही प्रभु पाइओ ॥

जिसको यह दात मिल जाती है उसकी अपनी झोली तो क्या, वह दूसरों की भी झोली भरने वाला बन जाता है। बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि जिसको प्रेम की दात मिल जाये, उसको जीते-जी तो क्या, मरने के बाद भी गुरु नानक उसकी पीठ नहीं लगने देता। कोई धनवान भी हो, चतुर भी हो, अति सुन्दर भी हो, ज्ञानी भी हो, पर जिसके अन्दर प्रेम नहीं, उस बारे बाणी में कहा है :-

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ञिआनी धनवंत ॥

मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥ (अंग २५३)

जिसके पास प्रीति नहीं गुरु चरणों की, वह जीवित भी मृतक के समान है।

१४०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि सिक्खों के बारह बज गये। इसके पीछे क्या राज़ है?

उत्तर :- जब उनको पता लगेगा कि सिक्खों के कौन से बारह बजते थे तो हर भाई, सिक्ख के पैर धो-धो कर पीयेगा। मुगलों के शासन में जब हिन्दू भाइयों की या अन्य स्त्रियों को मुगल उठा कर ले जाते थे तो सिक्ख प्रण करते थे कि अब रात्रि के १२ बजे हैं, दिन के १२ बजे से पहले-पहले स्त्री को मुगलों की

कैद से छुड़ा कर घर पहुंचाना है। यह वह १२ बजते थे, दया के कार्य के लिए।

१४१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, प्राचीन काल में कई हठ-योग करते थे? सिक्ख धर्म में कौन-सा हउ स्वीकार है?

उत्तर :- आपको हठ-योग करने की कोई आवश्यकता नहीं, केवल एक साधारण सी बात कर लो। गुरु के चरणों में अपना सारा अहं, अपनी सारी चतुराइयां छोड़ कर समर्पित हो जाओ, फिर कृपा ही कृपा है।

मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥

हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥१॥ (अंग २१)

१४२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, वाहिगुरु ने हमें मनुष्य का जीवन क्यों दिया है?

उत्तर :- ८४ लाख योनियां भोगने के बाद मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। परमेश्वर की प्राप्ति भी इस देह में हो सकती है। देवी-देवता भी परमेश्वर की प्राप्ति के लिए इस देह की अभिलाषा करते हैं।

इस देही कउ सिमरहि देव ॥

सो देही भजु हरि की सेव ॥ (अंग ११५९)

इसलिए हम मनुष्य शरीर को व्यर्थ न गंवायें और नाम जप कर मनुष्य जन्म सफल करें। जिस प्रकार गुरबाणी में गुरु साहिब फुरमान करते हैं :-

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥

कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥ २७॥ (अंग १४२७)

१४३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमारे शरीर पर तिल क्यों हैं? इनका कोई परमार्थक कारण भी है?

उत्तर :- गर्भ में अग्नि है और जब हम माँ के गर्भ में होते हैं तो रक्षा करता है नाम। कई कहते हैं कि कोई अग्नि नहीं है, यह तिल उनको विश्वास दिलाने के लिए है कि तन तो गेहुआ है पर तिल काला है। जब तुझे गर्भ में एक क्षण के लिए भी नाम विस्मृत हुआ तो यह अग्नि का ताप लगा है। बाणी में फुरमान है :-

जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥

गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ (सुखमनी साहिब)

१४४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई बहने गुरुद्वारे में बहुत फैशन करके आती हैं, पर आप अपनी कैसेट में बताते हैं कि साधारण बन कर ही जाना चाहिए।

उत्तर :- गुरु घर से हम कुछ लेने जाते हैं तो भिखारी बन कर। फैशन गुरु को नहीं भाता, पर आपको भी चाहिए कि आपका ध्यान गुरु चरणों में हो ना कि आप यह देख रहे हो कि कोई क्या फैशन करके आया है। हमारी आँखें गुरुद्वारा साहिब जाकर संगतों को देखती हैं तो हमें यह भावना बनानी चाहिए कि यह देवी-देवता हैं। जब आप इस प्रकार सोचेंगे तो आपको परमेश्वर की बनाई हुई कुदरत में रस आने लगेगा। बाकी अपने लिए सादा जीवन ही श्रेष्ठ है। जैसे गुरबाणी में फुरमान है-

बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥

जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १॥ (अंग १६)

१४५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमें कितना दसवंध निकालना चाहिए और कहां देना चाहिए?

उत्तर :- मनमुख और गुरमुख में यही अन्तर है कि जो मनमुख है, वह पहले अपनी कमाई में से घर के खर्चे का हिसाब लगाता है, बाद में दसवंध के बारे में सोचता है, जबकि गुरमुख बिना दसवंध निकाले अपने घर का खर्चा आरम्भ ही नहीं करता।

दसवंध का अर्थ है अपनी कमाई का दसवां भाग गुरु साहिब के लिए भेंट करना ताकि बाकी की कमाई भी अमृत बन जाये। हमें अपनी कमाई का दसवां हिस्सा दसवंध के रूप में अवश्य निकालना चाहिए, पर देना वहीं चाहिए जहाँ दिया गया दसवंध व्यर्थ न जाये। बाबा जी ने भी कहा है :-

अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाइऐ मानु ॥

अकली पढ़ि के बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ (अंग १२४५)

जहां गुरुद्वारा साहिब का निर्माण हो रहा है, वहां दसवंध दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त किसी विधवा स्त्री की किसी भी रूप में दसवंध देकर सहायता कर सकते हैं। जैसे उसके बच्चे के स्कूल की फीस भरनी या राशन आदि देना। गुरु साहिब जी ने गरीब के मुँह को गुरु की गोलक कहा है। इसलिए जहां भी किसी जरूरतमंद को ज़रूरत हो, वहां अपने दसवंध से सहायता कर सकते हैं।

१४६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, पूर्ण महापुरुष कोई वचन करते हैं या नियम देते हैं तो कई बार वह हमसे नियम छूट जाता है। क्या यह बेअदबी तो नहीं?

उत्तर :- पूर्ण महापुरुष जब नियम देते हैं या वचन करते हैं तो उनको अपनी कमाई भी साथ देनी पड़ती है। इसलिए पूर्ण महापुरुष जब भी कोई नियम या वचन करें तो उन पर चलने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए।

परथाई साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥

(अंग ६४७)

महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥ (अंग ७५५)

या तो किसी महापुरुष से कोई बात पूछो न, पर यदि पूछते हैं तो उनके कहे अनुसार अवश्य चलने का प्रयत्न करो। कभी

कोई महापुरुष डांट भी दे तो उसमें भी आपका बुरा नहीं, उसमें भी भला ही होता है।

१४७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आम तौर पर कितने घण्टे सोना चाहिए?

उत्तर :- बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे कि हल जोतने वाले की नींद जो बहुत मेहनत मज़दूरी करता है, उसकी नींद छः घण्टे होनी चाहिए। जो साधारण जिज्ञासु है, उसकी नींद चार घण्टे होनी चाहिए। संत व रंगे हुए महापुरुष दो घण्टे ही आराम करते हैं। यदि कोई इससे अधिक सोता है तो बाबा जी वचन करते थे कि वह आलसी है। और हमें गुरबाणी में से भी उपदेश मिलता है-

बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥

जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ (अंग १७)

१४८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सिक्ख का सोना, खाना-पीना किस प्रकार का होना चाहिए?

उत्तर :- भाई गुरदास जी की पंक्तियां इस बारे सूझ देती हैं :-

हउ तिसु घोलि घुमाइआ थोड़ा सवै थोड़ा ही खावै।

(वार १२, भाई गुरदास जी)

सिक्ख को थोड़ा सोना चाहिए व थोड़ा ही खाना चाहिए। सिक्ख उतना ही खाए जितनी शरीर को आवश्यकता है। आवश्यकता से अधिक खाने से एक तो रोग शीघ्र घेरते हैं और दूसरा नींद व आलस्य बहुत तंग करते हैं।

१४९. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मोर के पंख का सत्कार क्यों है, जबकि बाकी पक्षियों के भी पंख हैं? कई बार देखा है कि मोर के पंखों की चौर साहिब भी बनाई जाती है। इसका क्या कारण है?

उत्तर :- मोर सब पक्षियों से अधिक पवित्र माना गया है, क्योंकि मोर कभी भी गृहस्थ नहीं करता। मोरनी मोर की आँखों के आँसू पीती है और माँ बन जाती है। इसलिए कई लोग इसके पंखों का प्रयोग चौर साहिब के रूप में भी करते हैं।

१५०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरु घर या महापुरुषों के पास जाने की युक्ति बतायें।

उत्तर :- बाबा नंद सिंघ जी वचन करते थे, सिक्ख अपने गुरु के पास या किसी महापुरुष के पास जाये तो कभी भी खाली हाथ न जाये और दूसरा नम्रता में जाये, कुछ बन कर न जाये। गुरबाणी में भी फुरमान है-

कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ॥

(अंग १३७०)

१५१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, कई लोग परमार्थ की बात में बहुत बहस करते हैं। क्या यह उचित है?

उत्तर :- सिक्खी में बहस या चर्चा स्वीकार नहीं। सिक्ख का मतलब ही सीखना है। यदि आखिरी श्वास भी चल रहे हों तो भी भावना यही हो कि मैंने अभी कुछ सीखा नहीं, कुछ सीखना है। बाबा ईशर सिंघ जी वचन करते थे कि यदि कोई परमार्थ में आपसे बढ़ कर है तो उससे कुछ ग्रहण करने का यत्न करें। यदि कोई बराबर का है तो उससे वचन सांझे करो। यदि कोई परमार्थ में आपसे कम है तो फिर उसको कुछ देने का प्रयत्न करो।

१५२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, संगत में एक स्त्री ने बताया था कि गुरु साहिब उससे काफी पाठों की सेवा लेते हैं और उसने यह भी बताया कि जब भी कभी रात को उसकी नींद खुलती है तो उसके अंदर कोई न कोई पाठ चल रहा होता है।

उत्तर :- यह बहुत बड़ी व अच्छी बात है। कबीर जी का शब्द है :-

कबीर सुपनै हु बरड़ाइ कै जिह मुखि निकसै रामु॥
ता के पग की पानही मेरे तन को चामु॥ (अंग १३६७)

कबीर जी कहते हैं कि जो इस अवस्था में पहुंच जाता है, मेरा दिल करता है कि मेरे तन की चमड़ी का जूता बन कर उसके पैरों में पड़ जाये।

१५३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब कोई परमार्थ की दुनिया में अधिक ऊँचा हो जाये तो आम लोग कहते हैं कि हमारे घर चरण डालो। उस समय गुरसिक्ख को क्या करना चाहिए?

उत्तर :- यह प्रश्न बाबा नंद सिंघ जी ने भी सेवादारों को किया था। एक बार सेवादारों को बाबा जी ने कहा, कोई आपको यह कहे कि मेरे घर चरण डालो तो आप क्या कहोगे? एक सेवादार कहता है, जी, उसको कहेंगे, चरण डालेंगे जी। बाबा जी कहते, इसका अर्थ आप चरण डालने योग्य हो गये हो? दूसरे सेवादार को पूछा कि तू बता भई, तू क्या उत्तर देगा? दूसरा सेवादार कहने लगा जी, यह कहेंगे कि जब टाइम होगा, तब चरण डालेंगे। बाबा जी कहने लगे, तू तो उसका भी बाप निकला है अहं में। फिर सेवादारों ने विनती की, बाबा जी, आप ही सुमति बख्शें। बाबा जी कहने लगे, यदि कोई इस प्रकार कहे कि घर चरण डालें तो आगे से कहना है जी, आपके दर्शन करने आयेंगे। यह नम्रता है। गुरसिक्ख के हर बोल में नम्रता होनी चाहिए। फिर सतिगुरु जी गुरबाणी में कहते हैं-

करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै॥१॥ (अंग २७८)

१५४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था कि किरत का परमार्थ से भी संबंध है। क्या यह ठीक है?

उत्तर :- किरत का परमार्थ से बहुत बड़ा संबंध है। बाबा नंद सिंघ

जी वचन करते थे कि जिस की किरत शुद्ध नहीं, उसका परमार्थ कभी भी नहीं सुधर सकता। गुरबाणी में फुरमान है-

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥

गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥ (अंग १४१)

१५५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, दशम पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज कितने बड़े दानी थे?

उत्तर :- शुक्र करें कि हमें ऐसा महान् पिता मिला है, जिसके जैसा न कोई हुआ और न कोई होगा। कलगीधर पातशाह जी की दयालुता का कोई अंत नहीं। किसी ने धन दान किया, किसी ने वस्त्र दान किया, किसी ने अपने महल दान किये, पर हमारे पिता श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज इतने बड़े दानी थे कि सरबंस ही सरबत के भले के लिए दान कर दिया।

१५६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आम देखने में आता है कि जब किसी को कोई बड़ी वस्तु मिल जाये तो उसका नितनेम पहले से कम हो जाता है। ऐसे समय में सिक्ख को क्या करना चाहिए?

उत्तर :- हाँ, यह ठीक है कि बहुत सारे शरीरों में साधारणतः देखने में आता है कि जब किसी के व्यापार में वृद्धि होती है तो उसका नियम कम हो जाता है और यह हालत हो जाती है :

दाति पिआरी विसरिआ दातारा॥ (अंग ६७६)

संत सुजान सिंघ जी दिल्ली, करोल बाग स्थान पर कीर्तन कर रहे थे। एक युवक नतमस्तक हो रहा था श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को तो उनको विचार आ गया कि यह युवक दो-तीन महीनों बाद गुरु घर आया है। समाप्ति के बाद स्वाभाविक वह युवक उनके सामने आ गया तो संत जी पूछने लगे कि आज-कल तू संगत में नहीं आ रहा। वह शरीर कहने लगा कि मैंने दो-तीन एजैंसियां और ले ली हैं व मेरे व्यापार का दायरा

इतना बढ़ गया है कि संगत में आने के लिए मुझे समय नहीं मिलता। महापुरुषों ने उसकी बाँह पकड़ ली और कहने लगे कि चल आ, गुरु साहिब जी की हजूरी में चल कर अरदास करें कि सतिगुरु जी, तेरा काम घटा दें। उसने बाँह खींच ली और कहने लगा, जी यह भी कोई अरदास करता है कि काम घटा दो। महापुरुष कहने लगे कि अब तो बनती है यह अरदास करनी क्योंकि अधिक व्यापारिक प्रसार ने तुझे नियम से तोड़ दिया है। गुरसिक्ख वह है कि यदि वाहिगुरु ने कृपा करके उसके व्यापार में वृद्धि की है तो पहले से अधिक नियम बढ़ाना चाहिए ताकि गुरबाणी की बाड़ लगी रहे।

दास को अमृतसर में एक परिवार ने अपनी फैक्टरी में बुलाया। दास जब उसकी फैक्टरी में पहुंचा तो इतनी बड़ी फैक्टरी देख कर बहुत चकित हुआ, क्योंकि पहले उनकी छोटी-सी दुकान थी और फिर एकदम बड़ी फैक्टरी लकड़ी के बोर्डों की बना ली। दास ने फिर उनके कार्यालय में जाकर विनती की कि जब आप फैक्टरी में आते तो एक पाठ सुखमनी साहिब जी का अवश्य किया करो ताकि फैक्टरी को भी गुरबाणी की बाड़ लगी रहे। इसलिए गुरसिक्ख के लिए आवश्यक है कि जैसे-जैसे सतिगुरु जी कृपा करके नियामतें दें, उसी प्रकार अपना नियम बढ़ाते रहो। फिर कोई विघ्न नहीं आएगा, क्योंकि उस दात को गुरबाणी की बाड़ लग गई है।

१५७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जब पूर्ण संत का संग मिले तो क्या होता है, एक साधारण शरीर के लिए?

उत्तर :- जब पूर्ण संत मिल जाता है तो उसकी सबसे बड़ी निशानी है कि उसका नितनेम दुगुना या उससे भी अधिक बढ़ जाता है। आपके जीवन में गुरु नानक के घर की कक्षाओं में आगे जाने की जिज्ञासा पैदा होती है।

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभू का लागा मीठा ॥

(अंग २९३)

एक बार सरदार सुंदर सिंघ जी मजीठिया बाबा नंद सिंघ जी के पास आये। लगभग दस मिनट बैठने के बाद जब जाने लगे तो सरदार सुंदर सिंघ जी मजीठिया कहने लगे, बाबा जी, किसी विभाग में कोई काम हो तो बताना। हमारी चलती है। अब बाबा जी को क्या काम। वे तो त्यागी थे। जब यह बात कह कर सरदार सुंदर सिंघ जी मजीठिया उठने लगे तो कमरे में सेवादार आ गया तो बाबा जी का ध्यान उस सेवादार की ओर चला गया। जब पुनः उठने लगे तो सरदार सुंदर सिंघ जी मजीठिया ने फिर कहा, बाबा जी! किसी विभाग में कोई काम हो तो बताना, हमारी चलती है। उठते समय फिर कोई कमरे में आ गया तो सरदार सुंदर सिंघ जी मजीठिया को फिर रुकना पड़ गया। इसी प्रकार तीन बार चांस हुआ। जब तीसरी बार इस प्रकार कहा तो बाबा नंद सिंघ जी भूमि पर हाथ मार कर कहने लगे कि बैठ जाईये फिर, काम अभी है। सरदार सुंदर सिंघ जी मजीठिया बैठ गये और कहने लगे, बताइये, कौन से विभाग में काम है? बाबा जी कहने लगे कि हमें किसी ईंट-पत्थर के विभाग से काम नहीं, हृदय के विभाग से काम है। हमें यह बतायें कि आपका नितनेम कितना है? सरदार सुंदर सिंघ जी मजीठिया कहने लगे, जी पांच बाणियों के नितनेम के अतिरिक्त दस पाठ जपुजी साहिब जी के सतिगुरु जी सेवा लेते हैं। बाबा जी कहने लगे, शाबाश है, पर एक बात है। सरदार सुंदर सिंघ जी मजीठिया कहने लगे कि बाबा जी, एक बात कौन सी? बाबा जी कहने लगे, पतंग अधिक उड़ी हो तो डोर का गोला बड़ा चाहिए। वह कहने लगे कि बाबा जी, मैं समझा नहीं। बाबा जी कहने लगे कि आप कई संस्थाओं के अध्यक्ष हैं, सचिव हैं, चेयरमैन हैं, आपकी कई प्रकार की जिम्मेवारियां हैं, पर दस पाठ जपुजी साहिब जी का नियम,

गोला छोटा है। वह आगे से आध्यात्मिक थे तो पूछने लगे कि बाबा जी, फिर क्या हुक्म है? बाबा नंद सिंघ जी कहने लगे कि यदि कहीं नितनेम के अतिरिक्त २५ पाठ जपुजी साहिब के हो जायें तो फिर आप जहां भी जायेंगे, आप बाद में पहुंचेंगे, गुरु नानक पहले पहुंचे होंगे। सुंदर सिंघ जी मजीठिया अपने ड्राईवर को दो दिन के बाद कहने लगे कि आनन्द आ गया है, सत्पुरुष की संगति करने का। नितनेम अढ़ाई गुणा बढ़ गया है। इसलिए जब महापुरुषों का मिलाप होता है तो नियम में बढ़ौतरी हो जाती है।

१५८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, यदि कोई गलती हो जाये तो उस गलती से कैसे मुक्त हुआ जा सकता है?

उत्तर :- सबसे बड़ी बात है अपनी गलती महसूस करना। दूसरी है जब भी आपसे अनजाने में कोई गलती हो तो बाणी का नियम कुछ बढ़ा कर गुरु साहिब से भूल बख्शाओ।

असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥

हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥

(अंग १४१६)

बाबा नंद सिंघ जी का वचन है, कोई गलती हो गई है तो पश्चाताप करें क्योंकि पश्चाताप पाप को धो देता है। पश्चाताप केवल बातों का ही न हो, पश्चाताप में करनी भी हो।

१५९ प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, गुरबाणी में आता है :

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥ (अंग ९३७)

जब लेख नहीं मिटते तो गुरु घर आने का क्या लाभ है?

उत्तर :- यह सत्य है कि लेख नहीं मिटते पर जब कोई गुरु घर आता है, बाणी पढ़ता है, हाथ से सेवा करता है, गुरु के

बताये मार्ग पर चलता है तो उसके बुरे कर्म गुरु के शब्द द्वारा सपने में ही कट जाते हैं।

गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥ ३॥ १॥ (अंग ११९५)

श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी महाराज के समय एक सिक्ख ने यह प्रश्न किया था कि यदि लेख ही नहीं मिटने तो फिर गुरु घर आने का क्या लाभ तो महाराज जी ने एक मोहर की उदाहरण देते हुए बताया कि जिस प्रकार एक मोहर पर लिखे अक्षर उल्टे होते हैं, पर जब उसको कागज़ पर लगाया जाता है तो वह सीधे बन जाते हैं, इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति गुरु की शरण में आ जाता है तो फिर उसके बुरे कर्म भी सीधे हो जाते हैं।

१६०. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, वाहिगुरु समय-समय पर महापुरुषों को इस जगत में क्यों भेजता है?

उत्तर :- पूर्ण महापुरुष इस संसार में कोई न कोई ड्यूटी लेकर आते हैं। कोई गुरुद्वारे की सेवा करवाने आते हैं, कोई श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की हाज़र-नाज़र सेवा प्रकट करने के लिए, कोई बाणी की शुद्धता की ड्यूटी लेकर, कोई संसार का उद्धार करने आदि। संत महापुरुष हमारे जीवन में हमारा उद्धार करने के लिए आते हैं। महापुरुष हमें रास्ता दिखाते हैं। जैसे एक अध्यापक बच्चे को पढ़ाता है, उसी प्रकार महापुरुष हमें पढ़ाते हैं। जब हम उनके पास जाते हैं तो हमारी बैटरी चार्ज होती है। पूर्ण संतों के दर्शन करने से जन्म-जन्म के पाप धुल जाते हैं। गुरु साहिब जी ने भी गुरबाणी में ऐसा फुरमान किया है-

कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ॥
नानकु तिन कै संगि तराइआ॥ ८॥
जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ॥
आपि तरै सभु कुटंबु तराईऐ॥ १॥ (अंग १३४८)

साध कै संगि नही कछु घाल ॥ दरसनु भेटत होत निहाल ॥

(सुखमनी साहिब)

१६१. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, एक सयाने व एक रंगे हुए महापुरुष में क्या अन्तर है?

उत्तर :- एक सयाना यंत्रों-मंत्रों, वहमों-भ्रमों में डाल कर एक का बिगाड़ता है और दूसरे का संवारता है,

जगि चतुरु सिआणा भरमि भुलाणा

नाउ पंडित पड़हि गावारी ॥ (अंग १०१५)

पर एक नाम के रंग में रंगे हुए संत महापुरुष अपनी नाम की कमाई में से कुछ कण देकर संसार का भला करते हैं, किसी का कुछ नहीं बिगाड़ते बल्कि नाम-बाणी का नियम देकर भूले-भटके लोगों को गुरु के निकट कर देते हैं।

१६२. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, बाबा नंद सिंघ जी सफेद कपड़े क्यों पहनते थे?

उत्तर :- बाबा नंद सिंघ जी प्रेम से कहते थे-हे गुरु नानक पातशाह! मैंने तेरी कृपा से सफेद कपड़े पहने हैं। हे गुरु नानक! मैं तेरा हूँ। जिस प्रकार के रंग में मुझे रंगना है, रंग ले।

१६३. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, आप कहते हैं कि गुरुद्वारे में जाकर झाड़ू लगाया करो पर कई बार देखा है कि वहां सफाई की आवश्यकता नहीं होती। वह स्थान पहले ही स्वच्छ होता है।

उत्तर :- आम संगत यह प्रश्न पूछती है कि क्या स्वच्छ स्थान पर झाड़ू मारें। आपने अपनी हाजरी लगानी है। पता नहीं किस समय कोई बख्शी हुई आत्मा वहां चल रही हो और आप पर कृपा हो जाये। पंचम पातशाह जी का भी गुरबाणी में वचन है-

जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही ॥२॥४॥

(अंग ६८०)

१६४. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, नम्रता का शिखर क्या है?

उत्तर :- बाबा ईशर सिंघ जी को किसी जिज्ञासु ने वचन किया था कि नम्रता का शिखर क्या है? बाबा जी ने दृष्टांत देते हुए बताया कि नदी के दो किनारे हैं। एक इस पार का किनारा है और दूसरा उस पार का किनारा है। फिर बाबा जी ने अपने रुमाल से उस शरीर के जोड़े झाड़ने आरम्भ कर दिये और कहा कि यह नदी का इस पार का किनारा है भावार्थ कि यह नम्रता की शुरुआत है। उस शरीर ने पूछा कि नदी का उस पार का किनारा क्या है भाव कि नम्रता का शिखर क्या है, तो बाबा जी ने सुमति देते हुए बताया कि इस बारे कोई नहीं बता सकता।

१६५. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, निर्वैरता की सीढ़ी क्या है?

उत्तर :- गुरु नानक देव जी के समय की साखी है। गुरु साहिब करतारपुर में एक खेत से गुज़र रहे थे और उन्होंने देखा, एक परिवार में से छोटा भाई अपने घर से गेहूं उठा कर बड़े भाई के घर गेहूं की ढेरी में डाल रहा था। सतिगुरु जी पूछने लगे कि तू यह क्या कर रहा है? वह कहने लगा कि जब जमीन का विभाजन हुआ था तो बड़े भाई को जमीन कम मिली थी तो मैं सोचता हूँ कि उसकी सहायता करुं। यदि मैं उसके सामने गेहूं दूँ तो वो नहीं लेगा। अब वह कहीं बाहर गया है तो मैं सोचता हूँ कि अभी गेहूं उसकी गेहूं की ढेरी में डाल दूँ ताकि उसके काम आ सकूं।

अगले दिन सतिगुरु जी फिर वहीं से गुज़रे तो बड़ा भाई अपनी गेहूं उठा कर छोटे भाई के ढेर में गेहूं डालता जाये। यह देख कर सतिगुरु जी बड़े भाई से पूछने लगे कि यह तू क्या कर रहा है? वह कहने लगा कि साथ के घर का ढेर मेरे छोटे भाई

का है। मेरा मन करता है कि मैं उसके किसी काम आ सकूं। सतिगुरु जी कहने लगे कि हमने सुना है कि तुम्हारे हिस्से में जमीन कम आई है और तू फिर भी इस प्रकार कर रहा है। बड़ा भाई सतिगुरु जी से कहने लगा, जी चाहे मेरे हिस्से में जमीन कम आई है पर कोई भी रिश्तेदार जो आता है, वह छोटे भाई के घर ही ठहरता है। खर्चा उसका अधिक है। इसलिए मैं सोचता हूँ कि मैं उसके काम आऊं। उसको सामने से सहायता करूँ तो वह लेता नहीं। अब वह बाहर गया है तो अपने ढेर में से कुछ गेहूं उठा कर उसके गेहूं के ढेर में डाल रहा हूँ। उन दोनों भाइयों की बात सुनकर गुरु नानक साहिब भाई मरदाना का कंधा पकड़ कर कहने लगे, तीन-तीन सौ साल के सिद्ध जिस सीढ़ी पर नहीं पहुँच सके, ये दोनों भाई उस सीढ़ी पर पहुँच चुके हैं। वह कौन सी सीढ़ी? निर्वैरता की सीढ़ी। ऐसे निर्वैरों के पांव पूजनीय होते हैं। पवित्र गुरबाणी का भी वचन है-

पारब्रहम के भगत निरवैर॥ सो निसतरै जो पूजै पैर॥

(अंग ११४५)

१६६. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, हमारे निर्मल कर्म कैसे बनें?

उत्तर :- हम दो प्रकार के कर्म करते हैं-पहला, जब हम कोई अच्छा काम करते हैं, उसको निर्मल कर्म कहा जाता है। दूसरा, जब कोई बुरा कर्म करते हैं, उसको निष्फल कर्म कहते हैं। निर्मल कर्म करने की कुछ युक्तियां हैं-

१. मन हमारा दो आवाज़ें देता है, पहली आवाज़ मन की आती है, आपने यह कभी नहीं सुननी। दूसरी आवाज़ बड़ी धीमी आती है, वह है आत्मा की, हमने आत्मा की आवाज़ सुननी है, यह है हमारा ज्ञान।

२. कुछ समय सिमरन व ध्यान में बैठो, इससे आत्मा और मज़बूत होगी। जिस प्रकार घड़ी को चाबी दो, वह काफी देर चलती

रहती है, पर कुछ समय बाद फिर चाबी देनी पड़ती है, इसी प्रकार जब आप ध्यान में बैठोगे तो आत्मा को शक्ति मिलेगी व पाप जलेंगे।

३. भक्ति में रंगे हुए महापुरुषों का इतिहास पढ़ो, महापुरुषों की संगति करो, नाम के छींटे पड़ जायेंगे, निर्मल करनी बननी आरम्भ हो जायेगी। गुर वाक्य है-

पारब्रहम सिउ लागी प्रीति॥
निरमल करणी साची रीति॥ (अंग १८४)

१६७. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, जपुजी साहिब जी की बाणी में क्या बख्शिश है?

उत्तर :- गुर-इतिहास पर दृष्टि डालें तो श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी महाराज के समय की एक साखी सामने आती है। गुरु साहिब जी ने हुक्म किया था कि हमें कोई जपुजी साहिब जी का पाठ चित्त जोड़ कर सुनाये

शुध सुणाइ रिझावहि मोही ॥
मन बांछति फल प्रापति होही॥ (सूरज प्रकाश)

भाई गोपाला जी ने जब चित्त जोड़ कर श्री जपुजी साहिब जी का पाठ गुरु साहिब को श्रवण करवाया तो छठे पातशाह जी ने भाई गोपाला जी को श्री गुरु नानक देव जी महाराज के घर की गुरगद्दी देने का मन बना लिया था। इससे बड़ा महात्मय और क्या हो सकता है, क्योंकि गुरु नानक के घर की गुरगद्दी ही सबसे उत्तम है। जपुजी साहिब जी की बाणी से दशम द्वार खुलते हैं, अगली मंज़िलें प्राप्त होती हैं। यह बाणी हमारे पर्दे भी ढंकती है। बाणी पढ़ने से शरीर को भी बल मिलता है। कलगीधर पातशाह कहते हैं कि यदि सिक्ख जपुजी साहिब की बाणी से प्रीति कर ले तो उसकी अवस्था इतनी ऊंची हो जाती है कि दरगाह में भी निसंग होकर जाता है।

अबि सुनीए इक जप पड़ै, सतिगुरु सिक्ख के संग॥

भुगत मुकति बखशी गुरु दरगहि जाहि निसंग॥ ३८॥

(सूरज प्रकाश)

जपुजी साहिब बारे कलगीधर पिता ने बड़ाई करते करते यह भी कह दिया, "भाई जैसे ठाकुर ने धन्ने की गायें चराईं गुरु नानक सतिगुरु भी तेरे सारे कार्य संवारेगा, यदि तू जपुजी साहिब से प्रीति कर ले-

जिउं धंने के धेनु के, ठाकुर चारै नित्त॥

करि प्रतीत नित जप पड़ै, तिम तिह सतिगुर मित्त॥ ४१॥

(सूरज प्रकाश)

१६८. प्रश्न :- आदरणीय वीर जी, सबसे बड़ी आशीष क्या है?

उत्तर :- महापुरुष वचन करते हैं कि विधवा स्त्री की आशीष लेनी पुण्यों में से उत्तम पुण्य है। जिसके सिर पर साईं नहीं होता, जब उसकी आवश्यकता के अनुसार आप कोई भी सहायता करते हैं, आर्थिक या बच्चों की पढ़ाई में सहायता करते हैं या उसके घर में राशन डाल कर देते हो तो उस स्त्री द्वारा दी गई आशीष सबसे बड़ी आशीष होती है।

सब दानन ते उतम दान। जिस के दिए बचत हैं प्रान।

(सूरज प्रकाश)

१६९. प्रश्न :- परोपकार कितनी प्रकार का होता है?

उत्तर :- परोपकार तीन प्रकार का होता है। इन तीन परोपकारों में हम में कौन-सा परोपकार नहीं आया, अपने अंदर झांक कर देखना।

पहला परोपकार-सिक्ख ने अपने आप पर करना है। वह कैसे? अमृतपान किया है कि नहीं, कलगीधर के बेड़े में बैठे हैं या नहीं? अपने मन बनाओ जिन्होंने अमृत ग्रहण नहीं

किया, वह पहला परोपकार अपने आप पर करें गुरु की मोहर लगा कर।

पीओ पाहुल खंडधार होइ जनम सुहेला।

(वार ४१, भाई गुरदास जी)

दूसरा परोपकार-किसी के पर्दे ढांपना। जिस दिन आपके हिस्से में यह दूसरा परोपकार आ गया आपकी प्रतिदिन की अरदास में भी हाजरी लगा करेगी, जिन्होंने देख कर अनदेखा किया उनका भी ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरु। दूसरे परोपकार का एक ऐतिहासिक दृष्टांत है कलगीधर पातशाह के समय कोटकपूरे एक निर्धन सिक्ख गांववासियों के कहने पर भाई मेलागर सिंघ को भोजन कराने के लिए घर ले गया, पर घर में कुछ भी न होने के कारण भाई मेलागर सिंघ को भोजन न करवा सका, केवल जल व जल में भिगो कर पीलू खिलाये, निर्धनता के कारण भाई मेलागर सिंघ ने पीलू खाकर भी सिक्ख के भले के लिए अरदास की। जब सारे सिक्ख घरों में से प्रसादा ग्रहण कर आये तो आपस में बातें करें कि मैंने अमुक वस्तु के साथ प्रसादा खाया कोई कुछ कहे और बड़ी बात यह कि बाकी सिक्खों को या गुरु साहिब के पास आकर यह नहीं कहा कि मुझे जिस सिक्ख के पास भेजा वहां मुझे पीलू व जल मिला है। सतिगुरु जी सबके मन की जानने वाले। फिर कलगीधर पातशाह जी ने भाई मेलागर सिंघ का परोपकारी स्वभाव देख कर भाई मेलागर को भरी संगत में यह कह कर प्यार दिया था, धन्य सिक्ख, धन्य सिक्खी, तेरी सिक्खी धन्य है, धन्य हे सिक्ख ! आगे भाई मेलागर सिंघ ने सतिगुरु की प्रशंसा करते हुए यह वचन कहे- धन्य दाता, धन्य दाता सब तेरी बख्शिश है, धन्य दाता !

अपने सेवक की आपि पैज रखाई॥ ४॥ (अंग २०२)

गुरु साहिब जी ने कहा, तेरे जैसे सिक्खों की मुझे बहुत

आवश्यकता है। सो किसी के अवगुण जान-बूझ कर स्थान-स्थान पर न बताओ। फिर आप पर गुरु प्रसन्न है, यह दूसरा परोपकार है। (किसी के पर्दे ढांपना)

तीसरा परोपकार-किसी टूटे हुए को गुरु नानक के चरणों के साथ जोड़ना। बाबा ईशर सिंघ जी वचन करते थे, एक सिक्ख कम से कम पाँच शरीरों को प्रेरणा देकर अवश्य गुरु वाल: बनाये, अमृत छकाए, यह सिक्खी फिर बड़ी तीव्रता से फैल सकती है। बाबा जी कहते थे, हर सिक्ख प्रचारक बने! एक बार बाबा ईशर सिंघ जी कलकत्ता गये थे। तीन-चार दिन के कीर्तन कथा के दीवान थे। उन दीवानों में बाबा जी ने खुद कथा-विचार किए। अंतिम दिन रह गया दीवान का तो सभी प्रबन्धकों ने बैठक की कि दीवानों का बड़ा आनन्द आ रहा है, यह समय बार-बार नहीं मिलेगा, क्यों न बाबा जी से विनती की जाये कि बाबा जी, दो-तीन दिन और लगायें, और कृपा करें। सभी कहने लगे कि ठीक है आज रात्रि को दीवान में विनती करेंगे। इनका मुखिया था बख्शी सिंघ जो कि बहुत बड़ा साहूकार था ट्रांसपोर्ट व ऐसोसिएशन का अध्यक्ष भी था। बाबा जी के पास गया और विनती की, बाबा जी कलकत्ता की संगत की ओर से विनती है, बाबा जी कहने लगे, बताओ? संगत की इच्छा है कि बड़ा आनन्द आ रहा है, दो-चार दिन का समय और दे दें। बाबा जी कहने लगे, समय दे देते हैं, पर हमारी भेंट लगेगी। बख्शी सिंघ सोचने लगा, महापुरुषों की सेवायें चलती हैं, कहीं स्कूल, कहीं अस्पताल, कहीं गुरुद्वारा, सोचने लगा, पचास हज़ार भेंट दे दूँगा। बख्शी सिंघ अभी सोच ही रहा था कि बाबा जी कहने लगे, बख्शी सिंघ, यह भेंट थोड़ी है। बख्शी सिंघ सोचने लगा कि मैं अभी बोला भी नहीं और इन्होंने पहले ही कह दिया है? फिर सोचता है भेंट दुगुनी कर देते हैं, बाबा जी के दीवान अवश्य बढ़ाने हैं, बाबा जी कहते, बख्शी सिंघ, भेंट तो दुगुनी सोच ली है, पर यह

भेंट भी कम है। कहता, बाबा जी, जो भेंट आप कहेंगे, मैं देने के लिए तैयार हूँ। बाबा जी कहते, देख ले, संगत में कह रहे हो, कहीं मुकर न जाना। कहता, बाबा जी! नहीं मुकरता। बाबा जी कहते, फिर हमारी भेंट यह है कि कल खंडे-बाटे की पाहुल लेकर गुरु वाला बन जा। हमारी भेंट यह है कि तू अमृतपान कर ले। फूट-फूट कर रोने लगा...रोने लगा और क्या कहा? बहुत शरीर कलकत्ते आये, पर अधिकतर ने मेरी माया पर दृष्टि रखी। आप पहले हैं जिन्होंने मेरे जीवन पर दृष्टि रखी है। अगले दिन बख्शी सिंघ ने जो इसकी ट्रांसपोर्ट के ड्राईवर थे और इसकी ऐसोसिएशन के सदस्य थे, उन सभी को अमृतपान करवाया। उस समय के संगियों द्वारा लगभग २८०० प्राणियों की गिनती अमृतपान करने वालों की मिलती है। इसको तीसरा परोपकार कहते हैं-किसी टूटे हुए को प्रेरणा देकर गुरु नानक के साथ जोड़ देना। गुरु रामदास जी का भी गुरबाणी में फुरमान है-

जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै॥ २॥ (अंग ३०६)

इसलिए जो आप जुड़ता है और टूटों हुओं को प्रेरणा देकर जोड़ता है यह तीसरा परोपकार है।

☆☆☆

सतिगुरु जी की कृपा से यह हस्तलिखित पुस्तक जीवन शिक्षाएँ जो १६९ प्रश्नोत्तर के साथ संगतों के सम्मुख है। दास आशा करता है कि जो हमारे जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं, उसको गुरबाणी और गुर-इतिहास व महापुरुषों के दिये उपदेश के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें। इस पुस्तक को लिखते हुए दास द्वारा हुईं भूलें बख्श लेना जी। इसके अगले भाग की भी सिर पर हाथ रख कर सेवा लेनी जी।

—दासन दास भाई गुरइकबाल सिंघ

विदेशों की संगत को विनती

भाई गुरइकबाल सिंघ जी द्वारा गायन कीं कथा कीर्तन की CD, VCD, MP3, DVD एवं भाई साहिब जी द्वारा लिखी चार धार्मिक पुस्तकें या माता कौलां जी सिफति सालाह धार्मिक पत्रिका हर दो महीने बाद प्रकाशित की जाती है। यदि आप जी सदस्य बनना चाहते हो तो निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करो जी।

The Worldwide Sangat would be pleased to know that there are two non-profit organizations based in the USA. If you need and CDs, MP3s, DVDs, Books, Sifit Salah Magazine and Four Books etc. There are branches of Mata Kaulan Ji Bhalai Kendar, Amritsar. Please contact and one of these two organizations.

माता कौलां जी भलाई केन्द्र (ट्रस्ट), श्री अमृतसर द्वारा दो भलाई केन्द्र अमेरिका शहर में निम्नलिखित पते पर चल रहे हैं, यदि आप जी अपने दसवंध में से यहाँ सेवा देकर रसीद प्राप्त करते हो तो अमेरिका की सरकार के कानून अनुसार उसकी आप जी को इन्कम टैक्स छूट (Income Tax Deduction) प्राप्त होगी जी। इन दोनों ब्रांचों के पते और फोन नंबर निम्नलिखित हैं।

जतिन्द्र कौर दारा
(ज्योति बहन जी)
Mother Kaulan Ji
Welfare Center
1008, Quince Orchard Road,
Gaithersburg, MD 20878
Ph. No. are 240-912-9004
804-366-1384
E-mail : jyotidara@yahoo.com
rubysahni@gmail.com

स. चरनजीत सिंघ जी
मोहिनी बहन जी,
Mother Maulan Ji
Nishkam Welfare Center
45565 Parkmeadow Ct.
Freemont, CA94539
Ph. No. 510-226-6884,
510-289-3708
E-mail : charan37@hotmail.com